[Medical Catalogue No. 41]

THE CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE

POST BOX 8. VARANASI-1 (INDIA)

ॐ ॐ ॐ
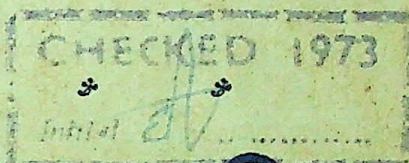
चिकित्सा-साहित्य

(प्राच्य-पाश्चात्य)

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

प्र का श क-वि क्रे ता
के. ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन
पो० बा० नं० ८, वाराणसी-१

१९६२] [1962

आर्डर देते समय इस सूचीपत्र की संख्या ४१ का उल्लेख अवश्य करें (इस बार बहुत से नवीन ग्रन्थ छपे हैं)

पर्याप्त संख्या में संपूर्ण ग्रन्थ के सदस्य बन चुके हैं। आप भी तत्काल संपूर्ण ग्रन्थ के सदस्य बन कर विशेष लाभ उठाइये।

(चौखम्बा-संस्कृत-ग्रन्थमाला संख्या ९४)

श्रीतारानाथतर्कवाचस्पतिसङ्कलितम्

वाचस्पत्यम्

(बृहत् संस्कृताभिधानम्)

पूर्ववत् डिमाई चौपेजी आकार, पृष्ठसंख्या ५५००,
सम्पूर्ण ग्रन्थ कपड़े की पक्की ६ जिल्दों में

मूल्यः—छप कर तैयार हो जाने पर रु० ४००-००

तत्काल संपूर्ण ग्रन्थ का अग्रिम मूल्य २७५-००

ग्रन्थ के १-४ भाग छप कर तैयार हैं। जो सज्जन तत्काल संपूर्ण ग्रन्थ का अग्रिम मूल्य २७५-०० भेज कर १-४ भाग मंगवा लेवेंगे उन्हें ५-६ भाग जो बहुत शीघ्र छप कर तैयार हो जायेंगे बिना मूल्य भेज दिये जावेंगे।

(ग्रन्थ की थोड़ी ही प्रतियाँ छप रही हैं अतः १२५-०० रुपये की भारी बचत से लाभान्वित होने के लिये कृपा कर तत्काल संपूर्ण ग्रन्थ का पूरा द्रव्य अग्रिम भेज कर अग्रिम सदस्यों की सूची में अपना भी नाम अङ्कित करा लीजिए। अन्यथा कुछ ही दिनों में सम्पूर्ण ग्रन्थ छप कर तैयार हो जाने पर ४००-०० रु० व्यय करने पर भी अगर उस समय तक कुछ सेट बचे रहेंगे तभी प्राप्त हो सकेंगे। (खर्च पृथक् होगा)

(चौखम्बा-संस्कृत-ग्रन्थमाला संख्या ९३)

राजा राधाकान्तदेव विरचितः

शब्दकल्पद्रुमः

(बृहत् संस्कृताभिधानम्)

सम्पूर्ण ग्रन्थ १-५ भाग का परिवर्तित मूल्य रु० १५०-००

प्रकाशक—चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

परिचय

काशीपुरी युग-युगान्तर से भारत-वसुन्धरा की सांस्कृतिक राजधानी रही है। इसी नगरी में आज से ७० वर्ष पूर्व सुरभारती के अनमोल ग्रंथों के रक्षण तथा पोषण, विकास, प्रसार और प्रचार की दृष्टि से धर्मप्राण आचार्य-चरण-चञ्चरीक श्रीहरिदासजी गुप्त ने 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज, काशी' की संस्थापना वि० संवत् १९४८ (सन् १८९२) में की। इसमें इस समय बारह ग्रन्थमालायें चल रही हैं जिनमें से प्रत्येक में वेद, पुराण, उपनिषद्, इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, व्याकरण, ज्योतिष आदि के अनेक उत्तम प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रन्थसुमन प्रकाशित हुए हैं।

काशी में दिवोदास भगवान् धन्वन्तरि की आयुर्विद्या को प्रकट करने के लिये इस पुस्तकालय के आयुर्वेद विभाग का उद्घाटन मुम्बई निवासी श्री ...देवजी महाराज के करकमलों द्वारा सन् १९२० ई० में हुआ है। आयुर्वेद के महारथी श्रीसत्यनारायण शास्त्री, श्रीजगन्नाथप्रसाद शुक्ल, ...विराज श्रीप्रतापसिंह, श्रीहरिरंजन मजूमदार, श्रीराजेश्वरदत्त शास्त्री प्रभृति विद्वानों ने इस पुस्तकालय को अपना वरद हस्त देकर कृतार्थ किया है।

पुस्तकालय अपने शुभचिन्तक परामर्शदाताओं के बल पर ही प्रति वर्ष आयुर्वेद के सात-आठ सौ पृष्ठ के दो-तीन मौलिक ग्रन्थों को प्रकाशित करने में समर्थ होता आ रहा है।

प्रकाशित आयुर्वेद-साहित्य का परिचय इस पुस्तिका में देखने को मिलेगा। आशा है कि पाठकप्रवर और गुणी ग्राहक इसे अपनी ही संस्था समझ कर इस पर कृपादृष्टि बनाये रखेंगे।

—व्यवस्थापक

लेखक महोदय तथा प्रकाशकों से निवेदन है कि अपनी नवीन प्रकाशित पुस्तकों की ...ना १-१ प्रति नमूने के रूप में हमें अवश्य भेजते रहें तथा जो सज्जन अपनी पुस्तकों ...प्रचार बढ़ाना चाहें वे प्रत्येक पुस्तक की २५-५० प्रतियाँ विक्रयार्थ हमें भेज देवें, ...इस सूचीपत्र द्वारा उनका विशेष प्रसार-प्रचार करते हुए बिकी हुई प्रतियों का मूल्य ...के पास तिमाही या छमाही भेज दिया करेंगे।

परामर्शदाता—

श्रीमान् यादवजी त्रिकम जी आचार्य
" सत्यनारायण जी शास्त्री
" गोवर्धन शर्मा जी छांगाणी
" जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल
" भास्कर गोविन्द घाणेकर जी
" प्राणजीवन मा० जी मेहता
" हरिरंजन जी मजुमदार
" रघुनाथ विनायक धूलेकर जी
" दत्तात्रय अनन्त कुलकर्णी जी
" दरबारीलाल जी शर्मा
" कविराज प्रतापसिंह जी
" दुर्गादत्त जी शास्त्री
" राजेश्वरदत्त जी शास्त्री
" मुकुन्दस्वरूप जी वर्मा
" धर्मदत्त जी
" जी. श्रीनिवास मूर्त्ति जी
" लक्ष्मीपति जी शास्त्री
" आशानन्द जी पञ्चरत्न
" मणिराम जी शर्मा
" मंगलदास जी स्वामी
" जयरामदास जी स्वामी
" बापालाल ग० शाह जी
" गुरुदत्त जी शर्मा
" उपेन्द्रनाथदास जी
" गणेशदत्त जी सारस्वत

श्रीमान् दीनानाथ जी शास्त्री
" बलवन्त सिंह जी
" शिवदत्त जी शुक्ल
" रामरक्ष जी पाठक
" यदुनन्दन जी उपाध्याय
" अम्बिकादत्त जी शास्त्री
" भैरवगिरि जी गोस्वामी
" रामदेव जी ओझा
" मनोहरलाल जी शर्मा
" वासुदेव जी शास्त्री
" सुन्दरलाल जी शुक्ल
" विश्वनाथ जी द्विवेदी
" सोमदेव जी शर्मा
" शुकदेव जी शर्मा
" जगदीशप्रसाद जी शुक्ल
" रमानाथ जी द्विवेदी
" गिरिजादयालु जी शुक्ल
" गङ्गासहाय जी पाण्डेय
" प्रियव्रत जी शर्मा
" विष्णुदामोदर धुलेकर जी
" रघुवीरप्रसाद जी त्रिवेदी
" गोरखनाथ जी चतुर्वेदी
" ब्रह्मशङ्कर जी मिश्र
" नीलकण्ठ जी देशपाण्डे
" सरोजिनी देवी जी वैद्या
" राजकुमार जी द्विवेदी

इत्यादि, इत्यादि ।

आशीर्वचनम्

आयुर्वेद-कुल-कमल-दिवाकर
परिडतराज
श्री यादव जी त्रिकम जी आचार्य

श्रीयुत बाबू जयकृष्णदास जी गुप्त बनारस के प्राचीन और सुप्रसिद्ध ग्रन्थ प्रकाशक हैं। इन दिनों आपने आयुर्वेद के अनेकानेक उत्तमोत्तम ग्रन्थ सुयोग्य विद्वानों द्वारा लिखवा कर प्रसिद्ध किये हैं और आगे भी ऐसे उत्तम ग्रन्थ छपवा कर प्रसिद्ध करने का आपका सङ्कल्प है। मैं इस सत्कार्य के लिये आपको अनेक धन्यवाद देता हूँ और भगवान धन्वन्तरि से प्रार्थना करता हूँ कि वे इस सत्कार्य के लिये श्री जयकृष्णदास जी गुप्त को दीर्घायु और आरोग्य प्रदान करें।

—वैद्य यादवजी त्रिकमजी
आचार्य

आयुर्वेद-बृहस्पति, भिषक्केसरी
प्राणाचार्य
पण्डित श्री गोवर्धनशर्मा जी छांगाणी

काशी के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ प्रकाशक स्वर्गीय हरिदास जी गुप्त के सुपुत्र बाबू जयकृष्णदास गुप्तादि नितान्त धन्यवाद के पात्र हैं। आप स्वर्गीय पिता जी का अनुसरण करते हुए अपनी चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ द्वारा संस्कृत एवं आयुर्वेद के बड़े बड़े मौलिक ग्रन्थों का प्रकाशन करके संस्कृत के उद्भट विद्वानों तथा आयुर्वेदज्ञ वैद्यराज को संतुष्ट कर रहे हैं। आपकी संस्था से सैकड़ों मौलिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। संस्कृतायुर्वेद का कोई विषय ऐसा नहीं जो इनके यहां प्रकाशित नहीं है। हम इस परम प्राचीन संस्था की उत्तरोत्तर उन्नति चाहते हैं।

—वैद्य श्रीगोवर्धन शर्मा
छाङ्गाणी

आयुर्वेदशास्त्र के अवतार, भारतराष्ट्रपति-चिकित्सक,
पण्डित-सार्वभौम, वैद्यसम्राट्, पद्मभूषण

श्री सत्यनारायण जी शास्त्री महोदय का

अभिनन्दन-ग्रन्थ

बहुत दिनों से समाज में जिसकी चर्चा चल रही थी, बड़ी प्रतीक्षा के बाद वह सचित्र अभिनन्दन-ग्रन्थ बड़ी धूम-धाम से छप कर सन्नद्ध है। देश के कोने-कोने से अपने विषय के माने हुए बड़े-बड़े विद्वानों ने प्रायः सभी विषयों पर प्रामाणिक लेख भेज कर इस ग्रंथ की उपयोगिता बढ़ाने में योगदान दिया है। आयुर्वेद के निदान-चिकित्सादि विषयों एवं आधुनिक वैज्ञानिक चिकित्सा-पद्धतियों के साथ या उनसे प्राचीन का समन्वय आदि विषयों पर एक से एक बढ़कर विचार देखने को मिलते हैं। न्याय, व्याकरण, वेदान्त, सांख्य, योग, मीमांसा, इतिहास आदि प्रत्येक विषय पर मर्मस्पर्शी विचार-सामग्री से यह ग्रन्थ भरा हुआ है। आयुर्वेद की सेवा में सम्पूर्ण जीवन को विलीन कर देने वाले शास्त्री जी जैसे परम तपस्वी के जीवन से आयुर्वेद की महत्ता, उपयोगिता, प्राचीनता एवं अनिवार्यता का जो ज्ञान हमें हो सकता है वह दूसरे प्रयत्नों से इतना सुखसाध्य नहीं हो सकता। मानवमात्र के लिये अनुकरणीय शास्त्री जी के जीवनचरित की कतिपय प्रमुख घटनाओं को स्मरण कर भावी पीढ़ी के सदस्यों को कर्मक्षेत्र में कुशलता प्राप्त कराने वाली अनेक रसवती प्रेरणाएँ दी गई हैं।

सचित्र एवं कलापूर्ण सुन्दर छपाई, मनोहर पक्की जिल्द मूल्य १५-०

पदार्थविज्ञानम्

वैद्य सम्राट्, कविराज श्री सत्यनारायण शास्त्री

यद्यपि पदार्थ परिचय के लिये आज तक अनेक पुस्तकें उपलब्ध थीं तथापि ऐसे महाविद्वान् के लेख में आपको पदार्थशास्त्र का विलक्षण अनुभव होगा। सभी दर्शनों के विशिष्ट शास्त्रार्थों के साथ पदार्थों का विवेचन देखते ही विद्वानों का चित्त आकृष्ट कर लेता है। मूल्य ३-०

!! आयुर्वेद-जगत् को अनुपम उपहार !!

काय-चिकित्सा

आचार्य रामरक्षजी पाठक, आयुर्वेद-बृहस्पति

डाइरेक्टर—केन्द्रीय आयुर्वेदान्वेषण-संस्था, जामनगर

इस ग्रन्थ में चिरकाल से अनुभव की जाती हुई अष्टांगआयुर्वेद के काय-चिकित्सा नामक महत्त्वपूर्ण अंग की विशेषता जगत् के समक्ष रखी गई है और अनेक रहस्यपूर्ण गूढ ग्रन्थियों का उद्घाटन करके विषय को सर्वसामान्य के लिये सरल-सुबोध शास्त्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इस ग्रन्थ की एक विशेषता यह भी है कि इसके लेखक भारत भर की एक मात्र आयुर्वेद-अनुसन्धान-संस्था के सर्वोच्च पदाधिकारी हैं, अतः इस ग्रन्थ के माध्यम से आयुर्वेद-जगत् को उनके अनुसन्धानों, अन्वेषणों तथा परीक्षणों-अवेक्षणों का भी लाभ प्राप्त होगा। इस शास्त्र में जहाँ-जहाँ विकलांगता थी वहाँ-वहाँ अन्य ग्रन्थों के आधार पर तथा अपने अनुभव से भी उसकी पूर्ति करके लेखक ने इसे सकलांगपूर्ण बनाने का प्रयत्न किया है। स्पष्ट है कि यह ग्रन्थ समस्त वैद्य-समाज के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

इस ग्रन्थ में चिकित्सा-सम्बन्धी सिद्धान्तों का प्रतिपादन, चिकित्सा का क्रियात्मक एवं कर्मोपयोगी स्वरूप, ज्वरों का वर्णन और क्रमशः आभ्यन्तर-मार्गाश्रित-बहिर्मार्गाश्रित-मर्मसन्ध्याश्रित व्याधियों का विशद वर्णन है।

तात्पर्य यह कि यह ग्रन्थरत्न सच्चे अर्थों में चिकित्सा-शास्त्र का नवीनतम, व्यावहारिक तथा सर्वाङ्गपूर्ण प्रतिसंस्करण है। आयुर्वेद के छात्रों तथा आयुर्वेद से किसी भी रूप में सम्बद्ध व्यक्ति मात्र को अविलम्ब ही इस ग्रन्थ का अवश्य संग्रह कर लेना चाहिए। मूल्य १२-५०

 चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

छप गया ! नवीन संस्करण !! छप गया !!!

(डाक्टर घाणेकर जी की टीका के समकक्ष)

सुश्रुतसंहिता-संपूर्ण

'आयुर्वेदतत्त्वसंदीपिका' हिन्दी व्याख्या वैज्ञानिक विमर्शयुक्त

व्याख्याकार--

ए. एम. एस. विभूषित कविराज डा० अम्बिकादत्तशास्त्री एस. ए.,
वैद्य प्रियव्रत सिंह, आचार्य देशपाण्डे, डा० अवधविहारी अग्निहोत्री

इस अभिनव व्याख्या में प्रत्येक गूढ़सूत्रों पर वैज्ञानिक शब्दावली द्वारा सुश्रुत का महाभाष्य प्रस्तुत किया गया है। इसके विमर्श में प्राचीन एवं नवीन विज्ञान की सप्रमाण तुलना एक ही स्थल में इस क्रम से उपस्थित की गई है, जिससे दोनों विषयों की जानकारी हो जाती है। वर्तमान समय में व्यवहार में आनेवाले यंत्र-शस्त्र, शस्त्रकर्म (Operations), पट्ट बन्धन (Bandaging) एवं रोगी परिचर्या आदि उपयोगी विषयों का प्राचीन विज्ञान के उपयोगी अंशों के साथ संतुलित रूप में विस्तार के साथ वर्णन किया गया है।

कर्ण, नेत्र, नासा एवं गले के रोग, पचन संस्थान एवं उसके प्रमुख विकार, आयुर्वेद में मूत्रोत्पत्ति के सिद्धान्त, प्रमुख संक्रामक रोग एवं उनका प्राच्य एवं पाश्चात्य दृष्ट्या प्रतिकार तथा इसी प्रकार के अनेक उपयोगी विषयों का सुव्यवस्थित ढंग से वर्णन किया गया है। रोगों का अचूक निदान करने तथा चरक, सुश्रुत, वाग्भट, शार्ङ्गधर आदि आकर ग्रन्थों के मतों के साथ डाक्टरी मत से भी रोग निर्णय करने की विधियों का विशद विवेचन होने से इसकी उपयोगिता बहुत बढ़ गई है। त्रिदोषविज्ञान, रस-रक्तादि सप्त धातु, ओज, जीवनीय तत्त्व एवं अन्य विवादग्रस्त विषयों पर प्राचीन महर्षियों के दार्शनिक सिद्धान्तों को वर्तमान विज्ञान के प्रकाश में प्रकाशित कर अनेक शङ्काओं का निर्मूलन कर विवेचन किया गया है। संक्षेप में मूल संहिता के भावों को सरल शैली में व्यक्त कर नवीन विज्ञानके साथ तुलना कर विषय को अधिक स्पष्ट, तर्कसम्मत एवं बुद्धिग्राह्य बना दिया गया है, जिससे आयुर्वेद के विद्यार्थी, अध्यापक एवं चिकित्सकों के लिए यह सटीक संस्करण समान रूप से उपयोगी सिद्ध हो गया है। संपूर्ण ग्रन्थ दो भाग में २४-००

१ सूत्र-निदानस्थान	७-००	२ शरीरस्थान	३-५०
३ चिकित्सा-कल्पस्थान	६-००	४ उत्तरतन्त्र	१२-५०

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

बीसवीं शताब्दी की औषधियाँ

डा० मुकुन्द स्वरूप वर्मा

बीसवीं शताब्दी ने चिकित्सा प्रणाली में युगान्तर उत्पन्न कर दिया है। जितनी नवीन औषधियों का आविष्कार गत २५ वर्षों में हुआ है उतना पिछले कई सौ वर्षों में भी नहीं हुआ।

पहिले दो-चार ही ऐसी औषधियाँ थीं जिनको विशिष्ट कहा जा सकता था, किन्तु आज कितने ही रोगों की निश्चित औषधियों का आविष्कार हो गया है जिनके प्रभाव से अत्यन्त दारुण दुर्दम्य रोग भी सुदम्य हो गये हैं। आज राजयक्ष्मा जैसे भयंकर रोग से भी, जिसको रोगों की सेना का कमांडर कहा जाता था, छुटकारा पा लेना सहज है। हाँ, औषधि को समय से रोगी के शरीर में पहुँचाना आवश्यक है। समय से न पहुँचने पर तो अमृत भी लाभ नहीं कर सकता। इन नवीन औषधियों के समयोचित उपयोग से चिकित्सक अपने ब्रह्मास्त्रों द्वारा जीवन की रक्षा करने में कभी असफल नहीं होगा।

सरल और रोचक शैली में प्रायः सभी मुख्य-मुख्य नवीन औषधियों का इसमें वर्णन किया है जिनका प्रयोग अभीष्ट फलदायक होता है। प्रत्येक औषधि की उत्पत्ति, उसके रासायनिक रूप, लाभ, हानि तथा उपयोग पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है तथा हानि होने पर क्या करना चाहिये इसका भी पूर्ण उल्लेख है। डा० वर्मा जी की इस कृति ने चिकित्सकों का बहुत बड़ा उपकार किया है। ८-००

नव्य-चिकित्सा-विज्ञान

डा० मुकुन्द स्वरूप वर्मा

गत २०-२५ वर्षों में विज्ञान ने जो उन्नति की है उससे चिकित्सा-क्षेत्र में युगान्तर सा आ गया है। नवीनतम वैज्ञानिक आविष्कारों की सहायता से आज क्षय जैसी व्याधि से भी मनुष्य बच जाता है। यह सब चिकित्सा-सम्बन्धी नवीनतम ज्ञान चिकित्सकों तक पहुँचाने के हेतु प्रस्तुत ग्रन्थ का निर्माण हुआ है।

इसमें नवीनतम मतों के अनुसार रोगोत्पत्ति के कारण, तज्जन्य विकृति-लक्षण, परीक्षा करने पर मिलने वाले चिह्नों, आवश्यक प्रायोगिक परीक्षाओं तथा चिकित्सा का विशद विवेचन करते हुए चिकित्सक के लिये पुस्तक को सब प्रकार से उपयोगी बनाया गया है। मूल्य ८-००

क्लिनिकल पैथौलोजी

(सचित्र—बृहत् मल-मूत्र-कफ-रक्तादि परीक्षा)

CLINICAL PATHOLOGY

(Including Laboratory Technique, Parasitology & Bacteriology.)

डा० शिवनाथ खन्ना एस. बी. बी. एस., डी. पी. एच., आयुर्वेदरत्न

इनचार्ज पैथोलोजी सेक्शन, कालेज आफ मेडिकल सायंसेज तथा सर सुन्दर लाल अस्पताल, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय। रोगी परीक्षा, रोग परिचय, रोग निवारण, सचित्र इञ्जेक्शन आदि पुस्तकों के लेखक।

उपर्युक्त पुस्तक विद्यार्थियों तथा चिकित्सकों के लिए लिखी गई है। इस पुस्तक की सहायता से लैबोरेटरी (प्रयोगशाला) तथा माइक्रोस्कोप की सहायता से रोग के निदान में सहायता मिल सकती है। प्रत्येक परीक्षा-विधि का वर्णन विस्तारपूर्वक तथा अत्यन्त सरल व प्रचलित हिन्दी भाषा में किया गया है। पुस्तक को ३ खण्डों में विभाजित किया गया है—

(१) प्रथम खण्ड में—विशिष्ट परीक्षाओं का वर्णन है। माइक्रोस्कोप (Microscope) के प्रयोग करने की विधि, मल, मूत्र, रक्त, कफ, शुक्र (Semen), ब्रह्मवारि (Cerebro-spinal fluid), स्मीयर (Smear), पीप (Pus), मुख, नेत्रमल, आदि की परीक्षा का विस्तारपूर्वक वर्णन है। इसके अतिरिक्त गनोरिया (Gonorrhoea), कुष्ठ (Leprosy), कालाजार आदि के निदान की विधियों का वर्णन है। मज्जा (Bone Marrow), लसग्रन्थि (Lymph gland) की परीक्षा का वर्णन है। साथ-साथ इन परीक्षाओं की रिपोर्ट किस प्रकार लिखी जाती है, यह भी दिया गया है। इन परीक्षाओं में प्रयोग किये जानेवाले घोल (Reagent) बनाने की विधि का भी वर्णन है। रक्त-परीक्षा में माइक्रोस्कोप की परीक्षा के अतिरिक्त रक्त में शर्करा आदि की परीक्षा (Chemical examination) का भी वर्णन है।

(२) द्वितीय खण्ड में भिन्न-भिन्न **कृमियों** (Worms) का वर्णन (Parasitology) है।

(३) तृतीय खण्ड में जीवाणुओं (Bacteria) का वर्णन (Bacteriology) है।

६ सौ पृष्ठों में ७९ चित्रों से युक्त संपूर्ण पुस्तक का मूल्य १०-००

सचित्र–इन्जेक्शन

डॉ० शिवनाथ खन्ना एम. बी. बी. एस., पी. एच. डी.
आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ।

सूचीवेध क्रिया, भेदोपभेद, उनके द्वारा प्रयुक्त होनेवाली विभिन्न औषधियों के नाम, गुण-धर्म आदि, विटामिनों का परिचय, उनके अभाव से होनेवाले रोगों में सूचीवेध, रोगों की किस स्थिति में किस प्रकार के सूचीवेध का कैसे प्रयोग किया जाय, किन-किन स्थितियों में किस प्रकार की सावधानी बरती जाय, सूचीवेध से होने वाले दुष्परिणाम और उनसे सतर्क रहने तथा उन्हें सँभालने में विशेष ध्यान देने योग्य बातें आदि सूचीवेध से संबन्धित सभी ज्ञातव्य विषयों का उपयुक्त चित्रों की सहायता से इस पुस्तक में विशद विवेचन किया गया है। विषय-विभाग के अनुसार प्रस्तुत पुस्तक तीन खण्डों में विभाजित है।

प्रथम खण्ड में इन्जेक्शन देने की सब विधियों का चित्रों सहित वर्णन किया गया है। साधारण इन्जेक्शन के अतिरिक्त एनिमा (Enema) लगाना, प्लूरा (Plura) से पीप निकालना, आदि चिकित्सक के प्रतिदिन की आवश्यक क्रियाओं का विस्तारपूर्वक चित्रों सहित वर्णन किया गया है।

द्वितीय खण्ड में इन्जेक्शन देने की औषधियों का तथा शास्त्रीय औषधियों के अतिरिक्त पेटेण्ट (Patent) औषधियों का भी वर्णन किया गया है। प्रत्येक औषधि की प्रकृति, प्रयोग, योग, विषाक्तता, विषाक्तता की चिकित्सा, मात्रा आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

तृतीय खण्ड में प्रायः १०० प्रमुख रोगों की चिकित्सा का आधुनिक विधि (allopathy) से संक्षेप में वर्णन किया गया है।

प्रत्येक छात्र तथा सामान्य चिकित्सक (General Practitioner) के लिए पुस्तक अत्यन्त उपयोगी एवं अवश्य संग्रहणीय है।

आजकल किसी भी छोटी से छोटी या बड़ी से बड़ी व्याधि पर सूचीवेध का ही प्रयोग होने लगा है। किन्तु इसमें जितनी सावधानी, विज्ञता और कुशलता की अपेक्षा है वह सभी चिकित्सकों में नहीं पाई जाती। ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय का सांगोपांग विवेचन प्रस्तुत पुस्तक का विषय है।

मूल्य अत्यल्प १०–००

द्वितीय संस्करण ! प्रकाशित हो गया !! द्वितीय संस्करण !!!

आयुर्वेदप्रदीप

(आयुर्वेदिक-एलोपेथिक गाइड)

लेखक—आयुर्वेदाचार्य राजकुमार द्विवेदी डी. आई. एम. एस.

संपादक—आयुर्वेदाचार्य श्री गङ्गासहाय पाण्डेय ए. एम. एस.

प्रोफेसर, आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दूविश्वविद्यालय, काशी

पृष्ठ संख्या ९००, उत्तम कागज, चमकता टाईप, आकर्षक जिल्द । मूल्य १०—००

थोड़े समय में ही प्रथम संस्करण समाप्त हो जाने के कारण जिज्ञासुओं के संतोष के लिए यह द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया गया है। प्रथम संस्करण में जो अशुद्धियाँ रह गई थीं उनका संशोधन और जो कुछ उपयोगी विषय छूट गए थे, उनका वर्णन इस द्वितीय संस्करण में किया गया है। यह पुस्तक अपने विषय में अद्वितीय है। अभी तक सामान्य चिकित्सकों के लिए उपयोगी चिकित्सा के निमित्त राष्ट्रभाषा में लिखी हुई ऐसी कोई भी पुस्तक उपलब्ध नहीं है। इसमें प्राच्य तथा पाश्चात्य विषयों का समन्वयात्मक वर्णन है और आयुर्वेद का इतिहास, उसका प्रसार तथा 'आयुर्वेद अन्य पद्धतियों का जनक है' यह उक्ति भी परिपुष्ट रूप से वर्णित है। इस पुस्तक से सर्वसाधारण लाभ उठा सकते हैं, यह इसकी विशेष महत्ता है। इसमें शरीर-रचना, शरीर-क्रिया-प्रणाली-विहीन ग्रन्थियों का विशद वर्णन, रक्त, रक्तपरिभ्रमण, मूत्र-परीक्षा, रोगी-परीक्षा, विटामिन, विभिन्न प्रकार के संक्रामक रोग तथा उनसे बचने के उपाय, पथ्यनिर्माण-विधि, विभिन्न व्याधियों में प्रयुक्त होने वाले पथ्य, आयुर्वेदिक तथा एलोपैथिक पारिभाषिक शब्दों तथा संयोगविरुद्ध द्रव्यों का उल्लेख, त्रिदोषविज्ञान, मल, दोष, धातु-विवरण, व्यवस्था-पत्र-लेखन-विधि, वैक्सीन, सीरम, पेनिसिलीन, स्ट्रेप्टोमायोसीन, सल्फाश्रेणी की ओषधियाँ, ओषधिनिर्माण-विधि, ओषधि तथा व्याधियों की हिन्दी-अंग्रेजी नामावली, स्वास्थ्यविज्ञान, प्रसूतिचर्या, शिशुचर्या, रोगी-परिचर्या, शल्यकर्म-विधि, संज्ञाहरण-विधि, संज्ञाहारक ओषधियाँ, महामारी; जैसे हैजा, प्लेग का प्रतिबन्ध तथा चिकित्सा, चूर्ण, क्वाथ, मलहम, लिनिमेण्ट, एक्का, घोल, मिक्श्चर, पिल्स, टेब्लेट, सीरप तथा वर्ति आदि का निर्माण, चिकित्सा प्रारम्भ करने के नियम,

चिकित्सा-सम्बन्धी आवश्यक उपकरण, चिकित्सक के वैधानिक कर्तव्य तथा अधिकार, व्यवहारायुर्वेद, स्वास्थ्यविज्ञान तथा विषविज्ञान आदि का आयुर्वेदिक तथा एलोपैथिक पद्धतियों से वर्णन किया गया है। नाना प्रकार के स्नान, सेंक, मूत्रनिर्हरण, बस्ति, विसंक्रमण करने की विधि एवं जीवाणुनाशक ओषधियों का वर्णन भी यथास्थान किया गया है। इनके अतिरिक्त नेत्ररोग, कर्णरोग, कण्ठरोग, चर्मरोग, स्त्रीरोग, बालरोग तथा शारीरिक व्याधियाँ; जैसे गर्भपात, पाण्डु, संग्रहणी, अतिसार, प्रवाहिका, मलेरिया, कालाजार, रोमान्तिका, मसूरिका, श्वसनक ज्वर, टाइफाइड, फिरंग, पूयमेह, अजीर्ण, रक्तपित्त, राजयक्ष्मा, श्वास, कास, मूर्च्छा, अपस्मार, योषापस्मार, उदावर्त, शूल, गुल्म, वृक्करोग, मूत्राघात, अश्मरी, प्रमेह, शोथ, वृद्धि, श्लीपद, उन्माद तथा चर्मरोग प्रभृति नाना व्याधियों की उभय पद्धति के अनुसार योग, सूची तथा पेटेण्ट ओषधियों द्वारा विस्तार से चिकित्सा लिखी गई है। ये ओषधियाँ अनुभूत हैं जो विभिन्न चिकित्सकों के अनुभव से लाभप्रद सिद्ध हो चुकी हैं। इस संशोधित, परिवर्द्धित संस्करण को सभी प्रकार से परमोपयोगी बनाया गया है। इसकी महत्ता का जितना ही वर्णन किया जाय थोड़ा है।

+ आसवारिष्टसङ्ग्रहः

इस ग्रन्थ में प्राचीन और नवीन वैज्ञानिक विधि से आसव–अरिष्ट बनाने की विधि तथा गुण एवं तत्तत् रोगों में उनका प्रयोग तथा आसव–अरिष्ट सम्बन्धी अन्य अनेक बातें बड़ी उत्तम रीति से सरल भाषा में समझाई गई हैं। मूल्य १–७५

+ कम्पाउन्डरी-शिक्षा (सचित्र)

डा० आर० सी० भट्टाचार्य ए० एम० एस०

चिकित्सा करते समय नवीन चिकित्सक, परिचारक तथा कम्पाउन्डर को ऐसी बहुत सी आवश्यक बातें को समझना पड़ता है जिनका समावेश किसी एक पुस्तक में नहीं मिलता। इस दृष्टि को सामने रखते हुए डा० भट्टाचार्यजी ने इस पुस्तक में काफी विषयों का समावेश किया है, जिसमें से दवा बनाना, रोगी–परिचर्या (रोगी का स्नान, आहार, ताप लेना आदि), सूई लगाने की विधि, जीवाणु नाशक कार्य, विष चिकित्सा, मलेरिया, कालाजार आदि पचासों रोगों का वर्णन तथा मलमूत्रादि परीक्षा, पट्टी बांधना, चिकित्सा तथा असंख्य नुस्खे आदि हैं। लगभग १०० चित्र भी इसमें हैं। मूल्य ८–००

सचित्र—

स्वास्थ्यविज्ञान और सार्वजनिक आरोग्य

(सपरिष्कृत परिवर्धित चतुर्थ संस्करण)

डा० भास्करगोविन्द घाणेकर

प्रोफेसर, आयुर्वेदिक कालेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

मानव-मात्र के परमोपकार की दृष्टि से प्रकाशित प्रस्तुत पुस्तक के बहुसंख्यक तीन संस्करण देखते-देखते समाप्त हो गए, अतः निम्नाङ्कित विशेषताओं से विभूषित यह लोकोपकारक चतुर्थ संस्करण प्रस्तुत किया जा रहा है। इस संस्करण में सूक्ष्म दृष्टि से संशोधन करते हुए अनेक विषयों का परिवर्द्धन और रूपान्तरण किया गया है तथा मनःस्वास्थ्य और मनोविकार-प्रतिबन्धन जैसे महत्त्वपूर्ण नये विषय समाविष्ट किए गए हैं। विषय को सुस्पष्ट करने के लिये आयुर्वेद और प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थों के उद्धरण और तुलनात्मक टिप्पणियाँ अधिक संख्या में विस्तार पूर्वक दी गई हैं। स्थान-स्थान पर विषय से संबंधित अनेक आवश्यक चित्र भी दिए गए हैं। परिभाषा-सम्बन्धी कठिनाई दूर करने की दृष्टि से अंग्रेजी-हिन्दी कोष का रूप बदलकर हिन्दी-अंग्रेजी-शब्दकोष दे दिया गया है।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि स्वास्थ्य-रक्षा और व्याधि-निवारण जैसे जटिल विषय को मानव-मात्र के लिए सुलभ बनाने की दृष्टि से प्राचीन एवं अर्वाचीन सिद्धान्तों का समन्वय करते हुए सर्वबोध स्वास्थ्य-तत्त्व-परिज्ञान पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने का सुव्यवस्थित प्रयास किया गया है। इस प्रकार छात्रों और चिकित्सकों के लिए ही नहीं, मानव-मात्र के हित-सम्पादन के लिये इस पुस्तक में यथेष्ट उपादेय सामग्री भरी मिलेगी। नवीन ग्राहक तो सोत्साह इस संग्राह्य पुस्तक को अपनावें ही, प्राचीन ग्राहकों को भी इस विशिष्ट संस्करण से पूर्व की अपेक्षा अधिक लाभान्वित होना चाहिए।

नवीन चमकता टाइप, सफेद ग्लेज कागज, आधुनिक आकर्षक मनोरम जिल्द विभूषित पुस्तक का लागत मात्र मूल्य ७–५

रोगि-परीक्षा-विधि (सचित्र)

आचार्य प्रियव्रत शर्मा एम० ए०, ए० एम० एस०

रोगि-परीक्षा-विधि चिकित्सा-विज्ञान का प्रथम सोपान है। रोगी की पूर्ण परीक्षा किये बिना रोग का निर्णय ठीक-ठीक नहीं हो सकता फलतः चिकित्सा भी सफल नहीं हो सकती। ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय पर अभी तक समन्वय प्रणाली से लिखे गए ग्रन्थ का अभाव चिरकाल से अनुभव किया जा रहा था। विद्वान् और अनुभवी लेखक ने अपने दीर्घकालीन अनुभव के आधार पर इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना कर एक बड़े अभाव की पूर्त्ति की है। इस ग्रन्थ में आयुर्वेदिक और एलोपैथिक दोनों पद्धतियों से रोगी-परीक्षा का पूर्ण विवरण दिया गया है जिससे दुरूह विषय भी करामलकवत् स्पष्ट हो गया है। प्रायः सभी स्थलों पर चित्रों को देकर विषय को और भी सरल तथा स्पष्ट रूप से समझाया गया है। मूल्य ६-००

स्त्री-रोग-विज्ञान (सचित्र)

डा० रमानाथ द्विवेदी एम० ए०, ए० एम० एस०

यह रचना आयुर्वेद के विद्यार्थियों अथवा सामान्य तथा सभी चिकित्साविज्ञान के अभ्यासी छात्रों के लिये अत्यन्त ही उपादेय है। पुस्तक को 'नातिसंक्षेप-विस्तर' लिखते हुए छः खण्डों में पूरे विषय का विभाजन किया गया है जैसे अंगव्यापद, रजोव्यापद, योनिव्यापद, उपसर्गव्यापद, अर्बुदव्यापद तथा शस्त्रकर्म। परीक्षा के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए विषय को ठोस लिखने का प्रयास किया गया है जिससे परीक्षार्थियों को सरलता से विषय ग्राह्य हो सके और परीक्षाकाल में उन्हें पूर्ण सफलता भी प्राप्त हो। साथ ही चिकित्सा का प्रकरण बहुत ही व्यावहारिक दृष्टि से लिखा गया है, जिससे साधारण चिकित्सक अपनी नित्य की चिकित्सा में समान भाव से पुस्तक को उपयोगी बना सके। पुस्तक की सर्वोपरि विशेषता उसकी समन्वयात्मक पद्धति का लेखन है जिसमें अत्यन्त प्राचीन काल के आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धान्तों और सूत्रों के उल्लेख से प्रारम्भ करके आधुनिक युग के नवीनतम आविष्कारों से प्रकाशित रोग-विज्ञान तथा चिकित्सा का संकलन हो गया है। इस एक पुस्तक के आधार पर ही आयुर्वेद-विद्यालयों में पाठ्य स्त्रीरोग-विज्ञान से सम्बद्ध प्राचीन तथा नवीन ज्ञातव्य विषयों का एकत्रीकरण सुलभ हो गया है। मूल्य ३-००

रोगीरोगविमर्श

डा० रमानाथ द्विवेदी एम० ए०, ए० एम० एस०

सहायक डिपुटी डायरेक्टर, स्वास्थ्यसेवा, यू० पी०, लखनऊ

पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट है। आतुरालय में रोगियों के इतिवृत्त विभिन्न स्थलों का प्रारम्भ कैसे किया जाय, किन किन बातों की जानकारी कि किन विशिष्ट प्रश्नों के द्वारा की जाय, तथा रोगी और रोग की परीक्षा किन विधि का अनुसरण करते हुए किया जाय, इत्यादि आधुनिक युग के चिकित्सा-विज्ञा की प्रमुख बातें इसमें प्राचीन शास्त्रों के आधार पर लिखी गई हैं। आधुनिक वैद्य चिकित्सकों तथा छात्रों के लिए बहुत ही उपादेय पुस्तक है। मूल्य २-०

सचित्र—

भैषज्य कल्पना विज्ञान

डा० अवध बिहारी अग्निहोत्री बी. ए., ए. एम. एस.

आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली के अन्तर्गत आनेवाली भैषज्य-कल्पना सम्बन्धित सभी विधियों का सुगम तथा विशद वर्णन इस पुस्तक में सुन्दरता साथ किया गया है, जिसके अन्तर्गत आयुर्वेदीय तथा आधुनिक मान (मा भार व तौल), यन्त्रोपकरण, मूषा, पुट, कोष्ठी, मुद्रा, पञ्चविध कषाय कल्प (स्वरस, कल्क, क्वाथ, हिम, फाण्ट आदि), रसक्रिया (अवलेह), गुटिका, वटी, व स्नेहपाक, आसवारिष्ट, उपनाह, लेप, मलहम, क्षार आदि की कल्पना से सम्बन्धि विषयों को आधुनिक तथा प्राचीन चिकित्सा-प्रणालियों के समन्वयात्मक सिद्धा व विधियों के अनुसार अच्छी तरह समझाकर लिखा गया है। इन सब वि की जानकारी प्राप्त करने के लिए फिर किसी भी भैषज्य-कल्पना-ग्रन्थ को देखने आवश्यकता नहीं रह जाती। इस प्रकार राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखी गई, आयु के महत्त्वपूर्ण अंग पर यथोचित प्रकाश डालनेवाली यह पुस्तक भारतवर्ष के वि आयुर्वेदिक कालेजों के विद्यार्थियों, विद्वानों, वैद्यों, चिकित्सकों तथा साध गृहस्थों आदि के लिए अत्यधिक उपादेय है। मूल्य ५-

गर्भरक्षा तथा शिशु-परिपालन

डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा बी. एम्. सी., एम. बी. बी. एस्.

इस पुस्तक में गर्भ के प्रारम्भ से शिशु के जन्म के एक वर्ष पश्चात् तक की सभी घटनाओं का विशद वर्णन किया गया है। गर्भावस्था में गर्भ की रक्षा करने के लिए कौन-कौन काम किये जायँ, गर्भवती स्त्री की दिनचर्या उसका भोजन, निद्रा, व्यायाम, मानसिक कृत्य आदि पर लेखक ने पूर्ण प्रकाश डाला है तथा गर्भ की उपयुक्त वृद्धि के लिये जिन आयोजनों की आवश्यकता है उनका उपयुक्त वर्णन किया है। गर्भकाल में उत्पन्न होनेवाले रोग, प्रसव की कठिनाइयाँ, उनको दूर करने के उपाय, नवजात शिशु की देख-रेख, उसका पोषण, शारीरिक वृद्धि, अवस्था के अनुसार शिशु के आहार में परिवर्तन, ऊपरी दूध बनाना और पिलाना, शिशु के वस्त्र, उसका स्नान, व्यायाम आदि का पुस्तक में पूर्ण वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। प्रथम वर्ष में शिशुओं को होनेवाले जिन रोगों के कारण उनकी एक बहुत बड़ी संख्या जीवन के प्रथम वर्ष में ही अपनी लीला समाप्त कर देती है, उनका भी उपयुक्त विवेचन करते हुए उनकी चिकित्सा का वर्णन किया गया है।

पुस्तक प्रत्येक परिवार के लिए अत्यन्त उपयोगी है। गर्भवती स्त्रियों के लिये यह अमूल्य पथप्रदर्शक तथा पद-पद पर उत्पन्न होनेवाली आपत्तियों एवं बाधाओं से रक्षा करने में अनुपम सहायक है।

मानव-जीवन की महत्ता देखते हुए विषय की उपयोगिता स्वयं स्पष्ट हो उठती है। गर्भ एवं शिशु अवस्था में अतिशय कोमल, अबोध तथा सुकुमार मानव की देख-भाल या पालन-पोषण करने वाले माता-पिता या संरक्षकों में से एक प्रतिशत को भी इस विषय की पूरी जानकारी नहीं होती। फलतः गर्भ एवं शिशु अवस्था में की गई थोड़ी-सी भी उपेक्षा मानव का संपूर्ण जीवन दुर्बल तथा अभावग्रस्त बना देती है। कहा गया है—मूर्ख मित्र, शत्रु से अधिक घातक होता है। आज के अधिकांश भारतीय माता-पिता अपनी सन्तति के ऐसे ही मित्र हैं। उन्हें माता-पिता बनने से पूर्व अपनी सन्तति के हित की दृष्टि से इस पुस्तक का अवश्य अवलोकन करना चाहिये।

कागज, छपाई, गेटअप आदि आधुनिकतम। मूल्य ४—५०

एलोपैथिक मिक्श्चर्स

प्रस्तुत पुस्तक में अनुभवी चिकित्सकों द्वारा विभिन्न रोगों पर अनुभूत तथा स्थान-स्थान पर आयुर्वेदज्ञों द्वारा प्रयुक्त सैकड़ों श्रेष्ठ मिश्रण दिये गये हैं। निदान एवं चिकित्सा की सुविधा के लिए प्रत्येक रोग के प्रारम्भ में सामान्य लक्षण एवं मिश्रणों को विशिष्ट क्रम से रखा गया है। रोग की किस अवस्था में किस मिश्रण का प्रयोग करना चाहिए यह स्पष्ट शब्दों में लिखा गया है। आवश्यक स्थानों पर आधुनिकतम इंजेक्शन के प्रयोग, मात्रा विधि आदि का स्पष्ट निर्देश है। रोगों की विशिष्ट-चिकित्सा का यथास्थान वर्णन है। जिन रोगों का प्रकोप जितना अधिक होता है उनकी चिकित्सा भी उतने ही विस्तार से लिखी गई है, जैसे—मलेरिया, टायफाइड, राज यक्ष्मा आदि। संक्षेप में चिकित्सा के सभी उपायों का वर्णन है। इस एक पुस्तक को सदैव साथ रखने से रोग की किसी भी अवस्था में उचित चिकित्सा निर्देश प्राप्त हो सकते हैं। मिश्रणों के निर्माण की विधि, स्थान, उपकरण आदि तथा कम्पाउण्डर के जानने योग्य सभी आवश्यक बातों का समावेश एक पृथक् अध्याय में कर दिया गया है। मूल्य २-०

शिलाजीत विज्ञान

'शिलाजीत-विज्ञान' में भेदोपभेद एवं सूक्ष्म विश्लेषण सहित शिलाजीत का विशद परिचय, शोधन, परीक्षण, सामान्य और विशेष प्रयोग-विधि, शिलाजीत से निर्मित होनेवाले कुछ महत्त्वपूर्ण अनुभूत योग, कुछ विशिष्ट रोगों में शिलाजीत के प्रयोग की चमत्कारिता आदि सब ज्ञातव्य विषयों का समावेश है। यह एक ही ओषधि अनुपान भेद से अनेक व्याधियों को नष्ट कर सकती है। ऐसी उपादेय ओषधि का सामान्य एवं विशेष ज्ञान प्राप्त करना मनुष्यमात्र के लिये बहुत महत्त्वपूर्ण है और वह इसी एक पुस्तक से भलीभाँति प्राप्त हो सकता है। ०-

रसशास्त्र विषयावरील अभिनव ग्रन्थ—

+ रस धातु प्रकाश (१-२ भाग संस्कृत-मराठी)

पंचकर्म युक्त अभिनव चिकित्सा। वैद्य दा० मुळे मूल्य १२-

हैजा (विसूचिका) चिकित्सा

इस पुस्तक में हैजा का इतिहास, व्याख्या, कारण, मरकविज्ञान, वक्राणुओं के विषय में जानकारी, लक्षण, रोगक्रम, उपद्रव, निदान, सापेक्षनिदान, साध्यासाध्यता, मृत्यूत्तर रूप, संपूर्ण चिकित्साक्रम, रोग से बचने के उपाय तथा मरक न फैलने के उपाय, अन्यान्य उपचार, पथ्यापथ्य एवं भावी योजना आदि पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर विशद वर्णन किया गया है। कुछ अनुभूत नवीन पेटेण्ट ओषधियों का भी वर्णन किया गया है। पुस्तक सर्वसाधारण के लिए अत्यन्त उपादेय है।

मूल्य ०–७५

+ सन्दिग्ध द्रव्यविज्ञान

जिसे आयुर्वेद महाविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अध्यापक आयुर्वेदाचार्य श्री पं० राजितराम पाण्डेय ए. एम. एस. की सफल लेखनी ने प्रथम बार प्रकट किया है।

पुस्तक में संक्षिप्त सारगर्भित भाषा में आयुर्वेद की २५ सन्दिग्ध वनस्पतियों पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक द्रव्यगुण के विद्यार्थियों, अध्यापकों और शोधकों के लिए पठनीय तथा संग्रहणीय है।

मूल्य १–५०

+ चिकित्सादर्श

[औषध-व्यवस्था-लेखन अर्थात् नुसखानवीसी का अनुपम और अभूतपूर्व ग्रन्थ]

वैद्य पं० राजेश्वरदत्त शास्त्री

आयुर्वेदशास्त्राचार्य, डी. एस. सी. (आयुर्वेद)

प्रिंसिपल आयुर्वेदिक कालेज, सुपरिंटेंडेंट व प्रधान चिकित्सक

सर सुन्दरलाल हास्पिटल, बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी

उक्त ग्रन्थ में अनुभवी विद्वान् लेखक ने आतुरालयस्थ रोगियों पर ३० वर्ष से प्रयुक्त अनुभूत औषध, योग, चिकित्सापद्धति और पथ्यापथ्य का वर्णन विशद रीति से किया है तथा रोगों के लक्षण व भेद भी लिखे हैं। पुस्तक चिकित्सकों तथा आयुर्वेद के विद्यार्थियों के लिये अत्युपयोगी है। १–२ भाग

मूल्य १०–५०

पञ्चविध कषाय-कल्पना विज्ञान

आयुर्वेदाचार्य—

डा० अवध बिहारी अग्निहोत्री ए. एम. एस.

प्रोफेसर, आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

इस पुस्तक में आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली के प्रारम्भिक, अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा उपादेय विषय 'पंचविधकषायों' अर्थात् स्वरस, कल्क (शुष्क कल्क अथवा चूर्ण), कषाय (क्वाथ), हिम तथा फाण्ट आदि की कल्पनाओं तथा इन्हीं कषायों के अन्तर्गत आनेवाले तण्डुलोदक, यूषरस, मांसरस, यवागू, मण्ड, पेया, विलेपी आदि उपकषायादिकों का प्राच्य, पाश्चात्य तथा यूनानी मतानुसार, विशदतापूर्वक विवेचन किया गया है। यही नहीं, प्रचलित तथा प्रसिद्ध आयुर्वेदीय स्वरस, कल्क, चूर्ण, क्वाथ, हिम, फाण्टादिकों की कल्पना-विधि तथा उनके गुणों व प्रयोग आदि का वर्णन भी सरल तथा सरस भाषा में किया गया है। यह पुस्तक भारतवर्ष के सभी आयुर्वेदिक कालेजों के द्वितीय तथा तृतीय वर्ष के छात्रों के 'भैषज्य-कल्पना' विषय के एक अत्यन्त आवश्यक तथा महत्वपूर्ण अंग पर लिखी होने के कारण बड़ी ही महत्वपूर्ण तथा उपादेय है। विभिन्न कषायों की निर्माणविधि प्रयोगात्मक ढंग से भी दी गई है। आधुनिक छात्रों, ग्रामीण वैद्यों, नगर के अल्पानुभवी तथा प्रारम्भिक चिकित्सकों एवं सभी गृहस्थों के लिये अत्यन्त उपादेय पुस्तक है। मूल्य १–५०

स्टेथिस्कोप तथा नाड़ीपरीक्षा (सचित्र)

इस पुस्तक में स्टेथिस्कोप की बनावट, प्रकार, परीक्षा, श्वास-प्रश्वास की ध्वनियों का वर्णन, फुफ्फुस, रक्तसंवहन, हृदय का कार्य, कपाटों की विकृति आदि तथा नाड़ीपरीक्षा सम्बन्धी सभी ज्ञातव्य विषयों का वर्णन बड़े ही मनोयोग से किया गया है। काशी हिन्दूविश्वविद्यालय के अध्यापक एवं चिकित्सकों के सहयोग से निर्मित यह पुस्तक बेजोड़ है। मूल्य ०–७५

सुसंस्कृत ! प्रामाणिक !! संस्करण !!!

भेलसंहिता

सम्पादक—

पं० गिरिजादयालु शुक्ल एम. ए., ए. एम. एस.

प्रिन्सिपल, स्टेट आयुर्वेदिक कालेज, लखनऊ

आयुर्वेद के इस परम प्राचीन एवम् अप्राप्य ग्रन्थ के प्रस्तुत सुसंस्कृत संस्करण को देख कर पाठकों को निःसन्देह अपार हर्ष होगा। इस ग्रन्थ में जो त्रुटित अंश थे उन्हें यथाशक्ति (कोष्ठक के अंतर्गत) सुसंस्कृत करने का अथक श्रम किया गया है एवं योग्य सम्पादक ने प्रायः सभी संदिग्ध स्थलों पर टिप्पणी द्वारा विषय का स्पष्टीकरण भी कर दिया है। इस प्रकार आधुनिक दृष्टिकोण से समुचित सम्पादन द्वारा सर्वथा अभिनव रूप में यह संस्करण प्रकाशित किया गया है। आशा है पाठकों को इस दुर्लभ ग्रन्थ के सुचारु संपादन से अत्यधिक लाभ और प्रसन्नता होगी। छपाई, कागज, गेट अप आदि आधुनिकतम। मूल्य १०-००

चरक तथा काश्यपसंहिता का निर्माण-काल

वैद्य श्री रघुवीरशरण शर्मा

प्रस्तुत पुस्तक में अग्निवेश, जतूकर्ण, पराशर, पुनर्वसु आत्रेय, निमिविदेह, गान्धार नग्नजित, कृष्णद्वैपायन व्यास आदि के जीवन-काल के निर्णय के द्वारा चरकसंहिता तथा काश्यपसंहिता के निर्माण काल पर यथेष्ट प्रकाश डाला गया है। ग्रन्थ की विस्तृत भूमिका में एक प्रकार से आयुर्वेद का व्यवस्थित इतिहास ही उपस्थित कर दिया गया है। ऋषियों के नामों के विषय में प्रचलित सारा मतभेद इस एक ही पुस्तक के पढ़ने से लुप्त हो जायगा। पुरातत्त्ववेत्ताओं एवं तद्विषयक शोधकर्ताओं तथा आयुर्वेद के इतिहास को इस पुस्तक से प्रचुर सामग्री प्राप्त होगी। पुस्तक अपने विषय की अनूठी है। इसे देखने पर ही लेखक के श्रम का अनुमान किया जा सकता है। मूल्य २-००

यू० पी० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड द्वारा पाठ्य–स्वीकृत

अगद-तन्त्र

आयुर्वेदबृहस्पति डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस.

'अगदतन्त्र' उस तन्त्र का नाम है जिसमें सर्प, कीट, लूता, मूषकादि जंगम प्राणियों के दंश तथा नाना प्रकार के स्थावर और जंगम विषों के अन्तःप्रयोग से उत्पन्न होने वाले लक्षणों के ज्ञान, निदान एवं उपशम के उपायों का वर्णन हो। इस विषय का मूल स्रोत चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश, शार्ङ्गधर, वसवराजीय आदि प्राचीन वैद्यक ग्रन्थों में निहित है। उन सभी ग्रन्थों का सारभूत यह अभिनव प्रकाशित ग्रन्थ रजिस्टर्ड चिकित्सक, घर का वैद्य—डाक्टर तथा जन साधारण के लिये भी समान रूप से उपयोगी है। नवीन वैज्ञानिक विधि से विषघ्न औषधों का निर्माण प्रकार तथा साधन का अभाव होने पर सर्पादि के घातक विषों की प्राकृतिक चिकित्सा का भी इस ग्रन्थ में उल्लेख किया गया है। यह ग्रन्थ छात्र, चिकित्सक तथा जन-समुदाय, सभी के लिये अत्यन्त उपादेय है। मूल्य ०–७५

बिहार संस्कृत समिति द्वारा पाठ्य स्वीकृत—

अञ्जननिदानम्

सान्वय 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका सहित।

यह ग्रन्थ आयुर्वेद शास्त्र में निदान के लिये श्रेष्ठ माना जाता है। विहार के नवीन पाठ्यक्रम में निर्धारित होने से हमने इस ग्रन्थ को सुन्दर प्रामाणिक परीक्षोपयोगी हिन्दी टीका के साथ प्रकाशित किया है। मूल्य १–००

अष्टाङ्गहृदयम् (गुटका)

'भागीरथी' टिप्पणी सहित

इस बार यह द्वितीय संस्करण अधिक परिष्कृत करके छापा गया है। आयुर्वेदाचार्य पं० तारादत्त पन्त विरचित इसकी 'भागीरथी' टिप्पणी की विशेषता यही है कि छपते ही प्रथम संस्करण हाथों हाथ बिक गया। इस बार चमकते हुए नये टाईप और सुन्दर सफेद ग्लेज कागज में इसका जेबी गुटका संस्करण और भी मनोरम हो गया है। मूल्य ४–००

आयुर्वेदप्रकाशः

'अर्थविद्योतिनी' 'अर्थप्रकाशिनी' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्या सहित

व्याख्याकारः **श्री गुलराजशर्मा आयुर्वेदाचार्य**

आयुर्वेद-साहित्य में श्रीमाधव उपाध्याय द्वारा विरचित इस ग्रन्थ का महत्त्व पाठकों से अविदित नहीं है। प्रस्तुत संस्करण में इसकी संस्कृत टीका में बहुत कुछ संशोधन-परिवर्द्धन किया गया है तथा हिन्दी टीका में तो विशिष्ट रूप से परिवर्त्तन तथा परिवर्धन किया गया है। आयुर्वेद का रहस्य इस ग्रन्थ की सुबोध पंक्तियों में बिखरा पड़ा है। चिकित्सक, छात्र तथा आयुर्वेद-प्रेमियों के लिए यह अवश्य संग्रहणीय मननीय ग्रन्थ है। मूल्य १२-५०

आयुर्वेद की कुछ प्राचीन पुस्तकें

प्रियव्रत शर्मा

तृतीय पञ्चवर्षीय योजना के अन्तर्गत आयुर्वेदिक अनुसंधान में वाङ्मय-शोध का भी स्थान है। इसका श्रीगणेश एक नया-सा कार्य है, अतः आयुर्वेद के लिये ही मानो जीवन धारण करने वाले विज्ञ लेखक ने मार्गप्रदर्शन के हेतु नमूने के रूप में इस विवरणपुस्तिका में लगभग २५ आयुर्वेदिक ग्रन्थों के वाङ्मय-शोध का विवरण प्रस्तुत किया है। वाङ्मय-शोध-क्षेत्र के कार्यकर्ताओं को इससे निश्चय ही दिशा-निर्देश प्राप्त होगा। मूल्य १-००

सामान्य रोगों की रोक थाम

डा० प्रियकुमार चौबे

रोगों की चिकित्सा कराने से अच्छा है रोग उत्पन्न ही न होने देना। यह तभी सम्भव है जब रोगों के प्रतिषेधात्मक उपायों और उनके प्रयोग का ज्ञान सदा सबको रहे। साधारण पठित मानव मात्र को यह उपादेय ज्ञान सुलभ कराना ही प्रस्तुत पुस्तक की रचना का उद्देश्य है।

इसमें सभी सामान्य रोगों का परिचय, सामान्य लक्षण तथा उनसे बचने के उपायों का अत्यन्त सरल हिन्दी भाषा में विवेचन किया गया है। यथास्थल अनेक चित्र भी दे दिए गए हैं। इस प्रकार स्वास्थ्य-रक्षाकी दृष्टि से चिकित्सक, छात्रगण, गृहस्थ आदि तथा सामान्य पठित मानवमात्र के लिये भी यह पुस्तक परम उपयोगी है। व्यक्तिमात्र के पास इस पुस्तक की एक प्रति अवश्य रहनी चाहिए। मूल्य ३-५०

अष्टाङ्गसंग्रहः

'अर्थप्रकाशिका' हिन्दी टीका तथा विशेष वक्तव्य सहित ।

टीकाकार—आयुर्वेद बृहस्पति श्री गोवर्धन शर्मा जी छांगाणी ।

भूमिका लेखक—आयुर्वेद-बृहस्पति श्री यादवजी त्रिकमजी आचार्य

छांगाणी जी की विद्वत्ता आयुर्वेद जगत में प्रसिद्ध है । अतः उनकी टीका की प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है । फिर भी मैं इतना अवश्य कहूंगा कि छांगाणी जी की इस कृति से अष्टांगसंग्रह के जिज्ञासुओं का ही नहीं प्रत्युत आयुर्वेद जगत का महान् उपकार हुआ है । टीका के साथ २ विशेष वक्तव्य में छांगाणी जी ने स्वानुभूत योगों का भी अधिकतर उल्लेख कर दिया है जो विद्यार्थी तथा चिकित्सकों के लिये अत्यन्त उपादेय है । **सूत्रस्थान ८—००**

बिहार संस्कृत समिति मध्यमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत—

आयुर्वेदविज्ञानम्

सटिप्पण विद्योतिनी हिन्दी टीका बृहत् परिशिष्ट सहित

यह निदान चिकित्सा का बड़ा ही उपयोगी ग्रन्थ है । इसकी टीका में रोगों का विशेष भाषाओं-अंग्रेजी-हिन्दी-यूनानी-संस्कृत आदि-में नाम और पारिभाषिक शब्दों तथा अन्य रोगों का विशेष विचरण भी दे दिया गया है । आयुर्वेद के छात्रों तथा नवीन चिकित्सकों के लिये बड़ी उपयोगी पुस्तक है । **मूल्य २—००**

इण्डियन मेडिसिन बोर्ड यू० पी० द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तक—

आयुर्वेदीय परिभाषा

अभिनव-प्रकाशिका-हिन्दी टीका विस्तृत परिशिष्ट सहित ।

टीकाकार—आयुर्वेदाचार्य श्रीगिरिजादयालु शुक्ल ए. एम. एस.

यह ग्रन्थ सभी आयुर्वेद विद्यापीठ, कालेज, विश्वविद्यालय आदि के पाठ्यक्रम में निर्धारित है । प्रस्तुत पुस्तक में सरल हिन्दी टीका के साथ साथ वक्तव्य में अन्य सभी उपयोगी विषयों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है । प्राचीन मानों का नवीन मान से समन्वय कर कुछ अन्य आवश्यक परिभाषाओं का भी परिशिष्ट में समावेश कर दिया गया है । **द्वितीय संस्करण मूल्य १—२५**

इण्डियन मेडिसिन बोर्ड यू० पी० द्वारा पाठ्य स्वीकृत—

अभिनव-शरीरक्रियाविज्ञान (सचित्र)

आचार्य श्री प्रियव्रत शर्मा एम. ए., ए. एम. एस.

प्रोफेसर, आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दूविश्वविद्यालय, काशी

भारतवर्ष के प्रायः सभी आयुर्वेद महाविद्यालयों में नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार लगभग २५ वर्षों से अर्वाचीन शरीरक्रियाविज्ञान का पठन-पाठन चलता आ रहा है और इधर मेडिकल कालेजों में हिन्दी माध्यम का प्रवेश होने जा रहा है। किन्तु अभी तक इस विषय की कोई ऐसी पुस्तक हिन्दी में नहीं थी जिसमें आधुनिक शरीरक्रियाविज्ञान के संपूर्ण विषयों का वैज्ञानिक शैली से संकलन किया गया हो। कुछ पुस्तकें तो इस विषय से अनभिज्ञ जनों को मनोरञ्जन के व्याज से प्रारम्भिक ज्ञान देने के उद्देश्य से बनाई गई थीं और कुछ नव-प्रकाशित ग्रन्थों में प्राचीन और नवीन दोनों विषयों को एक ही साथ भर देने के प्रलोभन में शैली ऐसी क्लिष्ट और विषय ऐसा दुरूह बना दिया गया कि साधारण विद्यार्थी-समाज तथा जिज्ञासुवर्ग उससे लाभ नहीं उठा सके। पठन-पाठन के क्रम में इन्हीं व्यावहारिक कठिनाइयों का अनुभव करके अधिकारी लेखक ने इस महत्वपूर्ण विषय पर लेखनी उठाई और कहने की आवश्यकता नहीं कि उनकी यह रचना छात्रों और चिकित्सकों के लिए नितान्त सन्तोषजनक सिद्ध हुई है। वैज्ञानिक पुस्तकों की तरह विषय-ज्ञान को अधिक स्पष्ट करने के लिए सैकड़ों चित्र स्थान २ पर लगा दिए गए हैं। इस विषय के जिज्ञासु इस संशोधित परिवर्द्धित संस्करण से विशेष लाभान्वित होंगे। छपाई, कागज, गेटअप आदि सभी सुन्दर है। मूल्य १०-००

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

सचित्र

अभिनव विकृतिविज्ञान

{A Text Book of Pathology—Ancient & Modern}

[पाश्चात्त्य तथा आयुर्वेदीय वैकारिकी का पाठ्यग्रन्थ]

आयुर्वेदाचार्य पं० रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस.

आयुर्वेदानुसन्धान-सचिव तथा प्राध्यापक आयुर्वेद कालेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पृष्ठसंख्या लगभग १२००, खोजपूर्ण अध्याय १५, सहस्रों उद्धरण—हिन्दी के पारिभाषिक शब्दों के साथ साथ आंग्लपर्याय—सैकड़ों वैज्ञानिक चित्र, मञ्जुल मुद्रण, डिमाई अठपेजी बड़ी साइज, मोटा ग्लेज कागज, विलायती कपड़े की पक्की जिल्द, आधुनिक आकर्षक आवरण से विभूषित। मूल्य २२-००

कौमारभृत्य, राजकीय ओषधि-योग-संग्रह आदि ग्रन्थों के यशस्वी लेखक स्वर्णपदक-प्राप्त आचार्य रघुवीरप्रसादजी त्रिवेदी की अमर कृति अब बड़े सजधज के साथ छप चुकी है। विकृति-विज्ञान (पैथालोजी) का विषय कितना दुरूह है यह इसी से ज्ञात होता है कि अभी तक इस विषय पर किसी विद्वान् ने हिन्दी में लेखन का साहस नहीं किया है। अँगरेजी में भी भारतीय विद्वानों की इस विषय पर बहुत कम पुस्तकें हैं। विकृति-विज्ञान माडर्न मैडिकल साइन्स में एक आधार-स्तम्भ का कार्य करता है। इसका समीचीन ज्ञान बिना हुए आधुनिक चिकित्सापद्धति के रहस्यों का ज्ञान नहीं किया जा सकता।

इस विशाल ग्रन्थ में न केवल पाश्चात्य विकृतिविज्ञान का विस्तृत वर्णन है अपितु आयुर्वेदीय वैकारिकी के भी स्वतन्त्र अध्याय लिखकर इसे सर्वाङ्गसुन्दर कर दिया गया है। सभी दृष्टि से यह अपने विषय की प्रथम पाठ्य-पुस्तक है।

आचार्य त्रिवेदीजी ने वर्षों परिश्रम करके सुललित भाषा में स्थान-स्थान पर आयुर्वेदीय अंश की पूर्ति करते हुए सर्वथा नवीन रूप में विषय को उपस्थित करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। इस पुस्तक के प्रकाशन से आधुनिक भारतीय चिकित्सा के विद्यार्थियों के एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति हो गई है। आचार्य तथा एम० बी० बी० एस० परीक्षा के अन्तिम वर्ष के छात्रों, विद्वानों, वैद्यों तथा डाक्टरों के लिए पुस्तक परमोपादेय सिद्ध होगी।

आयुर्वेद के महारथी विद्वानों ने इस ग्रन्थ से प्रभावित होकर अपने अपने

जो उद्गार प्रकट किये हैं, उनका सारांश संक्षेप में दिया जाता है :—

……इस ग्रंथ के लेखक वैद्यराज श्रीरघुवीरप्रसाद जी त्रिवेदी भारत की सर्वोच्च आयुर्वेदीय शिक्षासंस्थाओं में से एक के प्राध्यापक हैं अतएव विद्यार्थियों की वर्तमान आवश्यकता को भली भाँति समझकर पाश्चात्त्य तथा आयुर्वेदीय विकृतिविज्ञान के सर्वांगपूर्ण विशालकाय इस स्तुत्य ग्रन्थ को लिखकर आपने चिकित्सक संसार के समक्ष उपस्थित किया है।……यह ग्रन्थ न केवल आयुर्वेदिक छात्रों के लिये ही लाभप्रद होगा अपितु आधुनिक विज्ञान के लिये भी अधिक उपादेय होगा…… —**डा० प्राणजीवन मेहता**

……त्रिवेदी जी मेरे शिष्यों में अन्यतम हैं। आप योग्य अध्यापक तथा आयुर्वेद के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के कुशल लेखक भी हैं। आपके द्वारा लिखित प्रस्तुत नवीन ग्रन्थ अनेक विशिष्टताओं से युक्त है। हिन्दी में आजतक विकृतिविज्ञान जैसे महत्त्वपूर्ण विषय पर कोई प्रामाणिक ग्रन्थ नहीं था। अपने विषय का हिन्दी में यह प्रथम ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। इसमें पाश्चात्त्य विकृतिविज्ञान के साथ ही आयुर्वेदीय विकृतिविज्ञान का भी विशद वर्णन है…… —**डॉ० भास्करगोविन्द घाणेकर**

……प्रस्तुत ग्रन्थ में सिद्धहस्त लेखक ने पैथालोजी (सामान्य और विशिष्ट) विषय का इस कौशल से विवेचन किया है कि पूरा विषय भेदरहित होकर एक हो गया है। स्थान-स्थान पर आयुर्वेदिक वैकारिकी के साथ उसकी तुलना और विषय का स्पष्टीकरण ऐसी सरलता के साथ किया गया है कि कहीं भी दुर्बोधता नहीं प्रतीत होने पाती। शैली इतनी रोचक है कि जान पड़ता है मानो वैज्ञानिकता ने प्रगति-पथ पर किसी साहित्यिक का योग पा लिया हो। सभी विषय अबतक के खोजपूर्ण ज्ञान से ओतप्रोत दिखाई पड़ते हैं……

—**डा० शिवनाथ खन्ना**

इण्डियन मेडिसिन बोर्ड यू० पी० की प्राणाचार्य परीक्षा में आलोच्य व सहायक स्वीकृत ग्रन्थ—

अभिनव बूटीदर्पण सचित्र

सम्पादक : 'रूपनिघण्टुकार' श्रीयुत रूपलालजी वैद्य, वनस्पति-विशेषज्ञ

सहज में स्पष्ट पहचानने योग्य चित्रों के साथ प्रकाशित इस ग्रन्थ में आज तक के प्रकाशित जड़ी-बूटियों के विषय को भली भांति परिमार्जित करने तथा नवीन अनुभव सम्मिलित करने के साथ २ अन्य सन्दिग्ध बूटियों पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है, साथ ही इसमें प्रत्येक रोग पर बूटियों का प्रयोग नम्बर भी बतला दिया है जिससे साधारण जन भी किस रोग पर किन किन बूटियों का कैसे प्रयोग हो सकता है ज्ञात कर प्रयोग द्वारा सफल चिकित्सा कर लाभ उठा सकते हैं। इसकी प्रशंसा स्वयं क्या लिखी जावे, ग्रन्थ हाथ में आनेपर आप स्वयं प्रशंसा किये विना नहीं रहेंगे। मूल्य १०—००

संशोधित ! परिवर्द्धित ! परिष्कृत द्वितीय संस्करण

अष्टाङ्गहृदयम्

'विद्योतिनी' हिन्दीटीका 'वक्तव्य' परिशिष्ट सहित

टीकाकार—कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त विद्यालङ्कार

परिष्कर्ता—वैद्य श्री यदुनन्दन उपाध्याय बी. ए., ए. एम. एस.

चिकित्सक तथा अध्यापक—

सर सुन्दरलाल आतुरालय, काशी हिन्दूविश्वविद्यालय

बम्बई सरकार ने शुद्ध आयुर्वेद का जो नया पाठ्यक्रम चलाया है उसमें य पुस्तक पाठ्यक्रम में सम्पूर्ण रूप से रखी गयी है। टीकाकार ने सर्वाङ्गसुन्द आयुर्वेदरसायन, तत्वबोध, पदार्थचन्द्रिका आदि मुद्रित-अमुद्रित अनेक टीकाओं आधार पर ही इस सुविस्तृत टीका की रचना की है। इसके विशेष वक्तव्य उपर्युक्त सभी टीकाओं का सारांश प्रायः सब आ गया है।

द्वितीय संस्करण की विशेषताएँ

इस संस्करण की व्याख्या में चिकित्सा-जगत् में हुई नवीन खोजों के आध पर निदान एवं चिकित्सा-संबंधी अनेक उपयोगी विषय भी बढ़ाए गए हैं। समन्वयवादी दृष्टिकोण से उनका यथार्थ गुण-दोष विवेचन किया गया है।

प्रथम संस्करण के वक्तव्यों को भी इस बार उपाध्याय जी ने अपने अद्याव की चिकित्सा तथा पठन-पाठन के रहस्यानुभवों से संशोधित, परिवर्धित का छात्रों एवं अध्यापकों के हित की दृष्टि से बहुत ही उपादेय बना दिया है।

ग्रन्थ मुद्रित हो जाने पर भी श्री उपाध्यायजी जिन परमोपयोगी विषयों उपन्यस्त करने का लोभ नहीं संवृत कर सके उन्हें परिशिष्ट में दे दिया गया है पाठक सोच सकते हैं कि परिशिष्टगत विषयों की उपयोगिता क्या होगी।

इस प्रकार यह सर्वाङ्गसुन्दर संस्करण पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। निश्चि हो इससे छात्राध्यापकों, चिकित्सकों तथा आयुर्वेदानुरागियों का समान रूप हित होगा।

सुन्दर आकार-प्रकार, नवीन चमकते टाइप, सफेद मोटा चिकना काग पक्की मनोहर जिल्द आदि से अलंकृत विशालकाय इस द्वितीय संस्करण का मू प्रथम संस्करण से भी अल्प अर्थात् १५—०० कर दिया गया है

शास्त्रीय विवेचन एवं व्यावहारिक चिकित्सा-विषयक सर्वोत्तम ग्रन्थ-

काय-चिकित्सा

गंगासहाय पाण्डेय, ए. एम. एस.

प्रोफेसर, आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दूविश्वविद्यालय, काशी

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने प्राचीन चिकित्सा के सिद्धान्तों का पूर्ण विवेचन करने के साथ व्यवहारोपयोगी सभी अनुभवसिद्ध सामग्री संगृहीत की है। प्रारंभ में आयुर्वेदीय रोगीपरीक्षा के प्रकीर्ण सूत्रों को शृङ्खलित कर दोष एवं औषध के निरूपण की प्राचीनों की सूक्ष्म से सूक्ष्मतम विचारणा, प्रकृति-विकृति विज्ञान, नाड़ी, मूत्र, मल, जिह्वा आदि की विशिष्ट परीक्षण पद्धति, परिप्रश्न, प्रत्यक्ष, अनुमान के द्वारा षडङ्ग परीक्षण, दोषों की विशिष्ट अवस्थायें और चिकित्सोपयोगी अंशांश विकल्पना आदि परमोपयोगी विषयों का वर्णन किया गया है। आयुर्वेद के दुरूह सिद्धान्तों को बहुत ही स्पष्ट शैली में अभिव्यक्त किया गया है। प्राच्य विषयों के अतिरिक्त नवीन पद्धति से रोगी-परीक्षा क्रम को भी पर्याप्त विस्तार से वर्णित किया गया है। रोग एवं उनके उपद्रव, अरिष्ट तथा साध्यासाध्यता के सामान्य सर्वमान्य सूत्र विस्तारपूर्वक वर्णित हैं। इस प्रकार रोग विनिश्चय तथा चिकित्सोपयोगी व्यापक वर्णन के उपरान्त चिकित्सा के उपक्रम तथा उनकी प्रयोग विधि का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। लंघन, पाचन, स्वेदन, स्नेहन, शिरोविरेचन, अनुलोमन, वस्तिप्रयोग, शीतोपचार, परिचर्या, पथ्यनिर्माणविधि, संसर्जनक्रम तथा दोषावसेचन आदि सभी व्याधियों में उपयोगी उपक्रमों का सोदाहरण विस्तृत विवेचन किया गया है। बालरोग तथा स्त्रीरोग-परीक्षणक्रम का स्वतन्त्र रूप में निर्देश किया गया है। दैनिक मिलने वाले अनिद्रा, प्रलाप, आध्मान, कास, शिरःशूल, वमन आदि विशिष्ट लक्षणों की रामबाण लाक्षणिक चिकित्सा का विस्तारपूर्वक प्रारंभ में वर्णन किया है। आजकल शुल्वौषधियों (Sulpha Drugs) तथा प्रतिजीवक द्रव्यों (Arhvictics) का बहुत प्रयोग होता है। अतः बहुत विस्तार से इनका गुण-प्रयोग, विशेष निर्देश, पृथक् पृथक् रोगों में प्रयुक्त मात्रा आदि सभी आवश्यक विषयों का वर्णन है। प्राच्य-पाश्चात्य मतों के आधारपर प्रत्येक रोग का पूर्ण परिचय, निदान, पूर्वरूप, रूप, उपशय, सम्प्राप्ति, उपद्रव अरिष्ट आदि का संक्षेप में वर्णन है। चिकित्सा का वर्णन बहुत विस्तार से किया गया है। रोग का

किस अवस्था में कौन सी औषधि किस अनुपान से देनी चाहिये, पथ्यापथ्य आदि की क्या व्यवस्था होनी चाहिये, और उपद्रव होने पर अथवा आत्ययिक स्थिति की पूर्ण व्यवस्था आदि विषयों का विशद विवेचन कर केवल अनुभवसिद्ध चिकित्सा-विधि लिखी गई है। व्याधि की तीव्रावस्था तथा जीर्णावस्था की चिकित्सा का पृथक् वर्णन किया गया है। प्रत्येक रोग के उग्र लक्षणों की शामक चिकित्सा तथा संभाव्य उपद्रवों की पूर्ण व्यवस्था का विस्तारपूर्वक पृथक् वर्णन किया गया है। रोग प्रतिकार (Prophylaxis) एवं बलाधान सम्बन्धी व्यवस्था तथा अन्य सभी कठिनाइयों का, जो चिकित्सा प्रारम्भ करने पर सामने आती हैं; समाधान इस में किया गया है। प्राचीन ग्रन्थों में अनेक गम्भीर व्याधियों की व्यवस्था बहुत सूक्ष्मरूप में बताई गई है, उन सब का—मन्थरज्वर, पक्षाघात, रक्तचाप, मूर्च्छा, हृद्रोग, आदि अधिक मिलनेवाली व्याधियों का—चिकित्साक्रम बहुत विस्तार से लिखा गया है।

+ स्वास्थ्य-चिकित्सा

(काया पुष्कर शिक्षा तथा चिकित्सा-प्रवेश)

डा० आर० सी० भट्टाचार्य

प्रस्तुत पुस्तक में चिकित्सा-शास्त्र के सभी अङ्गों से सम्बन्धित आवश्यक व्यावहारिक जानकारी दे दी गई है। विषय का प्रतिपादन बड़े रोचक ढङ्ग से किया गया है। डाक्टर-वैद्य, कम्पाउण्डर-रोगी, सभी के लिए उपयोगी। मूल्य ८-००

काश्यपसंहिता

श्री सत्यपाल आयुर्वेदालङ्कार कृत 'विद्योतिनी' हिन्दीटीका,
राजगुरु हेमराजजीकृत संस्कृत-हिन्दी विस्तृत 'उपोद्घात' सहित।

यह ग्रन्थ अपनी प्रामाणिकता में चरक तथा सुश्रुतसंहिता के समकक्ष है। आयुर्वेद शास्त्र के कौमारभृत्यतन्त्र के विषय में यही एक मात्र प्राचीन ग्रन्थ है। इस विशाल मूल ग्रन्थ का तथा राजगुरु हेमराजजी कृत विस्तृत संस्कृत उपोद्घात का भी सरल सुबोध हिन्दी भाषान्तर के साथ प्रकाशन किया गया है।

आयुर्वेद शास्त्र के प्रेमी स्वाध्यायशील विद्वानों और विद्यार्थियों के लिए यह अनुवाद बहुत उपादेय बन पड़ा है। इस नवीन ग्रन्थ के प्रकाशन तथा अनुवाद से आयुर्वेद शास्त्र के अनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर अद्भुत प्रकाश पड़ता है। निश्चित ही बालरोगों की विशिष्ट जानकारी में इससे आवश्यक सहायता मिलेगी। केवल भाषा के ज्ञाता भी इस क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकेंगे। मूल्य १६-००

संशोधित ! परिवर्तित !! परिष्कृत द्वि० संस्करण !!!

(नि. भा. आयुर्वेदमहासम्मेलन-आयुर्वेदविद्यापीठ द्वारा स्वर्णपदक पुरस्कृत)
यू. पी., इण्डियन मेडिसिन बोर्ड, आयुर्वेद विद्यापीठ, हि० सा० सम्मेलन आदि
अनेक आयुर्वेदिक शिक्षण संस्थाओं द्वारा स्वीकृत पाठ्य पुस्तक—

कौमारभृत्यम्

(नव्य-बालरोग-सहित)

श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस.

भूमिका लेखक—वैद्य श्री यादवजी त्रिकमजी आचार्य

इस ग्रन्थ में विद्वान् लेखक ने आयुर्वेदीय ग्रन्थों में प्राप्त समस्त कौमारभृत्य सम्बन्धी वचनों के साथ साथ आधुनिक विज्ञान से तुलनात्मक विचार प्रकट किये हैं तथा बालकों की रक्षा, उनके पालन-पोषण, आहार, ग्रह-बाधाओं आदि का उत्तम एवं आकर्षक शब्दों में वर्णन किया है। इनके अतिरिक्त प्राच्य तथा पाश्चात्य ग्रन्थों में उपलब्ध बालकों के समस्त रोगों का विस्तृत विवरण, निदान, लक्षण, साध्यासाध्यता, चिकित्सा आदि तथा साथ ही तुलनात्मक आयुर्वेदीय दृष्टिकोण भी दिया गया है।

द्वितीय संस्करण की विशेषताएँ

आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान में जो आशातीत परिवर्तन हुए हैं उन सब नवीन शोधों के अनुसार प्रस्तुत संस्करण में आरम्भ से अन्त तक परिवर्तन एवं परिवर्द्धन किया गया है। लेखक कौमारभृत्यादि विषय के परीक्षक भी रहे हैं अतः उस दृष्टि से भी छात्रों की सुविधा के लिए अनेक विषय बढ़ाए एवं सरल किए गए हैं। प्रथम संस्करण में कुछ बालरोगों पर केवल पाश्चात्त्य औषधों का ही प्रयोग लिखा गया था। किन्तु उनमें प्रयुक्त होनेवाले आयुर्वेदिक योगों का भी समावेश इस संस्करण में किया गया है। अनुभव में आए हुए कुछ और चिकित्सा-संबंधी विषयों का संवर्द्धन एवं नवीन-प्राचीन पद्धतियों का समन्वय आदि इस संस्करण की मुख्य विशेषताएँ हैं।

संशोधित परिवर्धित परिष्कृत संस्करण का मूल्य पहले से भी कम ८-०० मात्र

चक्रदत्तः

नवीन वैज्ञानिक भावार्थसन्दीपिनी भाषा-टीका तथा बहुमूल्य परिशिष्ट सहित

टीकाकारः—

श्री जगदीश्वर प्रसाद त्रिपाठी आयुर्वेदाचार्य ए. एम. एस.

इस ग्रंथ का यह दूसरा संस्करण प्रस्तुत है। तत्त्वचन्द्रिका संस्कृत टीका के अन्तर्गत आयुर्वेदविषयक पूरे पाण्डित्य का सार प्रस्तुत टीका में पदे-पदे अनुस्यूत है। कहीं-कहीं टीकाकार की विशेष टिप्पणियाँ इसमें चार चाँद प्रतीत होती हैं। पाठकों की सुविधा के लिये इसके सुविस्तृत परिशिष्ट को दो भागों में विभाजित कर दिया गया है। प्रथम परिशिष्ट में निदान (पंचलक्षण), एलोपैथिक पद्धति से विविध विशद परीक्षाएँ (मल, मूल, शब्द, स्पर्श, रूप, नेत्र, मुख, जिह्वा नाड़ी आदि की), मृत्यु-सामान्य-लक्षण, वातादिप्रकोपक हेतु, काल, मान-परिभाषा, ओषधि-ग्रहणकाल, पञ्चकषाय-वर्णन आदि तथा द्वितीय परिशिष्ट में क्रमशः प्रत्येक रोग का पथ्यापथ्यादि-निरूपण किया गया है।

प्रस्तुत संस्करण को आवश्यक परिवर्तन-परिवर्द्धन, भाषा-संस्कार आदि करके विशेष उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। सादी जिल्द १०–००

कपड़े की पक्की जिल्द १२–००

क्वाथमणिमाला-हिन्दी टीका सहित

आयुर्वेद के विभिन्न ग्रन्थों में उपलब्ध समस्त क्वाथों का बड़े परिश्रमपूर्वक संग्रह किया गया है। केवल काष्ठ ओषधियों द्वारा चिकित्सा करने वाले वैद्यों तथा प्राकृतिक चिकित्सकों (Naturopaths) के लिए यह अत्युत्तम तथा अद्वितीय संग्रह है। साथ में आधुनिक टिप्पणी भी है। मूल्य १–५०

बिहार संस्कृत समिति प्रथम परीक्षा पाठ्य स्वीकृत—

गूलरगुणविकाशः

वैद्यरत्न श्री चन्द्रशेखरधर मिश्र।

गूलर के विविध प्रयोगों से मनुष्य तथा पशुओं के साधारण से साधारण एवं जटिल से जटिल सैकड़ों रोगों की चिकित्सा की जा सकती है। गूलर की दवा इतनी सस्ती है कि ग्राम संगठन के कार्य में इससे बड़ी सहायता ली जा सकती है। बिहार सरकार इसे काम में ले भी रही है। स्वतन्त्र भारत के मनोनीत राष्ट्रपति देशरत्न श्री राजेन्द्रप्रसाद जी ने भी इस पुस्तक के प्रचार के लिए जोरदार शब्दों में सिफारिश की है जो पुस्तक में छपी हुई है। चौदहवां संस्करण १–००

चरकसंहिता

आयुर्वेदाचार्य–श्री पण्डित तारादत्तपन्तकृत भागीरथी बृहद्टिप्पणी सहित।

विद्यार्थियों के लिये सभी विषम स्थलों पर भागीरथी बृहद् टिप्पणी से युक्त यह सुन्दर गुटका संस्करण अल्प मूल्य में बहुत उपादेय है।

चिकित्सादि समाप्ति पर्यन्त केवल द्वितीय भाग ३–००

तापमापन (थर्मामीटर)

डा० राजकुमार द्विवेदी आयुर्वेदाचार्य

इस पुस्तक में यंत्र-परिचय, प्रकार तथा उनका पृथक् पृथक् वर्णन, निर्माण, व्यवहार, तापक्रमसारिणी, संताप तथा ज्वर, औपसर्गिक ज्वरों में तापक्रम का सारिणी, तापमान के स्थान, तापमापक लगाने की अवधि, तापग्रहण के विचारणीय प्रश्न, तापमापन काल, तापमापक वाचन तथा तापमापक विवरण आदि विषयों का विस्तार से वर्णन किया गया है जिससे इसकी उपयोगिता अत्यधिक बढ़ जाती है। मूल्य ०–२५

तुलसी-विज्ञान

तुलसी आयुर्वेद शास्त्र की अत्युत्कृष्ट एवं प्रसिद्ध सुलभ ओषधि है। इसका उपयोग अनेक प्रकार से अनेक अवस्थाओं में होता है, अतः योग्य विद्वानों के स्वानुभूत परीक्षित ३४३ सुलभ प्रयोगों का यह संग्रह प्रकाशित किया गया है। मूल्य ०–५०

दोष-कारणत्व-मीमांसा

आचार्य प्रियव्रतशर्मा, एम. ए., ए. एम. एस.

आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धान्त त्रिदोषवाद की चर्चा चिरकाल से चलती आ रही है। शरीरस्थ दोषों के कारण ही विकार उत्पन्न होते हैं, इसमें कोई विवाद नहीं। किन्तु उनकी कारणता का स्वरूप क्या है इस संवन्ध में अनेक मतवाद प्राचीन काल से प्रचलित हैं। संहिताओं के प्राचीन एवं अर्वाचीन टीकाकारों ने भी इसकी गंभीर विवेचना की है कि दोष विकारों के समवायिकारण हैं या निमित्त? मधुकोश-कारने भी 'तथा भूताश्च दोषाः प्रायशः' लिखकर इस विषय को सन्दिग्ध स्थिति में ही छोड़ दिया। आयुर्वेदीय सिद्धान्तों के गंभीर गवेषणाकार तथा प्रौढ आलोचक ने इस विषय पर व्यापक दृष्टि से विवेचन कर सभी प्राचीन एवं नवीन मतों की विशद समीक्षा की है तथा अन्त में आयुर्वेद के सिद्धान्त–पक्ष का भी स्पष्टीकरण युक्तिपूर्वक किया है। पुस्तक आयुर्वेद के विद्वानों, आलोचकों, अध्यापकों एवं छात्रों के लिए अतीव उपयोगी है। मूल्य १–००

यू० पी० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड द्वारा पाठ्य-स्वीकृत—

द्रव्यगुण-विज्ञान

(१-३ भाग)

आचार्य प्रियव्रत शर्मा, एम. ए., ए. एम. एस.

प्रिन्सिपल, गवर्नमेंट आयुर्वेदिक कॉलेज, पटना

द्रव्यगुण शास्त्र के विशेषज्ञ विद्वान् लेखक ने अपने दीर्घकालीन अध्यापन के आधार पर इस ग्रन्थ में द्रव्यगुण के मौलिक सिद्धान्तों का विस्तृत, वैज्ञानिक एवं समन्वयात्मक अध्ययन उपस्थित किया है। इसके प्रथम भाग में चार खण्ड हैं—द्रव्यखण्ड, गुणखण्ड, कर्मखण्ड और कल्पखण्ड। द्रव्यखण्ड में द्रव्य का स्वरूप तथा उसका रचनात्मक एवं कर्मात्मक वर्गीकरण-प्राचीन एवं नवीन दोनों दृष्टिकोणों से दिया गया है। गुणखण्ड में गुण, रस, विपाक, वीर्य तथा प्रभाव का विशद एवं तुलनात्मक वर्णन किया गया है। कर्मखण्ड में प्राचीन एवं आधुनिक विज्ञान में वर्णित द्रव्यों के लगभग १५० कर्मों का समन्वयात्मक विवेचन तथा वैज्ञानिक व्याख्या भी की गई है। कल्पखण्ड में भैषज्य कल्पना के सैद्धान्तिक पक्ष का स्पष्टीकरण है।

द्वितीय भाग में औद्भिद और जांगम तथा तृतीय भाग में पार्थिव द्रव्यों का समावेश किया गया है। प्रत्येक द्रव्य का परिचय (शास्त्रीय गण, वानस्पतिक कुल, वैज्ञानिक नाम, विभिन्न प्रादेशिक नाम, स्वरूप, जातियाँ, उत्पत्ति स्थान, रासायनिक सङ्घटन), गुण (गुण-रस-विपाक-वीर्य-प्रभाव), कर्म (शरीर-दोषों एवं शरीर के विभिन्न संस्थानों पर होने वाले परिवर्तनों की सयुक्तिक व्याख्या) तथा प्रयोग (गुण-कर्म के आधार पर विभिन्न विकारों में उसके प्रयोग की विधि, प्रयोज्य अंग, मात्रा, विशिष्ट योग, अहित प्रभाव, निवारण एवं प्रतिनिधि) विस्तार के साथ वर्णित हैं। यथास्थल सर्वत्र आधुनिक एवं यूनानी विचारों का भी अन्तर्भाव किया गया है।

संक्षेप में इस प्रकार द्रव्यों के गुण-कर्मात्मक विवेचन की दृष्टि से यह ग्रन्थ अपने ढंग का सर्वश्रेष्ठ है। छात्रों और अध्यापकों को द्रव्यगुण और रसशास्त्र के [illegible]-पाठन में इससे पूर्ण सहायता प्राप्त होगी। शैली बिल्कुल आधुनिक, कागज छपाई, गेटअप आदि सभी सुन्दर। प्रथम भाग ५-५० द्वि० तृ० भाग १२-५०

१-३ भाग दो जिल्दों में संपूर्ण ग्रन्थ मूल्य १८-००

यू॰ पी॰ इण्डियन मेडिसिन वोर्ड द्वारा पाठ्य-स्वीकृत—

द्रव्य-गुण-मंजूषा

आचार्य शिवदत्त शुक्ल एम. ए., ए. एम. एस.

अध्यापक, आयुर्वेदिक कालेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

आचार्य शुक्लजी द्रव्यगुण के माने हुए विद्वान् हैं। विगत १५ वर्षों से इस विषय के अध्यापन का आपको अनुभव है। अनेक प्रान्तों में वहुत बार अनुसंधानात्मक भ्रमण कर अर्जित ज्ञान एवं वनौषधि-निधि हिमांचल के बीहड़ प्रदेशों से द्रव्यों का शोधन कर आपने अपने विशिष्ट ज्ञान से इस जटिल विषय का जितना स्पष्ट विवेचन किया है, यह बिना इस ग्रन्थ के अध्ययन के नहीं जाना जा सकता। प्रत्येक द्रव्य के अनेक भाषाओं में प्रचलित शुद्धनाम, विशिष्टवर्णन, उत्पत्तिस्थल तथा परिचय का विस्तार से वर्णन किया गया है। आवश्यक स्थलों पर द्रव्य शोधन की उपयोगी विधियों का भी वर्णन है। आयुर्वेदीय वनस्पतियों में आधुनिक विज्ञानवेत्ताओं ने जिन सक्रिय तत्त्वों का अनुसन्धान किया है, उन सक्रिय तत्त्वों का भी वर्णन कर द्रव्यगुण विज्ञान को पूर्ण वैज्ञानिक रूप दिया गया है। अन्त में द्रव्यों के शास्त्रोक्त गुणकर्मों का वर्णन कर पाश्चात्य क्रम पर औषध के सांस्थानिक प्रभाव का वर्णन है। वनौषधि के विशिष्ट आमयिक प्रयोग तथा उसके प्रधान शास्त्रीय योगों का उल्लेख कर प्रयोज्य मात्रा भी लिखी गई है। वानस्पतिक द्रव्यों का रचनाप्रधान वर्गीकरण किया गया है, इससे स्वरूप परिचय तथा गुण-धर्म वर्णन का स्मरण विद्यार्थियों को सुविधापूर्वक हो सकेगा। द्रव्यगुण सम्बन्धी इतनी विशाल तथा ठोस सामग्री किसी दूसरे ग्रन्थ में नहीं है। यह आयुर्वेद जगत को विद्वान् लेखक की अप्रतिम भेंट है। पुस्तक आयुर्वेद महाविद्यालयों के विद्यार्थियों तथा चिकित्सकों के लिए सामान्य रूप से उपयोगी है। छात्रों के अत्यधिक आग्रह पर इसका प्रथम भाग प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रथम भाग मूल्य २-००

नाडीपरीक्षा

भिषग्रत्न श्री ब्रह्मशङ्कर मिश्र कृत वैद्यप्रिया हिन्दी टीका सहित

इस छोटे से ग्रन्थ में ऐसे ऐसे नाड़ी लक्षणों का वर्णन आया है जो अन्य ग्रन्थों में नहीं मिलते। मृत्यु के समय मनुष्य की नाड़ी के लक्षणों का भी वर्णन सुन्दररूप में बड़े विस्तार से किया गया है। द्वितीय संस्करण मूल्य ०-३५

प्रसूतिविज्ञान (सचित्र)

(A Text Book of Midwifery)

आयुर्वेदबृहस्पति डॉ० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस.
चिकित्सक तथा अध्यापक आयुर्वेद कालेज, हिन्दूविश्वविद्यालय काशी।

Obstetric पर लिखी हुई प्रसूतिविज्ञान नामक यह पुस्तक विद्वान् लेखक अनेक वर्षों के परिश्रम के पश्चात् भारतवर्ष के विभिन्न आयुर्वेद संस्थानों प्रसूतिविषय के 'प्रास्पेक्टस' और 'सिलेवस' के आधार पर लिखी गई है। आजत इस प्रकार की सर्वाङ्गपूर्ण प्रसूतितन्त्र की कोई भी अन्य पुस्तक राष्ट्र भाषा में उपल नहीं थी जिसमें एक स्थान पर विभिन्न अध्यायों के क्रम से अद्यावधि प्राच्य पाश्चात्य मतों का समन्वयात्मक संग्रह हो। आर्थिक दृष्टि से भी देखा जाय तो एक मा इस पुस्तक को रखते हुए अंग्रेजी भाषा में लिखी अनेक मूल्यवान् पुस्तकों के संग्रह आवश्यकता नहीं पड़ेगी; क्योंकि यह पुस्तक बहुत से प्रचलित अंग्रेजी टेक्स्ट बु के आधार पर ही लिखी गई है। इन विभिन्न पुस्तकों से सहायता लेते हुए जि पुस्तकों में जिन-जिन अध्यायों का वर्णन अधिक प्रांजल एवं विशद प्रतीत हुआ उसी को लेखक ने ग्रहण किया है जिससे यह रचना विद्यार्थियों के विष ज्ञान तथा परीक्षार्थियों की सफलता की कुञ्जी बन गई है। पुस्तक की सब बड़ी विशेषता विषय की तुलनात्मक विवेचना है। छात्रों के इस प्रकार के विवेक लिये आयुर्वेद के विभिन्न ग्रन्थरत्नों के आधार पर स्थान-स्थान से प्रसूति वि यक सूत्रों का संग्रह करते हुए नोट बनाकर काम चलाना पड़ता था। इस प्रकाशन से उनकी सारी परेशानियाँ अब दूर हो गई हैं, उनको प्रत्येक अध्याय अन्त में आधुनिक वर्णनों के साथ ही साथ हिन्दी अनुवाद के सहित उन सूत्रों का संकलन प्राप्त हो जायगा। इससे उन्हें विषय के अभ्यास में भी सरल का अनुभव होगा। वैज्ञानिक पुस्तकों की तरह विषय को अधिक स्पष्ट करने के लि लगभग २०० से ऊपर चित्र भी स्थान-स्थान पर लगा दिये गये हैं। इ अच्छा स्पष्टीकरण हुआ है। अब एक मात्र इसी पुस्तक के पढ़ने से एत विषयक सम्पूर्ण प्राचीन तथा नवीन ज्ञान का सम्पादन किया जा सकता है। प्रसू शास्त्र के विषयों से सम्बद्ध कई अन्य विषयों का जैसे 'यूजेनिक्स' 'सेक्सुवोला 'एन्थ्रोपोलाजी' का भी प्रसंग यत्र तत्र आकर विषय को अधिक सरस बना देता **द्वितीय परिष्कृत संस्करण** बड़ी सजधज के साथ छपा है। मूल्य १०-

इ. मे. बोर्ड, आयुर्वेद विद्यापीठ एवं हि. सा. सम्मेलन द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तक-

प्रारंभिक उद्भिद् (वनस्पति) शास्त्र

वनस्पति विशेषज्ञ प्रोफेसर बलवन्त सिंह एम० एस-सी०
आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दूविश्वविद्यालय, काशी।

उद्भिद्-शास्त्र जैसे प्रकृति विज्ञान के सहज प्रेमी सामान्यजनों के लिये भी यह एक अपूर्व संग्रहणीय ग्रन्थ है। इस पुस्तक के द्वारा हम अपनी नित्य की व्यवहारोपयोगी पुष्प, फल, एवं धान्यवर्गीय वनस्पतियों की रचना, शारीरिक व्यापार एवं विकास के मूलतत्त्वों का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। विषयों को प्रस्तुत करते हुए प्रायः लोक और शास्त्र प्रचलित प्रसिद्ध वनस्पतिओं के ही उदाहरण दिये गये हैं जिससे प्रत्येक विषय का क्रियात्मक अध्ययन बहुत सरल और बुद्धिगम्य हो गया है। आयुर्वेद के विद्यार्थियों और वैद्यों आदि के लिये उद्भिद्-शास्त्र का जितना ज्ञान होना चाहिये उतना इस पुस्तक के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। शुद्ध वैज्ञानिक विषयों के अतिरिक्त वर्गीकरण के अध्याय में वनस्पतियों के लगभग उन सभी वर्गों का वर्णन किया गया है जिनमें चिकित्सोपयोगी वनस्पतियों का प्राधान्य है। प्रत्येक वर्ग की इन वनस्पतियों की सूची भी साथ २ दे दी गई है जिससे वर्ग परिचय के साथ २ इनका भी परिचय हो जाता है। वनस्पतियों के नामों एवं पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी एवं वैज्ञानिक पर्यायों की अनुक्रमणिकायें पुस्तक की संज्ञा सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर कर देती हैं। मूल्य ४-५०

+ नीम के उपयोग

इस पुस्तक में नीम के प्रत्येक अङ्ग का किस किस अवसर पर कैसे कैसे व्यवहार करने से चिकित्सा में लाभ होता है, विस्तार से वर्णित है। मूल्य १-००

हि० सा० सम्मेलन, आयुर्वेद विद्यापीठ, इ० मे० बोर्ड द्वारा पाठ्य स्वीकृत—

परिभाषा-प्रबन्ध

आयुर्वेदबृहस्पति पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल राजवैद्य

अनेक आयुर्वेदिक परीक्षा संस्थाओं द्वारा पाठ्य-स्वीकृत परिभाषा सम्बन्धित शुक्ल जी की यह पुस्तक सर्वोपरि प्रकाशित हुई है। इसमें प्राच्य-पाश्चात्य दृष्टि से कोई भी परिभाषा के विषय छूटे नहीं हैं। पुस्तक में १६ प्रकरण रखे गए हैं। यह छात्रों तथा वैद्य समुदाय के लिए समान दृष्टि से उपयोगी है। मूल्य २-५०

इण्डियन मे. बोर्ड यू० पी०, हि. सा. सम्मेलन द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तक-

प्रारम्भिक-भौतिकी

निहालकरण सेठी

हाई स्कूल, इण्डियन मेडिसिन बोर्ड एवं आयुर्वेद विद्यालयों के विद्यार्थियों लिए यही पुस्तक पाठ्यरूप से स्वीकृत है। अन्य पाठक भी इसको पढ़कर भौतिक विज्ञा की बातों को बिना कठिनाई के समझ सकते हैं। पुस्तक के पांच परिच्छेदों वैज्ञानिक नाप तौल, द्रव्य के सामान्य गुण, गति, जड़त्व और गुरुत्व, वेग संयोज काम, सामर्थ्य एवं शक्ति, तापक्रम, प्रकाश, शब्द, चुम्बक, विद्युत, एक्सकि आदि विषयों का भौतिक दृष्टिकोण से वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। मूल्य ५-५

परिवर्द्धित और परिष्कृत तृतीय संस्करण

प्रारम्भिक-रसायन

प्रो० श्री फूलदेवसहाय वर्मा, प्रिंसिपल कालेज आफ टेक्नोलोजी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।

इसके लेखक प्रोफेसर वर्मा हिन्दू विश्वविद्यालय के सबसे अधिक अनुभ विज्ञानवेत्ता हैं। आपकी विद्वत्ता की विज्ञान जगत में अमिट छाप है।

पुस्तक २ भागों में पूर्ण हुई है। इस परिष्कृत संस्करण में कई महत्त्व अध्याय जोड़े गये हैं। प्रांगार रसायन (आर्गेनिक केमिष्ट्री) का जो भाग बहु सूक्ष्म रूप में था उसके अब बीस अध्याय और बढ़ाये गये हैं।

स्थान स्थान पर आयुर्वेदीय झलक इस नूतन संस्करण की एक और विशेष है। कई नये चित्र भी जोड़े गये हैं।

सारांश यह कि पुस्तक के पूर्व तथा इस संस्करण में जमीन आसमान अन्तर है। यह अब न केवल आयुर्वेद के विद्यालयों में, अपितु स्कूलों और काले में भी पाठ्यपुस्तक के रूप में विराजमान है। पुस्तक संग्रहणीय है। तृतीं संस्करण की पृष्ठसंख्या ४६४, चित्रसंख्या ६२, उत्तम कागज, सुन्दर छपाई त आकर्षक टिकाऊ पक्की जिल्द। मूल्य ४-५

प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा

कविराज ब्रह्मानन्द चन्द्रवंशीं राजवैद्य

इसमें नवीन वैज्ञानिक ढंग पर आयुर्वेदिक, एलोपैथिक एवं यूनानी मतानुसार रोग के निदान, लक्षण तथा चिकित्सा का सुन्दर वर्णन किया गया है। मूल्य ०-३५

यू० पी० गवर्नमेंट के कृषिविभाग द्वारा स्वीकृत—

फलसंरक्षणविज्ञान (FRUIT PRESERVATION)

डा० युगुलकिशोर गुप्त आयुर्वेदाचार्य

उत्तर प्रदेशीय सरकार की योजनानुसार उक्त पुस्तक की रचना की गई है। विषयों का विवेचन अति उत्तम मौलिक रूप से किया गया है। विद्यार्थियों के लिए इस विषय की यह सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। फलों की चटनी, अचार, मुरब्बा आदि बनाने तथा संरक्षण का विधान भी बड़ी सरलता से समझाया गया है। साधारण जनता भी इस पुस्तक से बहुत लाभ उठा सकती है। मूल्य १-००

बस्तिशलाकाप्रवेश (एनिमा और कैथेटर)

आयुर्वेदाचार्य **राजकुमार द्विवेदी** डी. आई. एम. एस.

द्विवेदी जी ने इस पुस्तिका में बस्तियों तथा शलाकाओं के प्रयोग पर व्यावहारिकज्ञान का बड़ा ही सुन्दर प्रकाशन किया है। जहाँ पुस्तिका छात्रों के लिए लाभदायक है वहाँ सहायक वैद्यों तथा उन वैद्यों के लिए जिन्हें इस उपयोगी विषय के अभ्यास का अवसर नहीं मिला, बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी। मूल्य ०-४०

भारतीय-रसपद्धति

कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार

भारतीय रस शास्त्र में धातुओं आदि का शोधन, जारण-मारण एक महत्त्व का विषय है। इस छोटी सी पुस्तक में यह विषय बहुत ही सरलता के साथ समझाया गया है-इसके सिवाय ओज, भावना, पुट, आदि सन्दिग्ध विषय पूर्णतः स्पष्ट कर दिये हैं। रस शास्त्र का इतना महान् विषय इस छोटी सी पुस्तक में सम्पूर्ण रूप से समा दिया गया है-इसी को देखकर—प्राणाचार्य श्री **गोवर्धन शर्मा छांगाणी जी ने** लिखा है कि—'अधिक तो क्या इस छोटी सी पुस्तिका रूपी गागर में रस शास्त्र सरीखे महान् सागर को भर दिया है। हमारी दृष्टि में रस शास्त्र के लिये प्राचीन ढंग का ऐसा सुन्दर और स्वल्पाकार ग्रन्थ यह पहला ही है'। १-५०

बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन यू० पी० की प्राणाचार्य परीक्षा

में आलोच्य व सहायक स्वीकृत–

भावप्रकाशः

(शोधपूर्ण नवीन संस्करण)

नवीन वैज्ञानिक 'विद्योतिनी' हिन्दीटीका सहित ।

इस संस्करण का उद्देश्य यह है कि केवल इसी एक ग्रन्थ का अध्ययन कर चिकित्सक को चिकित्सा विषयक सभी जानकारी पूर्ण रूप में हो जाय तथा प्राचीन सैद्धान्तिक ज्ञान भी पूर्णरूप से हो जाय । इसमें **गर्भप्रकरण** के ऊपर **डाक्टरी** तथा **आयुर्वेदिक** मतानुसार समन्वयात्मक **परिशिष्ट** तथा **निघण्टुप्रकरण** में सभी वनौषधियों का विस्तृत परिचय, नवीन वैज्ञानिकों द्वारा आविष्कृत गुण-धर्म एवं प्रयोगों का विस्तृत वर्णन तथा उपलब्ध वनस्पतियों की असली-नकली की पहचान, सभी भाषाओं में उनके नाम आदि सभी ज्ञातव्य विषयों का विशद विवरण दिया गया है । **चिकित्साप्रकरण** में प्रत्येक रोग की **डाक्टरी** मतानुसार निदानादि के साथ चिकित्सा तथा आयुर्वेदिक और डाक्टरी मतों की समन्वयात्मक **टिप्पणी** भी दी गई है । इस तरह से इस एक ही ग्रन्थ के अवलोकन से आयुर्वेद के साथ साथ डाक्टरी मतों का भी पर्याप्त ज्ञान प्राप्त हो जायगा ।

इस संस्करण की विशेषता

इस संस्करण में प्रायः सभी वनौषधि द्रव्यों का विस्तृत परिचय, नवीन अनुसन्धानों द्वारा रासायनिक विश्लेषण, गुण-धर्म, आमयिक प्रयोग, अनेक देशी-विदेशी भाषाओं में प्रसिद्ध नाम, उत्पत्तिस्थान तथा उनकी आकृति आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है । वनौषधियों का पूर्ण जीवनवृत्त, बीज से लेकर मूल, पत्र, काण्ड, पुष्प, फल, निर्यास आदि का स्पष्ट वर्णन वस्तु को प्रत्यक्ष-सा कर देता है, जिससे पाठक को किसी दूसरी पुस्तक की सहायता की अपेक्षा नहीं रह जाती । सभी सामान्य चिकित्सकों, अध्यापकों तथा जिज्ञासु छात्रों के लिए यह परिवर्द्धित संस्करण बहुत ही उपादेय है ।

पूर्वार्द्ध १२–०० मध्यमोत्तर खण्ड १५–०० सम्पूर्ण ग्रन्थ का मूल्य २६–००

भावप्रकाशः । श्रीमद्भावमिश्रकृत: । ग्रन्थकर्ता रचित विषमस्थल टिप्पणी सहित पूर्वार्द्ध ३–०० मध्यमोत्तरखण्ड ७–००

संपूर्ण १०–००

भावप्रकाशनिघण्टुः

विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या सहित

सम्पादक—डा० गङ्गासहाय पाण्डेय ए० एम० एस०

अध्यापक एवं चिकित्सक—आयुर्वेदिक कालेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

आयुर्वेद जगत् के अत्यन्त आग्रह पर यह नवीन संस्करण प्रकाशित किया गया है । अब तक के निघण्टुओं में, अधिकांश में मिथ्या धारणाओं एवं अशुद्ध नामों का संग्रह ही मुख्य रूप से था । प्रस्तुत निघण्टु में अद्यावधि प्रकाशित सभी सामग्री का भली प्रकार अध्ययन कर उपलब्ध वनौषधियों का प्रत्यक्ष परिचय करके, प्रचलित भ्रान्त धारणाओं का निराकरण करते हुए विस्तृत परिचय दिया गया है। विशालकाय यह नवीन संस्करण—एक प्रकार से निघण्टु विषयक एक स्वतन्त्र मौलिक ग्रन्थ ही बन गया है। इसमें प्रत्येक वनौषधि की सभी उपजातियों एवं विभिन्न प्रान्तों में प्रचलित तत्सम द्रव्यों का विस्तृत परिचय, नवीन अनुसंधानों द्वारा आविष्कृत रासायनिक विश्लेषण, गुण धर्म एवं आमयिक प्रयोगों का व्यापक वर्णन किया गया है । ओषधियों के अनेक देशी एवं विदेशी भाषाओं में प्रसिद्ध नाम, उत्पत्तिस्थान तथा उनकी आकृति आदि का विस्तार से वर्णन है । वनौषधि का पूर्ण जीवनवृत्त, बीज से लेकर मूल, पत्र, काण्ड, पुष्प, फल, निर्यास आदि का स्पष्ट वर्णन वस्तु को प्रत्यक्ष-सा कर देता है। किस अङ्ग का औषध रूप में प्रयोग है और उसका संचय कैसे किया जाता है तथा विभिन्न वनस्पतियों के निर्यास निकालने की प्रणाली और उनका पूरा इतिवृत्त वर्णन इस संस्करण की विशेषता है। ओषधियों के गुण-धर्म पर व्यापक रूप से प्रकाश डालने वाली इस कोटि की कोई दूसरी पुस्तक नहीं है ।

आयुर्वेदिक कालेज के छात्रों को प्रायः निघण्टुभाग की ही विशेष आवश्यकता पड़ती है, इस दृष्टि से कालेजों के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर इस निघण्टुभाग की छात्रोपयोगी नवीन व्याख्या प्रस्तुत की गई है । यह संस्करण छात्रों, अध्यापकों तथा वनस्पतिविशेषज्ञों के लिए समान रूप से उपयोगी है। मूल्य ९-००

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

भैषज्यरत्नावली

(शोधपूर्ण द्वितीय संस्करण)

'विद्योतिनी' हिन्दीव्याख्या वैज्ञानिक 'विमर्श' परिशिष्ट सहित

टीकाकार—आयुर्वेदाचार्य कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री ए. एम. एस.

सम्पादक—आयुर्वेदबृहस्पति श्री राजेश्वरदत्त शास्त्री चरकाचार्य

इस संस्करण के आलोक में पूर्व प्रकाशित सभी टीकायें नगण्यसी हो गयी हैं। इसकी सविमर्श व्याख्या में विशिष्ट रोगों के लक्षण, पाश्चात्यरीत्या मूत्र-परीक्षण, रसोपरस धातुओं का शोधन-मारण, अभाव में लिये जानेवाले प्रतिनिधि द्रव्य तथा चरक, सुश्रुत, वाग्भटादि ग्रन्थ लिखित गण द्रव्यों का भी समावेश आधुनिक समय-कालके अनुसार नवीनवैज्ञानिक ढंगसे औषध-निर्माण, प्रयोग, मात्रा आदिका भी उल्लेख किया गया है। इस संस्करण में प्रत्येक रोग की चिकित्सा के अन्त में पथ्यापथ्य का उल्लेख भी विस्तारपूर्वक कर दिया गया है जो अन्य किसी भी संस्करण में नहीं है। इसीलिए आचार्य श्री यादवजी त्रिकमजी महाराज, कविराज प्रताप सिंह जी रसायनाचार्य, कविराज सत्यनारायणजी शास्त्री चरकाचार्य, कविराज हरिरञ्जनजी मजुमदार, प्राणाचार्य श्रीगोवर्धन शर्माजी छांगाणी प्रभृति आयुर्वेद जगत के महारथियों ने इस सविमर्श व्याख्या की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है।

द्वितीय संस्करण की विशेषता

इस ग्रन्थ के प्रमुख सम्पादक आयुर्वेदबृहस्पति पं० राजेश्वरदत्तजी शास्त्री ने विगत आठ वर्षों से प्रथम संस्करण का अनुशीलन करके अपने अध्यापनानुभव तथा चिकित्सानुभव के अनुरूप इस द्वितीय संस्करण की सविमर्श व्याख्या में आमूल संशोधन-परिवर्धन कर दिया है। शास्त्रीजी काशी के प्रख्यात सिद्ध चिकित्सक हैं। इस संस्करण के परिशिष्ट में उन्होंने 'अनुभूतयोगप्रकरण' नामक एक मौलिक ग्रन्थ ही जोड़ दिया है, जो भैषज्यरत्नावली का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन गया है। अनुभूतयोगप्रकरण में जितने योग दिये गये हैं वे शास्त्रीजी के स्वतः अनुभूत-सिद्धयोग हैं। चिकित्सकों को सूत्ररूप में योगों की प्रक्रिया अभ्यस्त रहे इस उद्देश्य से योगों का उल्लेख पद्यबद्ध करके उनकी हिन्दी व्याख्या कर दी गयी है। नवीन, प्राचीन तथा पाश्चात्यमतानुयायी चिकित्सकों के लिए भी यह 'अनुभूत-योगप्रकरण' संग्रहणीय, मननीय और पठनीय है।

छपाई, कागज, पक्की टिकाऊ जिल्द युक्त लगभग १००० पृष्ठ के इस विशाल ग्रन्थका अत्यल्प नाम मात्र मूल्य १६–००

भावप्रकाशः—ज्वराधिकारः

नवीन वैज्ञानिक 'विद्योतिनी'–हिन्दीटीका परिशिष्ट सहित

इसमें क्वाथादिकों के वनाने की विधि, मात्रा आदि का उल्लेख तथा स्थल २ पर आवश्यक टिप्पणियों का भी समावेश किया गया है। ग्रन्थोक्त ज्वर पर आधुनिक डाक्टरी मतानुसार निदान का सुन्दर रीति से विवेचन तथा प्रचलित अन्य ज्वरों का डाक्टरी मतानुसार विशद विवरण भी दिया गया है। छपाई, कागज, जिल्द आदि सभी सुन्दर है। मूल्य ४–००

+ मदनपालनिघण्टुः । वैद्य त्र्यम्बकशास्त्रि कृत टिप्पणी सहितः १–००

+ मधु के उपयोग

अनेक प्रकार के मधु, उनकी पहचान, गुण एवं विविध रोगों में उनकी प्रयोग विधि आदि का विस्तार से इसमें वर्णन है। मूल्य १–००

इ. मेडिसिन बोर्ड यू० पी० तथा हि० सा० सम्मेलन द्वारा पाठ्य स्वीकृत

मर्म-विज्ञान—सचित्र

आयुर्वेदबृहस्पति श्री रामरक्षपाठक आयुर्वेदाचार्य

मर्मों का वर्णन आयुर्वेद की उन विशेषताओं में है जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं होतीं। आयुर्वेद संहिताओं में १०७ मर्मों के स्वरूप, स्थान, रचना तथा अभिघातजन्य परिणामों एवं प्रतिकार का वैज्ञानिक वर्णन सूत्ररूपेण निर्दिष्ट है। लेखक ने उनकी सचित्र विस्तृत व्याख्या कर आयुर्वेद जगत का बड़ा उपकार किया है। मूल्य ३–५०

माधवनिदानम् । वैद्य श्री पण्डित उमेशानन्द शास्त्री रचित

'सुधालहरी' संस्कृत टीका सहित गुटका संस्करण प्रेस में

माधवनिदानम्

'मधुकोष' संस्कृत व्याख्या, मनोरमा हिन्दी अनुवाद सहित

'मधुकोश' व्याख्या सहित माधवनिदान का कोई भी संस्करण दीर्घ काल से प्राप्त न होने से जिज्ञासुजनों के हितार्थ यह संस्करण पाद–टिप्पणी से युक्त 'मधुकोष' व्याख्या एवं 'मनोरमा' नामक हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया गया है। छपाई, कागज आदि बहुत सुन्दर है। मूल्य ६–००

विविध विशेषताओं से युक्त ! द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण !! प्रकाशित हो गया !!!

माधवनिदानम्

'मधुकोष' संस्कृत तथा 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका, वैज्ञानिक विमर्श सहित

टीकाकारः—आयुर्वेदाचार्य श्री सुदर्शन शास्त्री, ए० एम० एस०

सम्पादकः—आयुर्वेदाचार्य वैद्य श्री यदुनन्दन उपाध्याय, बी. ए., ए. एम. एस.

चिकित्सक एवं अध्यापक, आयुर्वेदिक कालेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

प्रस्तुत संस्करण में माधवनिदान का मूल पाठ, विशद भाषार्थ, संस्कृत 'मधुकोष' टीका के साथ हिन्दी में मधुकोष की हिन्दी व्याख्या तथा प्राचीन एवं अर्वाचीन रीति से वैज्ञानिक एवं तुलनात्मक विवेचन सहित विशद विमर्श, विभिन्न पाठान्तर, मूल में आये हुए श्लोकों का ग्रन्थादि निर्देश एवं परिशिष्ट में नवीन रोगों का विवरण श्लोक बद्ध भाषार्थ युक्त दिया गया है। अपने ढंग का यह चिकित्सकों (डाक्टरों, वैद्यों), अध्यापकों एवं छात्रों के लिए परमोत्तम संस्करण है। आधुनिक युग के अनुसार प्राच्य और पाश्चात्य चिकित्सा पद्धतियों में एकरूपता स्थापित करने के प्रयास में यह संस्करण अद्भुत रूप से सहायक प्रमाणित हुआ है। प्रथम संस्करण अल्प समय में ही समाप्त हो गया। यही इसकी उपयोगिता का ज्वलन्त प्रमाण है। इस द्वितीय संस्करण में संपादक ने आवश्यक संशोधन, परिवर्द्धन करके इसे और उपयोगी बना दिया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ बड़े साईज के लगभग एक हजार पृष्ठों में समाप्त हुआ है। छपाई, कागज, टिकाऊ पक्की जिल्द आदि सभी बहुत सुन्दर है।

पूर्वार्द्ध ७–५० उत्तरार्द्ध ७–५० सम्पूर्ण ग्रन्थ का मूल्य १४–००

माधवनिदानम्

सर्वाङ्गसुन्दरी हिन्दी टीका सहित।

टीकाकार—आयुर्वेदाचार्य लालचन्द्र शास्त्री। यों तो इस पुस्तक के अनेक संस्करण अनेक स्थान से छपे हैं किन्तु ग्रन्थ के आशय का यथार्थ ज्ञान करानेवाले विस्तृत हिंदी अनुवाद सहित इस संस्करण के समान दूसरा कोई भी संस्करण आज तक नहीं छपा। यह तृतीय संस्करण उत्तम ग्लेज चिकने कागज, नवीन चमकते टाइप में बहुत सुन्दर छपा है। सजिल्द संस्करण मूल्य ४–५०

नव्यरोगनिदानम् (माधवनिदान-परिशिष्टम्)

इस ग्रन्थ में माधवनिदानादि ग्रन्थों में उल्लिखित रोगों के अतिरिक्त आज तक के संपूर्ण नवीन रोगों के निदान–सम्प्राप्ति–पूर्वरूप–साध्यासाध्य लक्षण आदि विषयों का भली प्रकार वर्णन किया गया है। द्वितीयावृत्ति मूल्य ०–७५

नाडीविज्ञानम्

आयुर्वेदाचार्य—प्रयागदत्तजोषीकृत विबोधिनी विस्तृत हिन्दी टीका सहित

इसमें नाडी की सूक्ष्म तथा स्थूल भिन्न भिन्न गतियों का बहुत विचार-पूर्वक दिग्दर्शन कराया गया है। यहाँ तक कि भिन्न भिन्न कार्य करने पर तथा भिन्न भिन्न पदार्थ खाने पर एवं मृत्यु काल सम्बन्धी नाडी की गति में जो अन्तर होता है भली प्रकार दर्शाया गया है। तृतीय संस्करण मूल्य ०–३५

यकृत् के रोग और उनकी चिकित्सा

[A Manual of the Diseases of the Liver & Gall bladder]

श्री सभाकान्त झा वैद्य शास्त्री

परिष्कर्ता—आयुर्वेदाचार्य श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस.

पुस्तक में यकृत्, उसकी रचना, सूक्ष्म रचना, क्रिया, उसके विकार, विकारों के निदान, पूर्वरूप, सम्प्राप्ति, चिकित्सा, पित्ताशय और उसके विकारों का वर्णन सरल सुबोध भाषा में वैज्ञानिक प्रणाली से किया गया है। अन्त में अनेक उपादेय सिद्ध योगों का भी समावेश है। वैद्य, डाक्टर, छात्र सभी के लिए उपयोगी है मूल्य २–००

योग-चिकित्सा

(INDICATION OF DRUGS)

कविराज, अत्रिदेव गुप्त विद्यालङ्कार

सुपरिंटेंडेंट, आयुर्वेदिक फार्मेसी, काशी हिन्दूविश्वविद्यालय

इसमें बंगाल की परम्परा से प्राप्त अनुभूत प्रत्यक्ष फलप्रद योगों का तथा बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के पञ्चम वर्ष में जो रस, अवलेह, तैल, घृत, गुटिका आदि का ज्ञान कराने के लिए निर्धारित हैं, उन सब योगों का समावेश है। इसीलिए उत्तर प्रदेश के डिप्टी डायरेक्टर आयुर्वेद, महोदय ने लिखा है कि यह पुस्तक विद्यार्थी, प्रैक्टिशनरों तथा राजकीय चिकित्सक सबके लिए अत्यावश्यक तथा उपयोगी है। चिकित्सा में यश, धन तथा सफलता प्राप्त करने के लिए इस पुस्तक की एक प्रति पास में रहना अत्यावश्यक है। पुस्तक उत्तम कागज, नवीन टाईप में बहुत सुन्दर छपी है। मूल्य ३–५०

योगरत्नाकरः

मूल गुटकारूप, प्रत्येक श्लोक की पृथक् पृथक् पङ्क्ति एवं नवीन नवीन अवतरणों से युक्त सब संस्करणों से उत्तम शुद्ध तथा सस्ता संस्करण। मूल्य ६-००

योगरत्नाकरः

विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित

सम्पादक—भिषग्रत्न श्री पं० ब्रह्मशंकर शास्त्री

कायचिकित्सक के लिए जिन २ बातों का ज्ञान आवश्यक है उन विषयों की अक्षय निधि इस ग्रन्थ में भरी पड़ी है। इस ग्रन्थ में निदान, चिकित्सा, ओषधि निर्माण विधि, मूत्र, नाड़ी प्रभृति की परीक्षा आदि सम्पूर्ण आवश्यक विषयों का विस्तार से वर्णन है। इस ग्रन्थ की सम्पूर्ण ओषधियां अनुभूत तथा सद्यः फलप्रद हैं। प्रत्येक चिकित्सक को इसकी १-१ प्रति अपने पास अवश्य रखनी चाहिए।

नवीन चमकते टाईप, उत्तम कागज, पृष्ठसंख्या हजार से ऊपर।

मूल्य १८-०

आयुर्वेद विद्यापीठ, हि० सा० सम्मेलन आदि द्वारा पाठ्य स्वीकृत—

रसादि परिज्ञान

आयुर्वेदवृहस्पति पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल राजवैद्य

वैद्यसंसार के सुपरिचित मान्य श्री शुक्लजी ने इसकी रचना ऐसी कुशलता और योग्यता से की है कि यह ग्रन्थ आयुर्वेद जगत में एक समुज्ज्वल रत्न के रूप में मान्य होकर अत्यधिक ख्याति पा चुका है। शायद ही कोई ऐसा विद्वान् या छात्र होगा जिसने इस ग्रन्थरत्न का अवलोकन न किया हो। षट् रसों के सम्बन्ध में इतना विवेचन, इतने क्रम विकास और शास्त्र सम्मत विभाग करनेवाला हिन्दी ही क्या भारत की किसी भी भाषा में शुक्लजी का यही पहला ग्रन्थ है। इस बार शुक्लजी ने षट्रसों के ऊपर और भी विस्तृत विवेचन कर के ग्रन्थ का कलेवर ही बढ़ा दिया है तथा यत्र तत्र सत्तर वर्षों के अपने स्वानुभूत अनेकानेक विषयों से सुसज्जित और परिवर्द्धित कर ग्रन्थ का नाम भी 'रसपरिज्ञान' की जगह 'रसादिपरिज्ञान' कर दिया है जिससे यह ग्रन्थ और भी व्यापक और प्रद हो उठा है। मूल्य २-

रसचिकित्सा

राजवैद्य प्राणाचार्य—

डा० कविराज श्री प्रभाकर चट्टोपाध्याय

एम. ए., डी. एस. सी.

भू० प्रिंसिपल, आयुर्वेदिक कालेज, कलकत्ता

इस ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में प्राचीन रसग्रन्थों से अनुभूत पारद के १८ संस्कारों का तथा पारदभस्म, हरितालभस्म आदि के निर्माणविधि का वर्णन बहुत सुन्दर रीति से किया गया है तथा स्वर्णघटित मकरध्वज बनाने की ऐसी विधि बतलाई गई है जो आज तक किसी भी अन्य पुस्तक में प्रकाशित नहीं हुई थी और जिसे सर्वसाधारण वैद्य नहीं जान पाये थे। इसके अतिरिक्त अभ्रकादि खनिज धातुओं का आश्चर्यजनक शोधन, मारण तथा उनकी सेवन-विधियों का विस्तृत विवेचन किया गया है। इसके द्वितीय तथा तृतीय खण्ड में ज्वरादि रोगों की चिकित्सा दी गई है और टायफाइड, न्यूमोनिया, इन्फ्लुयेञ्जा, कालाजार, प्लेग, गैष्ट्रिक अलसर, गलस्टोन, हैजा, सुजाक, उपदंश (आतशक) आदि वर्त्तमान काल में प्रचलित दुःसाध्य रोगों की भी सुन्दर अनुभूत चिकित्साविधि लिखी गई है। इस पुस्तक द्वारा चिकित्सक जटिल से जटिल आधुनिक रोगों की भी चिकित्सा करने में सफल हो सकता है। जिन प्रयोगों और अनुभवों को वैद्य लोग छिपाते थे, प्राच्य-प्रतीच्य चिकित्साशास्त्र के अद्वितीय मनीषी चट्टोपाध्यायजी ने स्वानुभूत उन योगों तथा अनुभवों को भी चिकित्सकों की सुविधा के लिये इसमें उल्लिखित कर दिया है। इस पुस्तक में वस्तुतः रसचिकित्सा का महत्व विशेष रूप से प्रदर्शित किया गया है। इस पुस्तक के अध्ययन से रसचिकित्सा द्वारा असाध्य रोगों को भी साध्य करके साधारण वैद्य भी सफल रसचिकित्सक बनने का गौरव प्राप्त कर सकता है। अतः यह ग्रन्थ सभी रसचिकित्साभिलाषियों के लिये अत्यधिक उपयोगी होने से अवश्य संग्राह्य है।

कागज, टाईप, गेटअप आदि सभी आधुनिकतम। मूल्य ६—००

रसरत्नसमुच्चयः

सुन्दर टिप्पणी, नवीन २ अवतरणों तथा प्रत्येक श्लोकों की पृथक् २ पङ्क्ति से युक्त यह द्वितीयावृत्ति गुटका रूप में बहुत सुन्दर प्रकाशित हुई है।

मूल्य सुलभ संस्करण ३-०० राजसंस्करण ३-७

रसरत्नसमुच्चयः

(शोधपूर्ण तृतीय संस्करण)

नवीन वैज्ञानिक 'सुरत्नोज्ज्वला' हिन्दीटीका, परिशिष्ट सहित।

टीकाकार—कविराज डा० अम्बिकादत्तशास्त्री ए. एम. एस.

नवीन वैज्ञानिक 'सुरत्नोज्ज्वला' हिन्दी टीका तथा परिशिष्ट से विभूषित य तीसरा संस्करण प्रस्तुत है। यह आयुर्वेद के दुर्लभ ग्रन्थों में से एक है। इ ग्रन्थ के अनुसार धातूपधातु, रसोपरस, रत्न, विष आदि के शोधन-मारण जारणादि संस्कार कर उनका प्रयोग करने से चिकित्सा-क्षेत्र में अद्भुत चमत्का हो सकता है। प्राच्य-पाश्चात्योभय चिकित्सा सिद्धान्तों के मर्मज्ञ टीकाकार खनिजों की उत्पत्ति, स्वरूप, भेद, प्राप्ति आदि का विशद वर्णन तथा आधुनि वैज्ञानिक अनुसन्धानों से प्राचीन सिद्धान्तों का समन्वय करते हुए योग-निर्मा का व्याख्यान किया है। प्रत्येक रोग की चिकित्सा के अन्त में पथ्यापथ्य क सम्यग् विवेचन प्रस्तुत किया गया है। सन्दिग्ध स्थलों को उदाहरणादि से स किया गया है तथा 'विमर्श' नामक टिप्पणी में स्वसिद्धानुभवों का सुरम्य सन्निवे है। ग्रंथारंभ में आयुर्वेदिक यन्त्रों का सचित्र परिचय प्रस्तुत किया गया है।

चिकित्सा क्षेत्र से तनिक-सा भी संबंध रखने वाले के लिये यह ग्र महोपकारक है। इस तीसरे संस्करण को आवश्यक परिवर्तन-परिवर्द्धन भा संस्कारादि करके अधिक उपयोगी बना दिया गया है। मूल्य १०-०

रसाध्यायः। संस्कृत टीका सहितः

यह रसशास्त्र का अति प्राचीन, छोटा किन्तु बड़ा उपयोगी अद्भुत ग्रन्थ अधिकारों में पूर्ण हुआ है। इस ग्रन्थ में विषय तथा प्रक्रिया विभिन्न प्रकार वर्णित है जो आज के किसी भी ग्रन्थ में देखने को नहीं मिलती। मूल्य १-०

रसायनखण्डम् [रसरत्नाकर का चतुर्थ खण्ड]

यह रसायन खण्ड चिकित्सा के लिए बड़ा उपयुक्त है। इस खण्ड में रसायन तथा वाजीकरण इन दो तन्त्रों में बहुत से सुन्दर नूतन योगों का वर्णन किया गया है जिसको देखकर आप आश्चर्यचकित हो जायंगे। मूल्य ०-७५

रसार्णवं नाम रसतन्त्रम्

भागीरथी बृहद् टिप्पणी एवं विशेष विवरण सहित

यह ग्रन्थ रसायन ग्रन्थों में अति प्राचीन एवं सभी रस ग्रन्थों का आधारभूत है। इस ग्रन्थ में रसप्रक्रिया के लिये आवश्यक ज्ञान पूरा भरा हुआ है। शुद्धाशुद्ध धातुओं के लक्षण निर्दोष दिये हुए हैं। कीमिया का वर्णन तो इस ग्रन्थ में अथाह है। पारद के बन्धन-प्रयोग भी विशेषतः हैं। इस ग्रन्थ में यन्त्र, मूषादिकों का भली प्रकार वर्णन किया गया है। पारद के संस्कार तथा अभ्रक के लक्षण इनका खूब विस्तृत वर्णन है। रस, उपरस, महारस, रत्न, धातु उपधातुओं के शोधन-मारण का भी अच्छा वर्णन किया गया है। सत्त्वपातन की प्रक्रिया सुन्दर और विशद है। इस ग्रन्थ में मानपरिभाषा भी दी गई है। ग्रन्थ सर्वाङ्गसुन्दर बनाने के लिये पं० नीलकण्ठ देशपाण्डेजीने शास्त्रीय एवं क्लिष्ट शब्दों की विस्तृत टिप्पणी भी कर दी है। हर एक वनस्पतिय का 'इन्टर नेशनल नाम' तथा व्यावहारिक हिन्दी नाम भी दिया है। ग्रन्थ सर्वाङ्ग सुन्दर छपा है। मूल्य ३-००

रसेन्द्रसारसंग्रहः (सचित्र)

'बालबोधिनी—'भागीरथी' टिप्पणी सहित। समयानुकूल मात्रायें तथा यन्त्रों के चित्र वर्णन सहित। गुटका संस्करण। समाप्त

रसेन्द्रसारसंग्रहः (सचित्र)

नवीन वैज्ञानिक 'गूढार्थसन्दीपिका' संस्कृत व्याख्या सहित

टीकाकार—आयुर्वेदाचार्य डा० अम्बिकादत्तशास्त्री ए. एम. एस.

उक्त व्याख्या से यह ग्रन्थ आजकल के वैज्ञानिक ढङ्ग के अनुरूप हो गया है। रोगों एवं पथ्यापथ्य आदि का उल्लेख, ओषधियों के अनेक भाषाओं के नाम तथा अन्यान्य उपयोगी विषयों को देकर इस संस्करण को सर्वोत्तम रसचिकित्सोपयोगी बना दिया गया है। मूल्य ५-००

रसेन्द्रसारसंग्रहः (सचित्र)

नवीन वैज्ञानिक 'रसचन्द्रिका' भाषाटीका विमर्श परिशिष्ट सहित

संपादक—आयुर्वेदाचार्य श्री गिरजादयालु शुक्ल एम. ए., ए. एम. एस

यह रसचन्द्रिका टीका आज कल की सभी प्रकाशित हिन्दी टीकाओं से सुविस्तृत एवं सरल हुई है। सभी कठिन स्थलों पर टिप्पणियाँ दी गई हैं। मत-मतान्तरों का उल्लेख व सभी स्थलों पर आधुनिक काल के अनुसार उपयुक्त मात्रायें भी दी गई हैं। इस भांति विमर्श में प्रत्येक प्रयोगों की विशेषता का सुन्दर विवेचन भी किया गया है। **परिशिष्ट** में नवीन रोगों पर रसों का प्रयोग, मानपरिभाषा, मूषा तथा पुटप्रकरण, अनुपान विधि तथा औषध बनाने के नियम आदि भी देकर टीकाकार ने इस ग्रन्थ को एक सम्पूर्ण रसग्रन्थ ही बना दिया है। **यन्त्रों के चित्र** वर्णन सहित देकर स्पष्ट कर दिये गये हैं। तृतीय संस्करण मूल्य ६-

आचार्य त्रिवेदी की अमर रचना ! **ओषधि-संग्रहों में बेजोड़**

राजकीय ओषधियोगसंग्रह

आयुर्वेदाचार्य श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी, ए. एम. एस.

...जिसकी एक-एक प्रति हर सरकारी औषधालय में प्रत्येक वैद्य के पास सरकार ने पहुँचाई है।

...जिस पुस्तक ने आज तक आयुर्वेदीय फार्माकोपिया के अभाव की सफलतापूर्वक पूर्ति की है।

...जिसमें १०२ पृष्ठ की भूमिका में ओषधिनिर्माण के सब अनुभव सं कर दिये गये हैं।

...६१२ पृष्ठ के विशाल ग्रन्थ में हर रोग पर अनुभूत योग, रोगों में प्रयुक्त होने वाले शास्त्रीय योग, ग्रन्थनिर्देश, अधिकार, घटक, निर्माण, पर्याय, गुण, उपयोग, क्रिया, रोगनिर्देशादि शीर्षकों में अद्भुत विवेचन किया गया है।

...जिसके हाथ में यह पुस्तक गई है उसने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है।

थोड़ी प्रतियाँ शेष रहने के कारण तुरत आर्डर दीजिए अन्यथा अगले संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मूल्य रफ ७-०० ग्लेज ८

राष्ट्रियचिकित्सा सिद्धयोगसंग्रहः

आयुर्वेदाचार्य श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस.

भूमिका लेखक—प्रोफेसर श्री दत्तात्रय अनन्त कुलकर्णी एम. एस–सी.

डि० डायरेक्टर, मेडिकल एण्ड हेल्थ सर्विसेस, उत्तर प्रदेश

इस पुस्तक में आयुर्वेद के आठों अंगों के विभिन्न शतशोऽनुभूत सिद्ध कषाय, चूर्ण, तैल, घृत, अवलेह, गुटिका और रसयोगों के गुण, अनुपान और निर्माण का पूर्ण विवरण दिया गया है। इसके अतिरिक्त डाक्टरी के अनूठे मिक्श्चर्स, लोशन्स आदि तथा यूनानी के सफूफ, अर्क–खमीरा आदि भी दिये गये हैं ताकि प्रत्येक वैद्य या राष्ट्रिय चिकित्सक उससे लाभ उठा सके। मूल्य १–५०

रोगनामावलीकोष

वैद्यराज हकीम ठाकुर दलजीत सिंह, भिषग्रत्न

भूमिका लेखक—डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर

इस ग्रन्थ में सभी आयुर्वेदीय, यूनानी तथा डॉक्टरी रोगनामों का परिचयादि सहित समीचीन, आवश्यक, प्रामाणिक एवं सुन्दर संस्कृत–हिन्दी–उर्दू–अरबी–फारसी–अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं में अकारादि क्रमानुसार संग्रह किया गया है। अस्तु, स्पष्ट है कि यह ग्रन्थ चिकित्सानुरागी साधारण जनता, ग्रन्थलेखक, वैद्य, हकीम और डाक्टर सभी के लिये समानरूप से उपयोगी है। मूल्य ३–५०

वनौषधि-चन्द्रोदय (विशाल–निघण्टु ग्रन्थ)

(An Encyclopedia of Indian Botanys & Herbs)

इस विशाल ग्रन्थ में भारतवर्ष में पैदा होने वाली तमाम वनस्पतियों, खनिज द्रव्यों और विष-उपविषों के गुण-धर्मों का सर्वांगीण विवेचन किया गया है। प्रत्येक वस्तु के भिन्न २ भाषाओं में नाम, उत्पत्तिस्थान, आयुर्वेदिक, यूनानी और आधुनिक चिकित्साविज्ञान की दृष्टि से उनके गुण-धर्मों का वर्णन, शरीर के अन्दर भिन्न २ अङ्गों पर उसके पड़ने वाले रासायनिक प्रभाव, भिन्न २ रोगों पर उसके

उपयोग करने के तरीके, उस वस्तु के मेल से बनने वाले सिद्ध प्रयोगों का विवेचन बहुत ही सुन्दर तथा विस्तार से किया गया है जो आपको अन्यत्र किसी भी ग्रन्थ में मिलना असम्भव है।

इस विशाल निघण्टु ग्रन्थ की उपयोगिता स्वीकार करते हुए नई दिल्ली स्थित केन्द्रीय सरकार के तमाम जंगलों के प्रधान इन्सपेक्टर जेनरल ने समस्त भारतीय जंगलों के प्रधान प्रबन्धकों के लिए तथा पंजाब, हिमाचल प्रदेश और मध्यभारत की सरकारों ने अपने अपने प्रदेशों के समस्त विभागीय जंगलों के अफसरों के लिए एवं केन्द्रीय सरकार के मेडिकल विभाग के डाईरेक्टर ने कुल मेडिकल संस्थानों के लिए पुस्तक का अनुमोदन कर खरीद करने की जोरदार सिफारिश की है। इनसे भिन्न मध्यभारत तथा उत्तर प्रदेश की सरकारों के शिक्षा विभागों ने भी अपने अपने प्रदेश के स्कूल, हाई स्कूल, इण्टर तथा डिग्री कालेज की लाइब्रेरियों के लिए उक्त पुस्तक को संग्रह करने का पूर्ण समर्थन किया है।
पृथक् २ प्रत्येक भाग का मूल्य ५–०० तथा १–१० भाग सम्पूर्ण का मूल्य ४०–००

विषविज्ञान और अगदतन्त्र

कविराज युगल किशोर गुप्त आयुर्वेदाचार्य

तथा—

आयुर्वेदबृहस्पति डा० रमानाथ द्विवेदी एम० ए०, ए० एम० एस०

इस पुस्तक में उन मुख्य विषैली ओषधियों का वर्णन है, जिनसे साधारणतया दुर्घटनायें हो जाया करती हैं अथवा जिनका प्रायः आत्महत्या तथा परहत्या के लिये उपयोग किया जाता है। इस पुस्तक में विषों के लक्षण तथा उनकी चिकित्सा आदि पर विस्तार से लिखा गया है ताकि चिकित्सक विष का निर्णय कर अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक चिकित्सा कर सकें। इस परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण में **डा० बा० पटवर्धन** जी ने आधुनिक नवीन वैज्ञानिक ढंग से सम्पूर्ण ग्रन्थ का परिष्कार कर के ग्रन्थ का कलेवर ही बदल दिया है। श्री द्विवेदी जी लिखित चरक, सुश्रुत, वाग्भट आदि प्राचीन आर्ष ग्रन्थों का सारभूत 'अगदतन्त्र' नामक ग्रन्थ भी इस संस्करण में संवलित कर दिया गया है। यह पुस्तक विद्यार्थियों तथा सामान्य चिकित्सकों के लिए समान रूप से पूर्ण उपयोगी सिद्ध हो चुकी है।

द्वितीय संस्करण मूल्य १–५

इ० मे० बोर्ड, यू० पी०, आयुर्वेद विद्यापीठ एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलनादि अनेक आयुर्वेदिक संस्थाओं द्वारा पाठ्य स्वीकृत—

व्यवहारायुर्वेद-विषविज्ञान-अगदतन्त्र

डा० युगल किशोर गुप्त आयुर्वेदाचार्य

परिष्कर्त्ता—डा० बालकृष्ण पटवर्धन ए० एम० एस०

चिकित्सक तथा अध्यापक, आयुर्वेदिक कालेज, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

इस द्वितीय संस्करण को डा० पटवर्धनजी ने नवीन संस्करण के रूप में परिष्कृत कर दिया है तथा डा० रमानाथ द्विवेदी जी ने चरक, सुश्रुत, वाग्भट, काश्यप-संहितादि प्राचीन ग्रन्थोक्त परीक्षा निर्धारित 'अगदतन्त्र' जो इण्डियन मेडिसिन बोर्ड आदि परीक्षाओंमें निर्धारित है एवं जिनके प्रश्न प्राचीन आयुर्वेद पद्धति के अनुसार पूछे जाते हैं उनका समाधान तथा तदुक्त ग्रन्थों के विषघ्न ओषधि निर्माण, चिकित्सा, निदान, साध्यासाध्यता आदि का विशद विवेचन कर उसमें अगदतन्त्र नामक ग्रन्थ को भी जोड़ दिया है। चिकित्सकों की सुविधा के लिए उत्तरप्रदेश सरकार का इण्डियन मेडिसिन एक्ट भी इस संस्करण में छपा है। आज तक इस विषय की दूसरी कोई भी पुस्तक इसके टक्कर की नहीं छपी है। मूल्य ४–५०

आसवारिष्ट-विज्ञान

श्री पक्षधर झा

अध्यक्ष—रसशास्त्र-विभाग, राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, पटना (बिहार)

यह ग्रन्थ दो खण्डों में विभाजित है। प्रथम खण्ड में मद्य-सुरा-प्रसन्ना-सीधु-वारुणी आदि सम्पूर्ण आसवारिष्ट-भेदों की परिभाषाएँ, निर्माण-विधि की प्रक्रियाओं का सूक्ष्म विवेचन, सेवनविधि, मात्रा, पारिभाषिक शब्द तथा घन-द्रव पदार्थों के विभिन्न प्रचलित-अप्रचलित मानों का तुलनात्मक विवेचन है। द्वितीय खण्ड में रोगाधिकार-पूर्वक आसवारिष्टों का वर्गीकरण कर प्रत्येक आसवारिष्ट प्रकरण में ग्रन्थ, रोग, निर्माणप्रकार : घन-द्रव द्रव्य, प्रक्षेप द्रव्य, सन्धान प्रकार, सेवन प्रकार, मुख्य कार्य, मात्रा तथा 'वक्तव्य' में विशेष ज्ञातव्य सामग्री प्रस्तुत की गई है। आयुर्वेदीय आसवारिष्टों के सम्बन्ध में इतनी विशद सामग्री एक साथ प्रथम बार ही आप देखेंगे। विद्वान् लेखक के अध्यापन तथा प्रत्यक्ष कर्माभ्यास के अनुभवों से सम्पुटित यह ग्रन्थ छात्रों-चिकित्सकों की तो बात ही क्या, पठित व्यक्ति मात्र के लिये भी अमूल्य निधि है। शीघ्र छपेगा

वैद्यकीय सुभाषितावली

(Medical Anthology)

—: संग्रहकर्ता :—

डा० प्राणजीवन माणेकचन्द मेहता

आयुर्वेद जगत में डा० मेहता जी को कौन नहीं जानता। मेहता जी की इस अमर कीर्ति की प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है। फिर भी इतना अवश्य कहूँगा कि इस ग्रंथ का निर्माण करके मेहता जी ने आयुर्वेद का मस्तक अधिक ऊँचा कर दिया है। आयुर्वेद अथर्ववेद का उपवेद है यह प्रायः सभी लोग जानते हैं किन्तु वेदादि में बिखरे हुए आयुर्वेद के चुने हुए सुभाषित पद्य कितने हैं इसका ज्ञान सभी को नहीं था। प्रस्तुत ग्रन्थ में उसी के संकलन का भगीरथ प्रयत्न किया गया है। चारों वेद, महाभारतादि १८ पुराण, चरक, सुश्रुत, वाग्भटादि आयुर्वेद के शिरोमणि ग्रन्थ, माघ, नैषध, हर्षचरित आदि काव्य ग्रन्थ तथा लोलिम्बराज विरचित वैद्यजीवन आदि के ग्रन्थों में जितने वैद्यकीय सुभाषित छन्दोबद्ध सुललित पद्य आये हैं उन सब का एकत्र संग्रह इस पुस्तक में किया गया है तथा साथ ही साथ अंग्रेजी भाषा में उनकी आलोचनात्मक व्याख्या भी कर दी गयी है। यह ग्रन्थ आयुर्वेद के आधुनिक स्नातकों एवं विद्वानों के लिए अत्यन्त उपादेय और संग्रह करने योग्य है।

पुस्तक की छपाई, कागज, जिल्द, गेटअप आदि बहुत सुन्दर है। मूल्य २-००

वैद्यकपरिभाषाप्रदीपः

नवीन 'प्रदीपिका' नामक विस्तृत हिन्दी टीका सहित।

आयुर्वेदाचार्य श्री प्रयागदत्त जी जोषी से अत्यन्त सरल हिन्दी में इसकी प्रदीपिका नामक टीका करा कर छपवाई गई है। यह प्रदीपिका आपको शास्त्र तथा व्यवहार में मार्गदर्शक होगी। द्वितीय संस्करण १-५०

वैद्यजीवनम्

अभिनव 'सुधा' हिन्दी टीका टिप्पणी सहित।

टीकाकार—आयुर्वेदाचार्य श्री कालिकाचरण शास्त्री एम. ए.

इस संस्करण में सुधानामक विस्तृत सरल हिन्दी टीका में ग्रन्थ के आशय को भली प्रकार विस्तृत रूप से समझाते हुए विशद टिप्पणी में प्राचीन संस्कृत टीका की सभी विशेषतायें तथा स्थान स्थान पर प्रत्येक रोगों के लक्षण भी दे दिये गये हैं। द्वितीय संस्करण मूल्य १-२५

शार्ङ्गधरसंहिता

वैज्ञानिक विमर्शोपेत 'सुबोधिनी' हिन्दी टीका

'लक्ष्मी' नामक टिप्पणी तथा पथ्यापथ्यादि विविध परिशिष्ट सहित

इस ग्रन्थ के आपने कई संस्करण देखे होंगे किन्तु इस संस्करण की कुछ विशेषताएँ अपूर्व ही हैं।

प्रत्येक विवेच्य विषय के मूल पर निष्कर्षात्मक संक्षिप्त अवतरणिका, तदनन्तर मूल, फिर हिन्दी—इस व्यवस्था के साथ विस्तृत उपयोगी टिप्पणियाँ भी संस्कृत तथा हिन्दी में दी गई हैं। 'सुबोधिनी' टीका तथा 'लक्ष्मी' टिप्पणी में भाषा के प्रवाह और उसके सरलता, सुबोधता तथा स्पष्टता आदि गुणों को विशेष प्रयत्नों द्वारा सुरक्षित रखा गया है। विमर्श द्वारा ग्रन्थ के गूढ़ भावों को भी सरलता-पूर्वक स्पष्ट किया गया है। अनुवाद के अन्तर्गत मुख्य शब्दों को बड़े टाइप में देकर उनकी मुख्यता स्पष्ट की गई है तथा मान आदि के सम्बन्ध में ऐसे मत का संग्रहण किया गया है कि प्रत्यक्ष क्रियाओं में कहीं कोई बाधा न हो। जहाँ कहीं कुछ विशेष विषय अवधेय हैं वहाँ उनका उल्लेख कर उन पर यथेष्ट उपयोगी प्रकाश डाला गया है। लगभग १०० पृष्ठों का तो सुविस्तृत परिशिष्ट ही है जिसमें ग्रन्थानुक्त रोगों के भी निदान-लक्षण-चिकित्सा, प्रत्येक रोग का पथ्यापथ्य-निर्देश एवं प्रत्येक रोग पर अकारादिक्रम से एकत्र स्वरस-चूर्ण-आसव-घृत-तैल-रस-लेप आदि की लम्बी सूची भी दी गई है। आरम्भ में दिया हुआ विशद 'ग्रन्थालोचन' देखकर ही प्रस्तुत संस्करण की उपयोगिता समझ ली जा सकती है। चिकित्सा-क्षेत्र से सम्बद्ध व्यक्तिमात्र अथवा आयुर्वेद-प्रेमियों के लिये भी यह सर्वाङ्गपूर्ण उपादेय संस्करण अवश्य संग्रहणीय है। मूल्य ५-००

प्रो० राममूर्ति व्यायाम सीरीज की स्वास्थ्य सम्बन्धी पुस्तकें—

+ प्रो० राममूर्ति का व्यायाम ०-२५
+ तैरना सीखना ०-२५
+ जूजुत्सू वा जापानी कुश्ती ०-२५
+ तन्दुरुस्ती और ताकत ०-२५
+ भारत की ऋतुचर्या ०-२५
+ स्वास्थ्य साधन ०-२५
+ सूर्य नमस्कार ०-२५
+ पन्द्रह मिनट कसरत ०-२५

डा० बालकृष्ण मिश्र रचित पुस्तकें—

+ होमियो पैथिक चिकित्सा-विज्ञान १०-००
+ होमियो पैथिक चिकित्सा-सिद्धान्त ३-५०

सिद्ध-भेषज-संग्रह

आयुर्वेदाचार्य श्री युगल किशोर गुप्त डी. आई. एम. एस.

सम्पादक—आयुर्वेदाचार्य श्री गंगासहाय पाण्डेय ए. एम. एस.

अध्यापक, आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी

प्रस्तुत पुस्तक में सभी प्रचलित—चूर्ण, वटी, घृत, तैल, आसव-अरिष्ट, सुरा, रस, रसायन, पर्पटी, लौह, मण्डूर, गुग्गुलु, अवलेह, मोदक, पाक, क्वाथ, लवण, द्रव, क्षार, प्रलेप, अञ्जन, वर्ति, धूम आदि शास्त्रीय योग तथा श्रेष्ठतम रसायनशालाओं में जिन योगों का निर्माण होता है उन अनुभवसिद्ध एवं वर्तमान समय में सिद्धहस्त चिकित्सक नित्यप्रति जिन योगों का प्रयोग करते हैं उन १००० सहस्र सिद्ध योगों का संग्रह तथा भस्म एवं शोधन-मारण की अनुभवसिद्ध, गुणकारी सरल विधियों का भी संकलन किया गया है। प्रत्येक योग के वर्णन में ग्रन्थ निर्देश, अधिकार, संयोगी द्रव्य, निर्माणप्रकार, मात्रा, अनुपान एवं गुणधर्म तथा उपयोगिता आदि आठ विभाग रखे गये हैं। विशिष्ट स्थलों पर प्रायः सर्वत्र ही विशेष वक्तव्य और नोट्स में संदिग्ध विषयों को विस्तार के साथ प्रतिपादन कर दिया गया है। सर्वसाधारण चिकित्सकों को, विशेषतया नवीन चिकित्सकों को सर्वविध ओषधि-निर्माण तथा चिकित्सा के बारे में पूर्ण जानकारी एक ही ग्रन्थ से हो जाय, यह इस ग्रन्थ की प्रमुख विशेषता है। यह अभिनव संस्करण प्रत्येक चिकित्सक के लिए संग्रह करने योग्य है।

पृष्ठसंख्या ७६०, छपाई, कागज, गेटअप आदि सभी आकर्षक एवं मनोहर हैं। मूल्य—राज संस्करण ९-०० उत्तम संस्करण ८-०० सुलभ संस्करण ७-००

सुश्रुतसंहिता–शारीरस्थानम्

नवीन वैज्ञानिक 'प्रभा'–'दर्पण' विस्तृत हिन्दीटीका सहित

इसकी 'प्रभा' तथा 'दर्पण' नाम की श्रेयस्कर दो टीकाओं में परीक्षोपयोगी विषयों का विवेचन निराले ढंग से किया गया है। सर्वत्र 'प्रभा' व्याख्या से मूल के वास्तविक अर्थों को तथा 'दर्पण' से विशेष २ अर्थों को विस्तृत रूप से दर्शाया गया है एवं शारीरिक शब्दों के पर्याय दे देने से तथा प्रति अध्याय के अन्त में प्रश्नसंग्रह के रखने से इस संस्करण की उपादेयता अति सौन्दर्यान्वित हो गई है। प्रथम एवं द्वितीय संस्करण अल्प समय में ही बिक गये। तृतीय संस्करण मूल्य ३-५०

इ. मे. बोर्ड यू. पी., आयुर्वेद विद्यापीठ, हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा पाठ्य-स्वीकृत
उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत—

सौश्रुती

[A comprehensive Treatise on ancient Indian Surgery mainly based on the classical medical work Sushruta Samhita]

आयुर्वेदबृहस्पति डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस.
चिकित्सक तथा अध्यापक, आयुर्वेद कालेज हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी

प्राचीन शल्यतन्त्र (सर्जरी) पर लिखा हुआ यह विशद ग्रन्थ नाना दृष्टियों से बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस विषय की जो सामग्री प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में बिखरी पड़ी है उस समस्त सामग्री को आधुनिक विज्ञान के आलोक में देखने का अथक प्रयास इस पुस्तक में किया गया है। साधारण पाठक भी इस ग्रन्थ को पढ़कर अपने देश के शस्त्रकर्म विज्ञान का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। मूल्य ८-५०

स्वास्थ्यसंहिता-हिन्दीटीका सहित

आयुर्वेदाचार्य कविराज नानकचन्द्र वैद्यशास्त्री

नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ परीक्षा के छात्रों के लिए यह अनिवार्य पाठ्य पुस्तक है। 'स्वास्थ्य विज्ञान' के प्रश्नों का इस पुस्तक में सरल, स्पष्ट तथा विस्तृत विवेचन किया गया है। दीर्घजीवनार्थ अनेक उपायों के वर्णन इस पुस्तक में आपको देखने को मिलेंगे। अवश्य अवलोकन करें। परिष्कृत द्वितीय संस्करण। मूल्य २-५०

काकचण्डीश्वरकल्पतन्त्रम्

विमर्शात्मक हिन्दी व्याख्या परिशिष्टादि सहित

यह ग्रन्थ अत्यन्त प्राचीन है। आयुर्वेद के कुछ विलक्षण सिद्ध कल्पों का प्रयोग इसमें देखने को मिलता है। मूल ग्रन्थ संस्कृत होने से सर्वसाधारण के लिए अनुपयोगी था किन्तु सरल हिन्दी व्याख्या में ग्रन्थ के सम्पूर्ण गुह्य भाग को अत्यन्त स्पष्ट कर देने से सबके लिये यह समान रूप से उपयोगी हो गया है। अत्यधिक अनुसंधान और श्रमपूर्वक इसका प्रकाशन किया गया है ताकि मानव मात्र इससे लाभान्वित हो सकें। २-००

सूचीवेध-विज्ञान

[INJECTION THERAPY]

डा० राजकुमार द्विवेदी आयुर्वेदाचार्य

आयुर्वेद में सूचिकाभरण का वर्णन स्थल स्थल पर आया है किन्तु उसका विशद वर्णन नहीं है। इसमें आज तक के आविष्कृत परीक्षित तथा सभी उपयोगी सिद्ध ओषधियों का वर्णन है। यह अपने विषय की एक अद्वितीय पुस्तक सिद्ध हो चुकी है। प्रथम संस्करण हाथों हाथ बिक गया। द्वितीय संस्करण मूल्य १–५०

इ० मेडिसिन बोर्ड यू० पी०, आयुर्वेद विद्यापीठ, हि० सा० सम्मेलन आदि अनेक आयुर्वेदिक शिक्षा संस्थाओं द्वारा स्वीकृत—

यू० पी० गवर्नमेंट आयुर्वेद एण्ड तिब्बी एकाडेमी द्वारा पुरस्कृत

शालाक्यतन्त्र (निमितन्त्र)

आयुर्वेदबृहस्पति डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस.,

पुस्तक की भूमिका में ऐतिहासिक दृष्टि से विषय के विकास का विवेचन किया गया है। फिर पूरी पुस्तक को पाँच भागों में विभक्त किया गया है जिनमें क्रमशः नासिका, शिर, कान, मुंह और आँखों के रोगों के हेतु, निदान, सम्प्राप्ति आदि की विस्तृत विवेचना की गई है। विवेचना करते समय आधुनिक विज्ञान-सम्मत निदान और चिकित्सा आदि के साथ प्राचीन ग्रन्थों में प्राप्त इन्हीं विषयों से तुलना की गई है और मतभेदों तथा उनके कारणों पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाला गया है। विषय से सम्बन्धित कोई विषय छूटा नहीं है। पुस्तक आयुर्वेद के विद्यार्थियों के लिये जहाँ अत्यधिक उपयोगी हो गई है वहीं आधुनिक चिकित्सा के मर्मज्ञों के लिये भी विशेष अध्ययन-मनन की वस्तु बन गई है।

चिकित्सकों की सुविधा के लिये बहुत से अनुभूत योगों और सद्यः लाभप्रद ओषधियों का यथास्थान उल्लेख कर दिया गया है। साथ ही अन्त में वर्त्तमान चिकित्सा में व्यवहृत होने वाले योगों का बृहत् संग्रह भी जोड़ दिया गया है।

इस प्रकार यह पुस्तक आयुर्वेद में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रकाशन है तथा आयुर्वेद के विद्यार्थियों, चिकित्सकों, आधुनिक ढंग के चिकित्सा प्रेमियों और प्राचीन शास्त्रीय पद्धति के जिज्ञासुओं के लिये समानभाव से उपयोगी है।

पुस्तक बहुत ही सुन्दर बेजोड़ छपी है। द्वितीय संस्करण मूल्य ६–००

चिकित्सा-शब्दकोश

(पाश्चात्त्य चिकित्सा-शास्त्र के हिन्दीकरण का अनुपम प्रयास)

अवधविहारी अग्निहोत्री

(रीडर : काय-चिकित्सा)

शासकीय आयुर्वेदिक कालेज, रायपुर (म० प्र०)

वर्तमान सुसम्पन्न पाश्चात्त्य चिकित्सा-पद्धति का सम्यक् ज्ञान उन्हें ही हो सकता है जो अंग्रेजी, जर्मन, लैटिन तथा हिब्रू भाषाओं से परिचित हों। हिन्दी-भाषियों को भी इस उपादेय ज्ञान का लाभ कराने के उद्देश्य से लगातार ५ वर्षों के श्रमपूर्वक यह महाग्रन्थ प्रस्तुत किया जा सका है। इसमें आपको लगभग २०,००० अंग्रेजी शब्दों तथा पाश्चात्त्य-चिकित्सा-विज्ञान के सभी शब्दों के सरल एवं शुद्ध हिन्दीकरण की सफलता प्राप्त होगी। प्रत्येक शब्द-विवेचन के ३ भाग हैं—प्रथम में अंग्रेजी शब्द का मूल रूप, द्वितीय में स्पष्ट उच्चारण तथा तृतीय में हिन्दी पर्याय आदि। हिन्दी संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी ठीक-ठीक अर्थ बोध कराने में समर्थ है। इस ग्रन्थ ने चिकित्सा-क्षेत्र में हिन्दी अनुवाद आदि की सभी समस्याएँ सुलझा दी हैं तथा राष्ट्रहित के लिये चिकित्सा-शास्त्र के हिन्दीकरण का मार्ग भी खोल दिया है। चिकित्सा-क्षेत्र से सम्बन्धित हिन्दी-भाषी-मात्र का इससे यथेष्ट हित होगा। अवश्य संग्रहणीय ग्रन्थ है। शीघ्र प्राप्त होगा

पदार्थविज्ञान

श्री वागीश्वर शुक्ल बी. ए., ए. एम. एस.

आयुर्वेद-विज्ञान से परिचित होने के लिये तद्गत पदार्थों का ज्ञान आवश्यक है। पदार्थ-विज्ञान के अनेक संस्करण हो भी चुके हैं किन्तु उनमें सामान्य पदार्थों का परिचय नगण्य-सा है, अतः वर्षों के गम्भीर अध्ययन एवं मनन के पश्चात् यह संस्करण प्रस्तुत किया जा रहा है।

ग्रन्थ ३ खण्डों में विभक्त है। प्राच्य विज्ञान के सुविशद परिचय के साथ नव्य विज्ञान में विवेचित विषयों का भी क्रमबद्ध विवेचन तथा समन्वय प्रस्तुत संस्करण की प्रमुख विशेषता है। यह ग्रंथ उभयविध आयुर्विज्ञान की व्याख्या पूर्णरूप से बुद्धिगम्य करा देने के लिये यथेष्ट है। आयुर्वेद के छात्रों के लिये इससे अधिक अनुकूल कोई दूसरा संस्करण नहीं है। सम्पूर्ण वैशिष्ट्य ग्रन्थ देखने पर ही समझा जा सकता है। शीघ्र प्राप्त होगा।

काश्मीर के प्रसिद्ध कवि दामोदर गुप्त कृत

+ कुट्टनीमतम्

हिन्दी अनुवाद सहित

अनुवादक : अत्रिदेव विद्यालङ्कार

संस्कृत वाङ्मय में वेश्याओं का विशेष स्थान है; बहुत से राजपुत्रों ने इनसे लोक-शिक्षण प्राप्त किया था। जिस प्रकार शिष्य को आचार्य की आवश्यकता है, उसी प्रकार वेश्या को कुट्टनी की जरूरत है। कुट्टनी ही वेश्या को लोक-व्यवहार बताती है। एक कुट्टनी ने मालती नामक वेश्या को किस प्रकार उसके कार्यों की शिक्षा दी, यह सब इसमें विस्तार से वर्णित है। अपने विषय की यह अनुपम पुस्तक है। पुस्तक हाथ में लेकर छोड़ने को दिल नहीं चाहता। मूल्य ६-००

भिषक्-कर्म-सिद्धि

डा० रमानाथ द्विवेदी

चिकित्सक एवं अध्यापक, आयुर्वेदिक कालेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

यह आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति की उत्कृष्टतम रचना है। लेखक ने इस विषय को इतना व्यवस्थित एवं उपयोगी बनाया है कि यह पुस्तक आयुर्वेद के परीक्षार्थी, अध्यापक तथा चिकित्सक वर्ग के लिये समान भाव से उपयुक्त सिद्ध होती है।

चिकित्सा के क्षेत्र में नित्य व्यवहार में आने वाले ओषधि तथा अनुभूत योगों का विस्तृत संकलन इस पुस्तक में प्राप्त होता है। साथ ही रोगों के सम्बन्ध में पृथक्-पृथक् उनका संक्षिप्त निदान, चिकित्सा के सूत्र, सूत्रों की विशद व्याख्या भी संक्षेपतः संगृहीत है। प्रत्येक रोग पर छोटी से बड़ी तक, कम कीमत से लेकर मूल्यवान् ओषधियों तक के योगों का संकलन प्राप्त होता है। इस पुस्तक के विशाल योगसंग्रह में से किसी एक योग या ओषधि का रोग की तीव्रातीव्रता के अनुसार स्वल्प या अधिक मात्रा में प्रयोग करते हुए चिकित्सक अपने कार्य में पूरी सफलता प्राप्त कर सकता है।

जहाँ व्यावहारिक दृष्टि से यह सामान्य चिकित्सक के लिये उपयोगी है, वहीं शास्त्र के गहन सिद्धान्तों की भी विवेचना प्रस्तुत करती है। पूरी पुस्तक तीन खण्डों में विभाजित है, सामान्य निदान, चिकित्साबीज तथा विशिष्ट चिकित्सा खण्ड। इस तरह सर्वाङ्गपूर्ण इस पुस्तक को देख कर यदि सम्पूर्ण कायचिकित्सा विषय का सार कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। शीघ्र प्रकाशित होगा

+ शल्यतंत्र में रोगी परीक्षा

(Clinical Methods in Surgery)

डा० पी. जे. देशपाण्डे

सहायक—डा० रमानाथ द्विवेदी

प्राध्यापक, आयुर्वेदिक कालेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

प्रस्तुत पुस्तक 'माडर्न क्लिनिकल सर्जरी' विषय पर लिखी हुई एक अभिनव कृति है। इस पुस्तक की रचना किसी अंग्रेजी पुस्तक के अनुवाद या छायानुवाद रूप में नहीं हुई है, प्रत्युत यह अपने ढंग की एक स्वतन्त्र रचना है। हिन्दू विश्वविद्यालय के आयुर्वेद कालेज के योग्य, अनुभवी एवं उभयज्ञ अध्यापकों ने हिन्दी भाषा में इस पुस्तक को लिखने का प्रयास किया है। 'माडर्न सर्जरी' नामक विषय का क्षेत्र बृहद् एवं विशाल है, एक छोटी सी रचना में सम्पूर्णतः उसका वर्णन सर्वथा असम्भव है तथापि वैज्ञानिक दृष्टि से अभिनव शल्यतन्त्र के मूल-भूत तत्वों का संकलन इस पुस्तक में कर दिया गया है। पुस्तक के लेखक डा० देशपाण्डे गत कई वर्षों से पुस्तक सम्बन्धी विषय का पाठ विद्यालय के छात्रों को कराते आ रहे हैं एवं श्री द्विवेदी प्राचीन शल्यतन्त्र विषय के अध्यापक हैं। इन दोनों व्यक्तियों के सम्पूर्ण ज्ञान, अनुभव एवं प्रत्यक्ष कर्माभ्यास का बहुत कुछ सारांश पुस्तक के रूप में पाठकों के सम्मुख है। पुस्तक को सरल, बोधगम्य और सरस बनाने के लिये सभी प्रकार के प्रयत्न लेखकों ने किये हैं। रचना में भाषा एवं भावों का सामंजस्य देखते ही बनता है। धारा-प्रवाह भाषा का स्रोत इस प्रकार बहता हुआ मिलता है कि पाठकों को पढ़ने से 'क्लासिक' का और श्रोताओं को सुनने से 'क्लास लेक्चर' का आनन्द आता है। फलतः माडर्न सर्जरी के नैदानिक भाग के ज्ञान के लिये यह अनुपम रचना बन गई है।

पुस्तकाकार डिमाई ८ पेजी, पृष्ठसंख्या २०० से अधिक, कागज सफेद मोटा, टाइप नया, सजिल्द मूल्य ७—००

+ शल्य-प्रदीपिका (सचित्र)

डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा बी. एम्. सी., एम. बी. बी. एस्.
भूतपूर्व प्रिंसिपल तथा सर्जन, आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

मोटा कागज, मनोरम पक्की जिल्द, चित्र संख्या ३९५,
पृष्ठ संख्या ७६८ मूल्य १२-५०

'शल्य' आयुर्वेद का महत्त्वपूर्ण अंग है। पाश्चात्य देशों के अनवरत अनुसन्धानों ने इस विज्ञान को कितना समुन्नत बना दिया है एवं किस प्रकार हम इससे लाभान्वित हो सकते हैं, इन सबका ज्ञान प्राप्त करना यद्यपि आवश्यक है किन्तु अब तक हिन्दी में इसके लिये कोई ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हुआ था। विद्वान लेखक ने इस आवश्यकता को समझते हुए अपने ३० वर्षों के अध्यापन एवं चिकित्सा कार्य के प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर राष्ट्रभाषा में प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की है। इसमें जीवाणुवाद, जीवाणु द्वारा होने वाले संक्रमण का नाश, विद्रधि, व्रण, शरीर के अनेक भागों में पूयोत्पत्ति तथा उसकी अनेकविध चिकित्सा, पट्टियाँ बाँधना, प्लास्टर चिपकाना, रक्तप्रवाह, विभिन्न प्रकार के घाव, आगन्तुक शल्य, लघुशल्य कर्म, पैरिस-प्लास्टर, अस्थिभग्न, पर्यावरणार्ति, उण्डुकार्ति, पित्ताशयार्ति, वृद्धान्त्र, हार्निया, मलाशय और गुदा के रोग, पुरस्थ ग्रन्थि और मूत्रमार्ग आदि के प्रायः सभी रोगों के उद्गम, निराकरण, विविध प्रकार के सूचीवेध तथा छेदन आदि द्वारा उन सबकी अनेकविध चिकित्सा आदि का वर्णन है। यह सब ज्ञान-भण्डार विषयानुसार २२ परिच्छेदों में विभक्त है। प्रत्येक विषय के प्रतिपादन के प्रसङ्ग पर नवीनतम मतों एवं विधियों का विस्तृत वर्णन है। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि विद्वान् लेखक का सुदीर्घकालीन अध्ययन एवं अनुभव ही प्रस्तुत ग्रन्थ में एकत्र भरा हुआ है। शल्य-विषयक सम्पूर्ण जानकारी के लिए तथा चिकित्साक्रम को वैज्ञानिक एवं सुलभ बनाने के लिये प्रत्येक विद्यार्थी, शिक्षक एवं चिकित्सक के लिये इस प्रकार का परमोपयोगी कोई दूसरा ग्रन्थ हिन्दी में नहीं है। डाक्टर साहब इस विषय के माने हुए लेखक हैं। आपकी सुगम एवं प्रवाहयुक्त शैली वैज्ञानिक विषयों को भी सहज ही बोधगम्य बना देती है। विश्वास है चिकित्सक समाज में लेखक की अन्य कृतियों के समान ही शल्य-प्रदीपिका का समादर होगा।

रोग-परिचय (सचित्र)

(CLINICAL MEDICINE)

डा० शिवनाथ खन्ना एम. बी. बी. एस., पी. एच. डी.

आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

इस उपयोगी पुस्तक में चिकित्सकों एवं विद्यार्थियों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए रोग के सुगम बोधनार्थ चित्रों तथा तालिकाओं सहित सरल हिन्दी भाषा में सुन्दर ढंग से विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। इसमें रोगों की व्याख्या, वर्णन, कारण, मरक-विज्ञान (Epidemiology), निदान, चिकित्सा आदि विषय आठ खण्डों में प्रतिपादित किये गये हैं। औपसर्गिक रोग (Tropical & infectious diseases), विविध प्रकार के रक्त-रोग, स्त्री-रोग, अन्तःस्रावी ग्रन्थियों (Endocrines) के रोग, पचन-रक्तवह-मूत्र-वात-नाड़ी-संस्थानों के रोग, जीवतिक्तियाँ (Vitamins), पारिभाषिक शब्दकोष (Terminology), परिमाण तथा नवीन व प्रचलित औषधियों का वर्णन तालिका (Charts) के रूप में किया गया है।

द्वितीय संस्करण की विशेषताएँ

इस संस्करण में भाषा को यथासाध्य सरल कर उसे सर्वजनबोध्य बनाने का प्रयत्न किया गया है। प्रायः सभी विषयों में आमूल संशोधन कर नवीन वैज्ञानिक शोधों के आधार पर निदान एवं चिकित्सा की नवीन और प्राचीन पद्धतियों में समन्वय कर विषय में अधिक से अधिक स्पष्टता लाई गई है। नवीन अनुभवों के आधार पर बहुत-कुछ विषय भी बढ़ा दिए गए हैं।

इस दृष्टि से निःसन्देह यह संस्करण प्रथम संस्करण की अपेक्षा छात्रों, अध्यापकों एवं चिकित्सकों के लिए समानरूप से अधिक उपादेय हो गया है।

पृष्ठसंख्या ८३२, मूल्य १२—७५

+ रोग-निवारण

डा० शिवनाथ खन्ना, एम. बी. बी. एस., पी. एच. डी.
आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ।

इस पुस्तक में प्रधान रूप से आधुनिक (allopathic) तथा गौणरूप से प्राचीन (ayurvedic) चिकित्सा का विस्तारपूर्वक सरल भाषा में वर्णन किया गया है। चिकित्सा-सम्बन्धी क्रियायें—जैसे इन्जेक्शन सेलाइन, एनिमा आदि का चित्रोंसहित वर्णन है। पुस्तक ४ भागों में विभाजित है।

प्रथम भाग में चिकित्सा-सम्बन्धी क्रियाओं का वर्णन किया गया है जैसे—इन्जेक्शन लगाना, लम्बरपंकचर (Lumbar Puncture) करना, सेलाइन (Intravanus Saline) देना आदि।

द्वितीय भाग में औषधियों का प्रयोग, मात्रा, विषाक्तता आदि का वर्णन है।

तृतीय भाग में ऐलोपैथिक सिद्धान्त के अनुसार रोगों की चिकित्सा का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है तथा आवश्यकतानुसार आयुर्वेदिक चिकित्सा भी संक्षेप में दी गई है। रोगों की चिकित्सा के साथ-साथ रोगों के प्रधान लक्षण तथा निदान का भी संक्षेप में वर्णन किया गया है।

चतुर्थ भाग में औषधियों का प्रभाव तथा प्रयोग के अनुसार तालिका के रूप में संग्रह और औषधियों की मात्रा तथा प्रयोग की विधियों का वर्णन है।

कागज, छपाई, गेटअप आदि आधुनिकतम, पृष्ठसंख्या १०५० मूल्य १४-००

+ हमारी आँखें (सचित्र)

डॉ० एम. एस. अग्रवाल

प्रस्तुत पुस्तक में नेत्रों के अनेक रोग तथा उनकी एलोपैथिक, आयुर्वेदिक तथा प्राकृतिक पद्धति द्वारा चिकित्सा एवं ऐनक (चश्मा) निवारण करने के विविध सरल उपायों का विशद वर्णन किया गया है। नेत्र सम्बन्धी विषय को सरल रीति से समझाने के लिये पुस्तक को चार भागों में विभक्त किया गया है, जिनमें नेत्रों की बनावट तथा उनकी कार्य प्रणाली, नेत्रों की सुरक्षा विधि, सूर्य चिकित्सा तथा त्राटक, पामिंग आदि प्राकृतिक चिकित्सा विधि, नेत्रों को स्वस्थ रखने के लिये कुछ सुझाव तथा इसी प्रकार के अन्य अनेक महत्वपूर्ण विषयों का प्रतिपादन भली भांति किया गया है। स्थान स्थान पर विषय को पूर्णरूपेण सुगम बनाने के लिये सुन्दर तथा उपयोगी चित्रों से पुस्तक को सुसज्जित किया गया है। पुस्तक सभी दृष्टियों से उपादेय एवं संग्राह्य है।

सजिल्द ५-०

रोगी-परीक्षा (सचित्र)

(PHYSICAL EXAMINATION)

डा० शिवनाथ खन्ना, एम. बी. बी. एस., पी. एच. डी.
आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

प्रस्तुत पुस्तक में नवीन वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर रोगी-परीक्षा की विधियों का विस्तार-पूर्वक चित्रों तथा तालिकाओं द्वारा वर्णन किया गया है। रोगी-परीक्षा-सम्बन्धी सभी विषयों (पचन, मूत्र, रक्तवह, श्वसन तथा वातनाड़ी-संस्थानों) का उल्लेख है। अन्त में शिशु-परीक्षा-विधि तथा पारिभाषिक शब्दकोष का संग्रह है। चिकित्सा-विज्ञान के विद्यार्थियों तथा चिकित्सकों के लिए पुस्तक अमूल्य तथा संग्राह्य है। परिष्कृत परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण मूल्य ६—००

+पाश्चात्य द्रव्यगुणविज्ञान (मेटेरिया मेडिका)

आयुर्वेदाचार्य रामसुशील सिंह शास्त्री, ए. एम. एस.

इस में डाक्टरी में प्रयुक्त होने वाली सभी ओषधियों का विशद सचित्र वर्णन एवं उनके गुणकर्म (फार्माकालाजी) तथा आमयिक प्रयोगों (थेराप्यूटिक्स) का विस्तार से वर्णन किया गया है। स्थान २ पर उपयोगी नुस्खे भी दिए गए हैं। अपने विषय की सर्वप्रथम प्रकाशित उत्तम पुस्तक है। प्रथम भाग मूल्य १५—००

आयुर्वेदीय-यन्त्रशस्त्र-परिचय

आयुर्वेदाचार्य पं० सुरेन्द्र मोहन बी० ए०

यह अपूर्व ग्रन्थ लगभग १०० चित्रों से सुसज्जित प्राचीन तथा अर्वाचीन यन्त्रों और शस्त्रों के आकार तथा उपयोग विधि का पूर्ण बोध कराता है। इस के अध्ययन से वैद्य शल्य कर्मों में प्रवृत्त हो सकते हैं। आधुनिक शल्यशास्त्र के प्रमाण देकर प्राचीन शल्यतन्त्रों की तुलना तथा आलोचना की गई है। मूल्य १—७५

+ चरकसंहिता [जामनगर प्रकाशित]

इसमें हिन्दी-अंग्रेजी-गुजराती अनुवाद के साथ तात्विक विवेचना, उस काल की सभ्यता एवं औषधियों की सूची, पशु—पक्षियों का सचित्र वर्णन भी दिया गया है। पुस्तक उत्तम कागज बड़े आकार के १—६ भागों में छपी है। मूल्य नेट ७५—००

+ नेत्र-सुधार (सचित्र)

डॉ० आर० एस० अग्रवाल

इस पुस्तक में मुख्य रूप से नेत्र—दृष्टि के रोगों की चिकित्सा प्रणाली का विशद विवेचन किया गया है, साथ ही डा० बेट्स के प्राकृतिक चिकित्सा के साधनों को वैज्ञानिक ढङ्ग से मिलाकर पुस्तक की उपादेयता बढ़ा देने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त आंखों के सौन्दर्य की रक्षा, सूर्य व्यायाम तथा पामिङ्ग, त्राटक, विविध आयु में होने वाले नेत्र रोगों का वर्णन तथा उनको दूर करने के उपाय आदि विषयों पर सरल तथा रोचक भाषा में विवेचना की गई है। पुस्तक सचित्र तथा आवश्यक चार्टों से युक्त है। ३–०० सजिल्द ४–००

+ नवपरिभाषा

कविराज उपेन्द्रनाथदास कृत हिन्दी टीका सहित। आधुनिक काल में प्राच्य पाश्चात्य मानादि विषयक झटिति ज्ञान प्राप्त कराने के लिये लेखक ने इस नवपरिभाषा का निर्माण किया है। इसमें प्राचीन सिद्धान्तों की रक्षा करते हुये नव्य मत से सन्तुलना की गयी है। द्वितीय संस्करण मूल्य १–७५

+ वनौषधि-दर्शिका

वनस्पतिविशेषज्ञ प्रोफेसर बलवन्त सिंह एम० एस्–सी०

आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दूविश्वविद्यालय, काशी।

देहरादून तथा सहारनपुर (हरिद्वार, हृषीकेश, चकरौता तथा मसूरी आदि) एवं शिवालिक पर्वतमालाओं और तराई के प्रदेशों में होनेवाली लगभन तीन सौ वनौषधियों का वैज्ञानिक परिचय, उनके वैज्ञानिक प्रचलित और शास्त्रीय नामों का संग्रह, एवं संदिग्ध द्रव्यों के निर्णयार्थ मौलिक विवेचन के साथ हिमाचल के इस वनौषधि–प्रधान विख्यात क्षेत्र में भ्रमण करनेवाले वनौषधियों के जिज्ञासुओं के लिए यह पुस्तिका एक अपूर्व मार्ग–दर्शिका का कार्य करती है। इसकी सहायता से वनौषधि–परिचय-विषयक अध्ययन के लिये सामान्य विद्यार्थी, मौलिक अन्वेषक दोनों ही एवं ग्रामीण जनता को भी अपना मार्गदर्शक बनाकर बहुत लाभ उठा सकते हैं। इतना ही नहीं, उत्तर प्रदेश के मैदानों में भी जहां, इस पुस्तिका में वर्णित लगभग दो सौ वनस्पतियां पाई जाती हैं यह पुस्तिका भी बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी। साथ ही लेखक द्वारा लिखी हुई भूमिका में वनौषधि–सम्बन्धी अन्वेषण के लिये शास्त्रनिर्धारित एवं वैज्ञानिक पद्धति पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है। मूल्य २–५०

+ अनुभूतयोग चर्चा

श्री पं० बन्सरी लाल साहनी आयुर्वेदाचार्य

इस पुस्तक में प्रायः सभी प्रकार के रोगों के नाश करने के लिए थोड़ी लागत के सस्ते तथा सर्वसुलभ द्रव्यों से बनाये जा सकने वाले सरल सिद्ध तथा अनेक अनुभूत योग (नुस्खे) दिये गये हैं। गुप्त रोगों की चिकित्सा भी हृदय खोल कर स्पष्ट रूप से लिखी गई है। सरल हिन्दी भाषा में होने से यह पुस्तक सर्वसाधारण के लिये अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य १-२ भाग ६-००

+ स्वस्थवृत्तसमुच्चयः

चरकाचार्य श्री राजेश्वरदत्त शास्त्री प्रणीत हिन्दी टीका सहित

यह ग्रन्थ भारतवर्ष के समस्त आयुर्वेद कालेजों में पाठ्य ग्रंथ रूप में स्वीकृत है ६-५०

+ पेनिसिलिन व स्ट्रेप्टोमाइसीन विज्ञान तथा मूत्र परीक्षा

इसमें पेनिसिलिन व स्ट्रेप्टोमाइसीन की उत्पत्ति, निर्माण, योग, व्यवहार तथा दुष्परिणामों का विशद वर्णन है। साथ ही सल्फा श्रेणी की ओषधियों की नामावली तथा मूत्र परीक्षा का वर्णन भी सरल भाषा में स्पष्ट रूप से किया गया है। मूल्य १-२५

+ पञ्चभूतविज्ञानम्

कविराज श्री उपेन्द्रनाथ दास भिषगाचार्य

त्रिदोष-सिद्धान्त आयुर्वेद का जीवन है, पाञ्चभौतिक सिद्धान्त उसका मूल स्वरूप है। इन दोनों सिद्धान्तों का लुप्त होना आयुर्वेद का लुप्त हो जाना है। आधुनिक विज्ञानवादियों ने प्राचीन ऋषियों द्वारा वर्णित पाञ्चभौतिक सिद्धान्तों पर जो कुठाराघात किया है उससे प्राचीन शास्त्रों पर आस्था रखनेवाले भी पांच-भौतिक सिद्धान्त की सत्यता पर सन्देह करने लग गए हैं, आयुर्वेद-जगत् के इस संकट को दूर करने, तथा पूर्व और पश्चिम का भेद मिटाने की दृष्टि से प्रस्तुत ग्रंथ की रचना हुई है। इससे प्राचीन एवं आधुनिक तन्त्रकारों के युक्ति, तर्क, प्रयोग आदि सिद्ध सिद्धान्तों को लेकर पञ्चभूत के विषय में सब मतों में सामञ्जस्य स्थापित करने का सफल प्रयास किया गया है। विवेचन यद्यपि दार्शनिक है किन्तु भाषा इतनी सरल और व्यावहारिक है कि साधारण पठित व्यक्ति भी प्रतिपाद्य विषय को सरलतापूर्वक हृदयङ्गम कर सकता है। प्रस्तुत द्वितीयावृत्ति में कुछ परिवर्तन परिवर्द्धन भी किया गया है। आयुर्वेद-प्रेमी छात्राध्यापकों के लिये यह उपादेय ग्रन्थ अवश्य संग्रहणीय है। मूल्य ४-००

डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर रचित एवं प्रकाशित पुस्तकें–

+ **औपसर्गिकरोग।** इस संशोधित परिवर्धित द्वितीयावृत्ति में रोगों का क्रम संस्थानों के अनुसार बदल दिया है, अनेक नये रोग समाविष्ट किये गये हैं। विषयों तथा रोगों का विवरण तथा प्रतिपादन बहुत अधिक विस्तार के साथ किया गया है। (द्वितीय भाग यन्त्रस्थ) प्रथम भाग नेट १०–००
+ **रक्त के रोग।** औपसर्गिक रोगों के समान यह ग्रन्थ भी अत्यन्त परिश्रम पूर्वक लिखा गया है। प्रथम अध्याय में रक्त का सम्पूर्ण विवरण, द्वितीय अध्याय में विविध रोगों के कारण रक्त परिवर्तन का विस्तृत विवरण, तृतीय अध्याय में हैतुकी, सम्प्राप्ति, शारीरिक विकृति, निदान, प्राग्ज्ञान, चिकित्सा इत्यादि की दृष्टि से रक्त तथा रक्त सम्बन्धी सम्पूर्ण रोगों का समष्टि रूप से वैश्लेषणिक विहङ्गावलोकन तथा चतुर्थ अध्याय में रक्त, प्लीहा, लसग्रन्थियों एवं रक्तक्षयकर अन्य रोगों का स्वतन्त्र वर्णन किया गया है। नेट १०–००
+ **जीवाणु–विज्ञान।** इस पुस्तक में तृणाणु (Bacteria) कीटाणु, (Protozoa), विषाणु (Virus) इत्यादि जीवाणुओं की विभिन्न श्रेणियों का विवरण, उनके प्रकार, उनसे उत्पन्न होने वाले रोग और उनकी सम्प्राप्ति तथा चिकित्सा इत्यादि विषयों का समावेश किया गया है। द्वि० संस्करण नेट १०–००
+ **आयुर्वेद में मूत्रोत्पत्ति की कल्पना** (अंग्रेजी) नेट ०–१५
+ Comparative Survey of Ayurveda Nosology Net. 1-00
+ **मूत्र के रोग** (Diseases of urine, urinary system and allied diseases) नेट ६–००
+ **स्वास्थ्यस्थान** (स्वास्थ्य शिक्षा पाठावली) डा० घाणेकर प्रेस में

आयुर्वेदशास्त्राचार्य श्री पं० विश्वनाथ द्विवेदी रचित पुस्तकें—

+ **आयुर्वेदप्रश्नोत्तरी।** डी० आई० एम० एस० आद्य परीक्षान्त भाग समाप्त
+ **तैलसंग्रह।** सुगन्धित तैलों और औषधियों द्वारा बने विभिन्न प्रकार के तैलों द्वारा रोगों की चिकित्सा का अनुपम ग्रन्थ समाप्त
+ **नेत्ररोगविज्ञान।** (सचित्र) इण्डियन मेडिसिन बोर्ड द्वारा पाठ्य स्वीकृत १०–००
+ **वैद्य सहचर।** लेखक के ४० वर्ष के लाभप्रद सिद्धयोगों का संग्रह ३–००
+ **त्रिदोषालोक।** आयुर्वेदिक त्रिदोष–विज्ञान का सर्वाङ्गीण विवेचन २–५०
+ **प्रत्यक्ष ओषधि निर्माण।** इसमें ओषधि बनाने में जो कठिनाइयाँ, हानि, लाभ या विशेषता मालूम होती हैं विशदरूप से वर्णित हैं ३–००

कविराज गणनाथ सेन रचित पुस्तकें—

+ प्रत्यक्ष शारीरम् (संस्कृत) प्रथम भाग समाप्त, केवल द्वितीय भाग ८–७५
+ प्रत्यक्ष शारीर (हिन्दी) प्रथम भाग समाप्त। केवल द्वितीय भाग ८–७५
+ सिद्धान्तनिदान (संस्कृत) (द्वितीय भाग समाप्त) केवल प्रथम भाग ५–५०
+ संज्ञापंचक विमर्श। ३–००
+ Hindu Medicine 1–25

सिन्हा एण्ड को० की पुस्तकें—

+ सिन्हा संक्षिप्त अमेरिकन पारिवारिक चिकित्सा २–५०
+ सिन्हा मेडिकल डिक्शनरी हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी ३–००
+ सिन्हा अमेरिकन मेटेरिया मेडिका संक्षिप्त २–५०
+ सिन्हा अमेरिकन बायोकेमिक तत्त्व २–५०
+ सिन्हा आदर्श मेटेरिया मेडिका। यल. राय ५–००
+ सिन्हा होमियोपैथिक आर्गेनन ४–००
+ सिन्हा होमियोपैथिक फार्माकोपिया २–५०
+ सिन्हा बृहत् होमियो इंजेक्शन चिकित्सा ४–००
+ सिन्हा बृहत् होमियो परीक्षा विधान (मल, मूत्र, छाती) २–५०
+ सिन्हा बृहत् एनाटोमी एण्ड फिजियालोजी २–५०
+ सिन्हा बृहत् अमेरिकन पारिवारिक चिकित्सा ६–५०
+ सिन्हा बृहत् कम्पैरेटिव मेटेरिया मेडिका ८–००
+ Sinha One Thousand Red Lines 2–50
+ सिन्हा रिलेशनशिप आफ मेडिसिन्स २–५०
+ सिन्हा होमियो पद्यावली (मेटेरिया मेडिका) २–५०
+ सिन्हा भारतीय औषध विधान (Indian Drugs) २–५०
+ सिन्हा नारी चिकित्सा विज्ञान व मिडवाइफ़री २–५०
+ सिन्हा मदर टिंचर मेटेरिया मेडिका २–५०
+ सिन्हा अमेरिकन पाकेट मेटेरिया मेडिका १–५०

डा० सुरेन्द्रनाथ गुप्त रचित पुस्तकें—

+ आपके बच्चे की खुराक (शिशु आहार व्यवस्था) ३-३०
+ गर्भवती स्त्री और प्रसवपूर्व व्यवस्था २-५०
+ भोजन क्या, क्यों और कैसे ? ४-००
+ यौनमनोविकार कारण और निवारण २-००
+ विटामिन और हीनताजनित रोग ४-००
+ विवाहित जीवन में यौन सम्प्रयोग ४-००
+ सन्तति निरोध कब, क्यों और कैसे ? ४-००
+ नारी की यौन समस्यायें २-०० + परिवार नियोजन ०-२५
+ राजा बेटा कैसे बनायें ? श्रीमती पुष्पा सुरेन्द्रनाथ ३-००

कालेड़ा-बोगला की पुस्तकें—

+ चिकित्सा तत्त्वप्रदीप । प्रथम भाग अजिल्द ६-०० सजिल्द ११-००
  द्वितीय भाग अजिल्द ८-०० सजिल्द ६-५०
+ रसतन्त्रसार व सिद्धप्रयोग संग्रह । प्रथम भाग अजिल्द ६-००
  सजिल्द ११-००
  द्वितीय भाग अजिल्द ६-०० सजिल्द ७-५०
+ नेत्ररोगविज्ञान । जादव जी हंसराज १५-००
+ सिद्ध परीक्षा पद्धति । प्रथम भाग ८-००
+ ज्वर विज्ञान । अजिल्द ३-०० सजिल्द ४-५०
+ गाँवों में औषध रत्न । प्रथम भाग रफ २-०० ग्लेज ३-५०
  द्वि. भा. अ. ३-५० स. ५-०० तृतीय भाग अजिल्द ४-५० सजिल्द ६-००
+ औषध गुण धर्म विवेचन अजिल्द ३-०० सजिल्द ४-५०
+ संक्षिप्त औषध परिचय ०-६२ + गृह विज्ञान ०-५०
+ भारतीय जनता का स्वास्थ्य तथा आयुर्वेद ०-७५
+ भूलोक में अमृत-गाय का दूध ०-७५
+ नित्योपयोगी चूर्णसंग्रह १-२५ + नित्योपयोगी काथसंग्रह १-२५
+ नित्योपयोगी गुटिकासंग्रह २-००
+ रसतत्त्वविवेचन । हिन्दी टीका ३-५०
+ रसहृदयतंत्र । संस्कृत हिन्दी टीका अजिल्द ५-०० सजिल्द ६-५०
+ रसराजलक्ष्मी यन्त्रस्थ
+ रसोपनिषद् हिन्दी टीका सहित । प्र. भाग अजिल्द ५-०० सजिल्द ६-५०
+ रसशास्त्रप्रवेशिका २-००

श्यामसुन्दर रसायनशाला की पुस्तकें—

+ रसायनसार

लेखक—श्रीश्यामसुन्दराचार्यजी

प्रस्तावना लेखक—प्रो० श्रीदत्तात्रेय अनन्त कुलकर्णी एम. ए.

रस-रसायनों के निर्माण में शोधन, मारण, जारण आदि का प्रत्यक्ष कर्माभ्यास होना अति आवश्यक है। इस ग्रन्थ में विद्वान् लेखक महोदय ने इस विषय पर अपने प्रत्यक्ष कर्माभ्यास का सम्पूर्ण अनुभव संस्कृत में पद्यबद्ध कर प्रस्तुत किया है। श्री गोवर्धन शर्मा छांगाणी, वैद्य यादवजी त्रिक्रमजी आदि ने भी इस ग्रन्थ की भूरिभूरि प्रशंसा की है। यह ग्रंथ रसायनशास्त्रों का सच्चा सार है। वैद्य एवं छात्रसमुदाय इस एक ही ग्रन्थ से पर्याप्त लाभ उठा सकते हैं।

मूल्य ८-०० मात्र

+ अनुपान-विधि	पं० श्यामसुन्दराचार्य	०-५०
+ अनुभूतयोग प्रथम, द्वितीय भाग	”	३-००
+ भोजन-विधि (रोग और पथ्यापथ्य) (केदारनाथ पाठक)		२-००
+ सिद्ध-मृत्युञ्जय योग	”	१-००
+ आहार-सूत्रावली	”	०-५०
+ नीम के उपयोग	”	१-००
+ मधु के उपयोग	”	१-००
+ ग्राम्य-चिकित्सा	”	०-६२
+ टोटका विज्ञान	”	०-३७
+ देहातियों की तन्दुरुस्ती	”	०-७५
+ आरोग्य लेखाञ्जलि	”	१-००
+ प्रयोग रत्नावली (केदारनाथ पाठक)		२-००
+ मट्ठा या छाछ के उपयोग (प्रवासीलाल वर्मा)		१-००
+ मोटापा कम करने के उपाय (पं० प्रभुनारायण त्रिपाठी)		१-००
+ स्वास्थ्य और सद्वृत्त (अत्रिदेव गुप्त)		२-००
+ व्यायाम और शारीरिक विकास (प्रो० अ० कु० सिंह)		२-५०
+ प्रारम्भिक स्वास्थ्य (गौरीशंकर गुप्त)		०-३७

छप गया ! + **ज्वर विवेचन** छप गया !!

अर्थात् (ज्वर निदान चिकित्सा)

पं० लीलाधर शर्मा शास्त्री आयुर्वेदाचार्य

भूतपूर्व प्रिन्सिपल, आयुर्वेद कालेज, बीकानेर

इसमें विस्तारसे हेतु लिंगौषध ज्ञान अर्थात् कारण ज्ञान, लक्षण ज्ञान, औषध ज्ञान का वर्णन है। आयुर्वेदिक पद्धतिके साथ ही डाक्टरी से तुलनात्मक विवेचनके साथ रोगोंका निदान, लक्षण, उपसर्ग, रोगों का भावीफल, गति, समलक्षण रोगोंका प्रभेद विचार, प्रभेद निर्णय, वेदना निग्रह, स्थायी चिकित्सा, पथ्यापथ्य, थर्मामेटर ज्ञान, नाड़ी ज्ञान, श्वास ज्ञान, शरीर की लम्बाई, गुरुत्व, रोगपरीक्षाविधि, मूत्रपरीक्षा, मलपरीक्षा, दोष प्रधानता, क्वाथभेद निर्माण, गुण, गुरुपरंपरागत गुप्त सिद्धान्तके साथ नीचे लिखे रोगोंका वर्णन है। अष्टज्वर, सन्निपात ज्वर, विषम ज्वर, रात्रिज्वर, साप्ताहिक ज्वर, पंचाह ज्वर, नवाह ज्वर, मासिक, षाण्मासिक, वार्षिक ज्वर, दुर्जल ज्वर, प्रसूत ज्वर, सूतिका ज्वर, पूयज ज्वर, काला ज्वर, मोतीझरा, प्लेग, इन्फ्लुएंजा, निमोनिया, प्लूरिसि, गर्दनतोड़ ज्वर, शीतला ज्वर, उपद्रवरूपमें या स्वतंत्रतया श्वास, कास, मूर्च्छा, मृगी, हिस्टीरिया, सन्यास, अरुचि, वमन, हैजा, अतिसार, ग्रहणी, कृमिरोग, तृष्णा, कठोर कब्ज, हिचकी, अंगभंग, आध्मान, दाह, अनिद्रा, प्रलाप, अष्टशूल, परिणाम शूल, अश्मरी, शुक्राश्मरी, मूत्र पिंडकी पथरी, पित्ताश्मरी, ऋतुशूल, डिम्बकोषका स्नायुशूल, डिम्बकोषकी सूजन, सिकतामेह, मधुमेह, इन सबकी सद्यः फलप्रद चिकित्सा स्थायी, चिकित्सा आदिका आवश्यक वर्णन बड़े बड़े योग्य विद्वानोंके अनुभव के आधार पर लिखा है। यह पुस्तक चिकित्सा जगतमें अद्वितीय है। अभी तक राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखी हुई ज्वर चिकित्साके निमित्त ऐसी कोई भी पुस्तक उपलब्ध नहीं थी। यह पुस्तक साधारण वैद्य, चिकित्सक तथा विद्यार्थियोंको समान उपयोगी है। इसकी प्रशंसामें जितना वर्णन किया जाय थोड़ा ही है। पृष्ठसंख्या ५००, कागज, टाइप, जिल्द आदि बहुत सुन्दर है। मूल्य १०-००

वात्स्यायनमुनिविरचितं

कामसूत्रम्

जयमंगला टीका सहित हिन्दी में अनुचिन्तन

पं० देवदत्त शास्त्री

भारत की अपेक्षा यूरोप में कामशास्त्र एवं कामसूत्र पर लगभग एक शती से लगातार अत्यधिक चिन्तन तथा अनुशीलन किया गया है। भारत में कामसूत्र पर अब तक संस्कृत की सर्वमान्य जयमंगला टीका ही अपना स्थान बनाए हुए है, हिन्दी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं में कामसूत्र पर अभी तक व्यवस्थित, वैज्ञानिक ढंग से कोई व्याख्या, कोई चिन्तन प्रस्तुत नहीं किया जा सका। इस अभाव की पूर्ति की आशा कामसूत्र के इस अनुचिन्तन से हम कर रहे हैं। प्राच्य-पाश्चात्त्य यौनविज्ञान, मनोविज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए यह अनुशीलन धर्म, अर्थ, काम—इस त्रिवर्ग की विशद व्याख्या पर आधारित है। यह अनुशीलन उन आलोचकों के लिए चुनौती है जो कामसूत्र जैसे शास्त्र को अश्लील, अनुपयोगी कह कर उसकी उपेक्षा और निन्दा करते हैं।

डबल डिमाई आकार के लगभग १५०० पृष्ठों का यह महान् ग्रन्थ सुप्रसिद्ध जयमंगला टीका के साथ गहन, गंभीर अनुचिन्तन, समाजविज्ञान तथा मनोविज्ञान पर आधारित है।

यन्त्रस्थ

आचार्य रमेशवेदीजी की श्रेष्ठ पुस्तकें—

+१. लहसुन प्याज	२–५०	+८. तुलसी	२–००
+२. देहात की दवाएँ	०–७५	+९. देहाती इलाज	१–००
+३. अशोक	१–००	+१०. बरगद	१–००
+४. त्रिफला	३–२५	+११. नीम : बकायन	२–००
+५. मिर्च	१–००	+१२. शहतूत	०–४०
+६. तुरवक और चालमोग्रा	०–५५	+१३. पेठा : कद्दू	०–७५
+७. सोंठ	१–५०	+१४. शहद	३–००

छप गया ! अपूर्व चिकित्सा ग्रन्थ !! छप गया !!

+ सन्निपातज्वर-चिकित्सा

कविराज चक्रपाणि शर्मा आयुर्वेदाचार्य

प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय आयुर्विज्ञान एवं पाश्चात्य चिकित्सापद्धति में निरूपित निदान और चिकित्सा का समन्वय करके कविराज चक्रपाणि शर्मा आयुर्वेदाचार्य ने सन्निपात ज्वर जैसे कठिन विषय को बहुत ही सुन्दर ढंग से सरल करने का प्रयत्न किया है। सन्निपात ज्वर की चिकित्सा में परस्पर विरुद्ध गुणवाले दोषत्रय का एकत्वरूप होने से दोषदूष्यों में पारस्परिक विरोध होने पर अत्यधिक कठिनता का अनुभव होता है। अतः इसकी चिकित्सा का वास्तविक ज्ञान प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा ही हो सकता है। लेखक को यह सौभाग्य स्वतंत्र चिकित्सा तथा अस्पताल में कार्य करने से प्राप्त हुआ है और यही कारण है कि स्वानुभूत चिकित्सा प्रकरण में क्लिष्ट से क्लिष्ट सन्निपात के असाध्य रोगियों को बचाने के लिए लेखक ने भगीरथ प्रयत्न किया है। इस ग्रन्थ का यह प्रकरण सर्वोपरि स्तुत्य है और सभी के लिये ग्रहण करने योग्य है। इस ग्रन्थ में आयुर्वेदिक चिकित्सा के साथ २ तुलनात्मक पाश्चात्य चिकित्सा का भी संकलन कर त्रयोदश सान्निपातिक ज्वरों का विवेचन प्राच्य एवं प्रतीच्य दोनों ही मतानुसार किया गया है। आयुर्वेद के विद्यार्थियों तथा ऐसे व्यक्तियों के लिये जो आयुर्वेदज्ञ नहीं हैं परन्तु आयुर्वेद के ग्रन्थों का पठन पाठन करना चाहते हैं उनके लिये यह पुस्तक बहुत ही उपादेय है। इसकी प्रशंसा जितनी की जाय थोड़ी ही है। पृष्ठसंख्या ४००, सफेद चिकना कागज, चमकता टाईप, आकर्षक विलायती कपड़े की मनोहर जिल्द मूल्य ६-००

सब प्रकार के कलमी पौधे मिलने का एक मात्र विश्वस्त स्थान—

बृज नर्सरी

बाग मडुआडीह बाजार, पो० शिवपुरवा, वाराणसी-६

सुप्रसिद्ध प्राचीन दन्तविज्ञानान्वेषक डा० गुप्ता की संपूर्ण आयुर्वेदिक विशिष्ट कृतियाँ:—

+(१) 'दन्तस्वास्थ्य-विज्ञान'

इसमें कुदरती दाँतों की रक्षा में आधुनिकों की निष्फलता पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। साथ ही प्राचीन शास्त्रानुसार स्थानिक-मंजनादि उपायों की अपेक्षा आन्तरिक-आहारादि पर अधिक भार दिया गया है। सारांश नित्याहार व उसके पदार्थों के बारे में जब तक प्राचीनों के दृष्टिकोण को नहीं अपनाया जाता है, तब तक किसी भी हालत में दाँतों की रक्षा असंभव है और रहेगी भी। इसी विषय की विस्तृत चर्चावाला अद्वितीय ग्रन्थ। मूल्य २-००

+(२) 'दन्तव्याधिविज्ञान'

दन्तरचना—आदि से संबन्धित 'शारीर, क्रियाशारीर' सहित, दन्त रोगों के मूलगामी कारणों की शोध में, आधुनिकों की भूलों पर प्रयोगात्मक प्रकाश डालनेवाली अनेकविध अन्वेषणात्मक योजनाओं वाला अद्वितीय ग्रन्थ मूल्य २-७५

+(३) 'दन्तचिकित्सा-विज्ञान'

पायोरिया और कृमिदन्त आदि रोगों के समूल नाश के आहारगत तथा अन्य मौलिक उपायों पर प्रकाश डालने के साथ ही आधुनिकों की लाक्षणिक या स्थानिक चिकित्सा को सप्रयोग भ्रमोत्पादक ठहराने वाला यही ग्रन्थ है।

वैसे ही 'बिना बधिरताकारक द्रव्य के वेदनारहित' होनेवाले कलात्मक प्रयोग—जिनमें से दृढ़तम दाँत उखाड़ने की कला भी एक है-के शास्त्रीय रहस्यों पर भी विस्तार से विवेचन कर प्रकाश डाला गया है।

साथ ही 'तीसरी बार की दन्तावली-निर्माण' करनेवाले शास्त्रीय प्रयोगों की भी छनावट की गई है। मूल्य ३-२५

+(४) 'आरोग्य व आहार रहस्य'

आहारयोग्य पदार्थों की रचना में आधुनिकों द्वारा प्राप्त तत्वों के ज्ञान की भूलों पर प्रकाश डालनेवाली अनेकविध प्रयोगात्मक योजनाओं के साथ ही आध्यात्मिकों के ज्ञान की शाश्वत सत्यता एवं सम्पूर्णतादि को प्रमाणित करने वाला एकमेव ग्रन्थ, जो आरोग्य और आहार दोनों के ही रहस्यों का यथार्थ उद्घाटन करता है। मूल्य २-५०

आयुर्वेदिक–यूनानी–एलोपैथिक–होमियोपैथिक–बायोकेमिक–प्राकृतिक चिकित्सा आदि पद्धतियों के संस्कृत–हिन्दी–बँगला–गुजराती–मराठी–अंग्रेजी भाषा में छपे ग्रन्थों का सूचीपत्र

पुस्तकों का आर्डर देते समय इस सूचीपत्र की संख्या ४१, तथा पुस्तकों के नाम के साथ उनकी क्रमसंख्या एवं मूल्य का उल्लेख भी आर्डरपत्र में अवश्य करें।

(जो पुस्तकें प्रायः बहुत समय से समाप्त हैं वे हटा दी गई हैं)

१ अंग्रेजी–हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी । भट्टाचार्य १०–००
२ अगद–तन्त्र । डॉ० श्रीरमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस. । भाषा ०–७५
३ अगदतंत्र । प्रथम भाग-महाविष । जगन्नाथप्रसाद शुक्ल । भाषा ३–००
४ अगदतंत्र । द्वितीय भाग-उपविष । जगन्नाथप्रसाद शुक्ल । भाषा ५–००
५ अगदतंत्र । तृतीय भाग-वनस्पतिविष । द्रव्यगुण सहित । भाषा २–००
६ अंगूर के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०–७५
७ अचार चटनी और मुरब्बा बहार । भाषा २–५०
८ अचूक चिकित्सा के प्रयोग । जानकी शरण वर्मा । भाषा २–५०
९ अजीर्णमंजरी । दत्तरामकृत हिन्दी टीका सहित ०–४७
१० अञ्जननिदानम् । ब्रह्मशंकर मिश्र कृत विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित १–००
११ अण्ड (अन्त्रवृद्धि) चिकित्सा । कृष्णप्रसाद । भाषा ०–३७
१२ अद्भुत जन्तु । जगपति चतुर्वेदी । भाषा २–००
१३ अनङ्गरङ्ग । कल्याणमल्ल विरचित १–२५
१४ अनङ्गरङ्ग । कल्याणमल्लविरचित । हिन्दी टीका सहित २–५०
१५ अनन्त मेटेरियामेडिका (होमियोपैथिक विज्ञान) डॉ० अनन्तलाल वर्मा ३–५०
१६ अनार के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०–६२
१७ अनुपान कल्पतरु । जगन्नाथप्रसाद शुक्ल । भाषा २–५०
१८ अनुपानदर्पण । हिन्दी टीका सहित २–२५

१९ अनुपानविधि । श्री श्यामसुन्दराचार्य । भाषा ०-५०
२० अनुभविक औषधें अर्थात् सिद्धयोगसंग्रह । (मराठी) ४-००
२१ अनुभविक चिकित्सा । (मराठी) १-००
२२ अनुभूत पशु चिकित्सा । सुरेन्द्र सिंह । भाषा २-५०
२३ अनुभूतयोग । १-२ भाग । श्री श्यामसुन्दराचार्य । भाषा २-००
२४ अनुभूतयोगचर्चा । १-२ भाग । वंसरीलालसाहनी । भाषा ६-००
२५ अनुभूतयोगचिन्तामणि । भाग १-२ । डा० गणपतिसिंह । भाषा ८-२५
२६ अनुभूतयोगप्रकाश । डा० गणपतिसिंह । पूर्वार्द्ध । भाषा ६-२५
२७ अनुभूतयोगावली । हिन्दी १-३१
२८ अनुभूति (अनुभूत औषधियों का संग्रह) वैद्य रघुनन्दन मिश्र । भाषा २-००
२९ अपना इलाज आप करो । भाषा १-२५
३० अपना इलाज आप खुद कीजिए । आचार्य चतुरसेन २-५०
३१ अपूर्वचिकित्सा-विधान । महेन्द्रनाथ । भाषा ६-००
३२ अभिधानमञ्जरी । भिषगाचार्य विरचित । संस्कृत २-००
३३ अभिनन्दन ग्रन्थ (कविराज सत्यनारायण शास्त्री पद्मभूषण) १५-००
३४ अभिनवप्रसूतितन्त्र । दामोदरगौड़कृत । संस्कृत १२-००
३५ अभिनव प्राकृतिक चिकित्सा । कुलरञ्जन मुखर्जी । भाषा ४-००
३६ अभिनव-बूटीदर्पण-सचित्र । श्री रूपलाल वैश्य । भाषा १०-००
३७ अभिनव विकृति विज्ञान (सचित्र) श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी २२-००
३८ अभिनव शरीर क्रिया विज्ञान (सचित्र) प्रियव्रत शर्मा, ए.एम. एस. १०-००
३९ अभिनव शवच्छेद विज्ञान । हरिस्वरूप कुलश्रेष्ठ १५-००
४० अभ्रकादि-खनिजविज्ञान । कविराज प्रतापसिंह वैद्यरत्न प्रेस में
४१ अमर विनोद । भाषा ०-२५
४२ अमीबा वर्ग के पराश्रयी जीवाणु, तज्जन्य रोग एवं चिकित्सा । डा० सोमप्रकाश गुप्त २-००
४३ अमृतपान । रामचन्द्र वर्मा । भाषा ०-३७
४४ अमृतसागर । सरल हिन्दी ७-००, ८-००, ९-००
४५ अरण्ड के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा १-२५
४६ अरिष्टक(रीठा)गुणविधान । हकीम अब्दुल्ला । भाषा ०-५०

४७ **अर्क के गुण तथा उपयोग** । हकीम अब्दुल्ला । भाषा २-५०
४८ **अर्कगुणविधान** । डा० गणपतिसिंह । भाषा १-५०
४९ **अर्कप्रकाश** । हिन्दी टीका सहित १-७५, २-५०
५० **अर्शरोग चिकित्सा** । मनोहरदास । भाषा १-००
५१ **अलौकिकचिकित्साविज्ञान** । रामलाल पहाड़ा । भाषा २-५०
५२ **अशोक** । रमेश वेदी १-००
५३ **अशोक वैद्य विशारद गाइड** । ज्ञानेन्द्र पाण्डेय वैद्य । भाषा
प्रथम खण्ड ६-०० द्वितीय खण्ड ८-००
५४ **अश्ववैद्यकम्** । जयदत्त कृतं । **अश्वचिकित्सितं** श्री नकुल कृतं । संस्कृत २-००
५५ **अश्वशास्त्रम्** (सचित्रम्) नकुलकृतम् । संस्कृत १२-००
५६ **अष्टांगशारीरम्** । वारियर कृत संस्कृत टीका सहित २०-००
५७ **अष्टांगसंग्रहः** (वृद्धवाग्भट) मूलमात्र । संपूर्ण समाप्त
५८ **अष्टांगसंग्रहः** । छांगाणी श्रीगोवर्धन शर्मा कृत-
अर्थप्रकाशिका विस्तृत हिन्दी टीका सहित । सूत्रस्थानं ८-००
५९ **अष्टांगसंग्रहः** । इन्दू रचित शशिलेखा सं० टी० सहित ।
निदान-शारीरस्थानं १०-००
६० **अष्टांगहृदयम्** । भागीरथी विस्तृत टिप्पणी सहित ४-००
६१ **अष्टांगहृदयम्** । 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका 'वक्तव्य' परिशिष्ट विस्तृत
भूमिका सहित । टीकाकार-कविराज श्रीअत्रिदेवगुप्त विद्यालङ्कार १५-००
६२ **अष्टांगहृदयम्** । अरुणदत्त-हेमाद्रिकृत टीकाद्वय सहितं दुष्प्राप्य
६३ **अष्टांगहृदयम्** (उत्तरतन्त्रं) शिवदाससेनकृत तत्त्वबोध
सं० व्याख्यासहितं ४-००
६४ **अष्टांगहृदयम्** । परमेश्वरविरचित वाक्यप्रदीप सं० व्याख्या सहित
प्रथम भाग ३-००
६५ **अष्टांगहृदयम्** । श्रीदासपंडित कृत हृदयबोधिका सं० व्याख्या सहित
१-२ भाग ११-००
६६ **अष्टांगहृदयम्** (उत्तरस्थानं) कैरली संस्कृत व्याख्या सहितं ७-००
६७ **अष्टांगहृदयम्** (सूत्रस्थानं) इन्दुरचित शशिलेखा संस्कृत
व्याख्या सहितं ८-५०
६८ **अष्टांगहृदयम्** (सूत्रस्थानं) सर्वाङ्गसुन्दरी-पदार्थचन्द्रिका-
आयुर्वेदरसायन-संस्कृतटीकात्रयोपेतम् १०-००

६९ अष्टांगहृदयकोशः । हृदयप्रकाश संस्कृतव्याख्यासहितः १२–००
७० असली प्राचीन कोकशास्त्र । देवीचन्द बेरी । भाषा ४–००
७१ आँख का अचूक इलाज । महेन्द्रनाथ पाण्डेय । भाषा २–२५
७२ आँखों का डाक्टर । रामनरायन शर्मा वैद्य २–५०
७३ ऑलोपॅथिक औषधें । (मराठी) १–५०
७४ आक (अर्क) के गुण तथा उपयोग । सम्पादक–रामस्नेही । भाषा २–५०
७५ आकृतिनिदान । डा० लुई कुने । भाषा २–५०
७६ आतुरपरीक्षाविधानम् । संस्कृत १–१२
७७ आतुरपरीक्षाविधानम् । अंग्रेजी २–२५
७८ आत्मसर्वस्वम् । भगीरथस्वामीकृत १००० अनुभूत योग । भाषा ५–२५
७९ आदर्श आहार । डा० सतीशचन्द्र दास गुप्त । भाषा १–००
८० आदर्श एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका । डा० रामनारायण ११–००
८१ आदर्श दिनचर्या । प्रभुनारायण । भाषा १–७५
८२ आदर्श भोजन । डा० लक्ष्मीनारायण चौधरी । भाषा १–२५
८३ आदर्श भोजन । चतुरसेनशास्त्री । ,, १–००
८४ आदिशास्त्र अर्थात् रतिशास्त्र । हिन्दी टीका सहित १–५०
८५ आधुनिक एलोपैथिक गाइड । डा. वंसल, डा. गोयल । भाषा ८–५०
८६ आधुनिक चिकित्सा विज्ञान । १–२भाग । डा. आशानन्द पंचरत्न २०–००
८७ आधुनिक सिद्धरसेन्द्रविज्ञान । १–२ भाग । चन्द्रभानु शर्मा ६–००
८८ आधुनिक हिन्दी नेत्र–रोग विज्ञान । वामनदिनकर साठ्ये । २–३ भाग २८–००
८९ आध्यात्मिक व शारीरिक ब्रह्मचर्य । डा० चतुर्भुज सहाय । भाषा १–५०
९० आनन्दकन्दम् । भैरवोक्तम् । संस्कृत मूल ११–५०
९१ आपका व्यक्तित्व । आनन्दकुमार । भाषा ४–००
९२ आपके बच्चेकी खुराक (शिशु आहार व्यवस्था) डा० सुरेन्द्र । भाषा ३–३७
९३ आपणो खोराक । बापालाल ग० वैद्य (गुजराती) ३–००
९४ आपरेशन कोनूं अने बीजी वार्ताओ । प्राणजीवनमेहता (गुजराती) ०–७५
९५ आम के गुण तथा उपयोग । सम्पादक–अमोलचन्द्र शुक्ल । भाषा १–५०
९६ आम्रगुणविधान । डा० गणपति । भाषा १–२५

९७ आयुर्वेद अने वैज्ञानिक दृष्टि । बापालाल ग० वैद्य (गुजराती) ६–००
९८ आयुर्वेद इंजेक्शन चिकित्सा । डा० श्यामसुन्दर शर्मा २–५०
९९ आयुर्वेद उपचारशास्त्र (रसोद्धार तंत्र–रससंहितानो चिकित्साकाण्ड) चरणतीर्थ कृत (गुजराती भाषा) १०–००
१०० आयुर्वेद नो इतिहास । दुर्गाशङ्कर केवलराम शास्त्री (गुजराती) १–५०
१०१ आयुर्वेद का इतिहास । सूरमचन्द । भाषा ८–००
१०२ आयुर्वेद का इतिहास । अत्रिदेव ,, ३–५०
१०३ आयुर्वेद का बृहद् इतिहास । अत्रिदेव विद्यालंकार । भाषा ११–००
१०४ आयुर्वेद की कुछ प्राचीन पुस्तकें । (आयुर्वेद वाङ्मय-शोध का एक विवरण) । श्री प्रियव्रत शर्मा १–००
१०५ आयुर्वेद चिकित्सासागर । शम्भुनाथ शास्त्री आयुर्वेदाचार्य । भाषा ३–००
१०६ आयुर्वेद चिन्तामणिः । बल्देव प्रसाद कृत हिन्दी टीका सहित ४–५०
१०७ आयुर्वेददर्शनम् । वैद्य महादेव चन्द्रशेखरपाठककृत हिन्दी अनुवाद सहित १–५०
१०८ आयुर्वेद परिषद निबन्धावली । (प्रमेह–अर्श–श्वास रोग) । भाषा १–२५
१०९ आयुर्वेदप्रकाशः । सोमदेवशास्त्रीकृत संस्कृत हिन्दीटीका सहित पूर्वार्द्ध ५–००
११० आयुर्वेदप्रकाशः । श्रीगुलराजशर्माकृत अर्थ विद्योतिनी संस्कृत अर्थ-प्रकाशिनी हिन्दी टीका सहित । परिष्कृत द्वि० संस्करण । संपूर्ण १२–५०
१११ आयुर्वेद प्रदीप (आयु०–एलोपेथिक गाइड) डा० राजकुमार द्विवेदी । डा० गंगासहाय पाण्डेय सम्पादित । भाषा १०–००
११२ आयुर्वेद प्रश्नोत्तरी । डी. आई. एम. एस का आद्य परीक्षान्त भाग समाप्त
११३ आयुर्वेद महामंडल रजत-जयन्ती ग्रन्थ । १–२ भाग । सम्पादक—कविराज प्रतापसिंह । भाषा ५०–००
द्वितीय भाग मात्र २०–००
११४ आयुर्वेदमहोदधिः (अन्नपान विधि) सुषेणकृतः । संस्कृत १–३७
११५ आयुर्वेदमीमांसा । जगन्नाथरथ कृत । संस्कृत मूल १–२५
११६ आयुर्वेद में मूत्रोत्पत्ति की कल्पना । (अंग्रेजी) डा० घाणेकर ०–१५
११७ आयुर्वेदविज्ञानम् । 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका बृहद्परिशिष्ट सहित २–००
११८ आयुर्वेद विज्ञान (हिन्दी) डा० कमला प्रसाद मिश्र ३–५०

११९ आयुर्वेद विहंगावलोकन । बापालाल ग० वैद्य (गुजराती) ४-००
१२० आयुर्वेद व्याख्यानमाला । बापालाल ग० वैद्य (गुजराती) ६-००
१२१ आयुर्वेद शारीरम् । प्रथम खण्ड । ग० वि० पुरोहित । संस्कृत ८-००
१२२ आयुर्वेद सार संग्रह । हिन्दी ६-००
१२३ आयुर्वेद सुलभ विज्ञान । डा० कमल सिंह । भाषा २-५०
१२४ आयुर्वेदसूत्रम् । योगानन्दनाथ कृत संस्कृत टीका सहित २-५०
१२५ आयुर्वेदसूत्रम् । रामप्रसादकृत हिन्दी टीका सहित ०-८५
१२६ आयुर्वेदस्य वेदत्वम्-अचिन्त्यनिर्वचनत्वञ्च । संस्कृत १-००
१२७ आयुर्वेदादर्शसंग्रहः । दामोदर गौड़ कृतः । संस्कृत २-००
१२८ आयुर्वेदिक इञ्जेक्शन चिकित्सा । डा० श्यामसुन्दर । भाषा २-५०
१२९ आयुर्वेदिक-एलोपेथिक गाइड । सम्पादक-डा० गंगासहाय पाण्डेय १०-००
१३० आयुर्वेदिक घरेलू चिकित्सा । डा० सुरेश । भाषा १-२५
१३१ आयुर्वेदिक पत्रों का इतिहास । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा ०-४४
१३२ आयुर्वेदिक सफल सूचीवेध (इन्जेकशन्स) प्रकाशचन्द्र जैन भाषा ३-००
१३३ आयुर्वेदीय औषधिगुणधर्मशास्त्र । गङ्गाधर शास्त्री गुणे १-३ भाग ७-५०
१३४ आयुर्वेदीय औषधि विज्ञान अथवा रस-वीर्य-विपाक-प्रभाव विज्ञान । ले० पु० स० हिर्लेकर (मराठी) २-००
१३५ आयुर्वेदीय औषधि-संशोधन । डा० धामणकर (हिन्दी) १-००
१३६ आयुर्वेदीय औषधि-संशोधन । (मराठी) १-००
१३७ आयुर्वेदीय क्रियाशारीर । रणजीतराय । भाषा । परिवर्द्धित सं० १३-००
१३८ आयुर्वेदीय दन्तव्याधिविज्ञान । वैद्य किशोरदास । भाषा २-७५
१३९ आयुर्वेदीय दन्त स्वास्थ्य विज्ञान । वैद्य किशोरदास २-००
१४० आयुर्वेदीय दन्त चिकित्सा विज्ञान । वैद्य किशोरदास ३-२५
१४१ आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान । रणजीतराय । भाषा ६-२५
१४२ आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान । चिं० ग० काशीकर । संस्कृत समाप्त
१४३ आयुर्वेदीयपदार्थविज्ञानम् । बलवन्तशर्माकृत हिन्दी टीका सहित ४-००
१४४ आयुर्वेदीय-परिभाषा । अभिनव-प्रकाशिका-हिन्दी टीका सहित १-२५
१४५ आयुर्वेदीय पारिवारिक चिकित्सा । विद्यानारायण शास्त्री । भाषा २-५०
१४६ आयुर्वेदीय यन्त्रशस्त्र परिचय । आचार्य सुरेन्द्रमोहन बी. ए. १-७५

१४७ आयुर्वेदीय विश्वकोष। प्रथम भाग दुष्प्राप्य। २–३ भाग २०–००
१४८ आयुर्वेदीयव्याधिविज्ञान। भाग १–४ (गुजराती) वैद्य चंद्रशेखर ठक्कुर ७–५०
१४९ आयुर्वेदीय व्याधिविज्ञान। (१–२ भाग) वैद्य यादव जी। भाषा ८–५०
१५० आयुर्वेदीय सिद्धचिकित्सा। रामनारायण श्रोत्रिय। भाषा २–००
१५१ आयुर्वेदीय सिद्धभेषजमणिमाला। वेद व्रत शर्मा। भाषा २–५०
१५२ आयुर्वेदीयहितोपदेशः। वैद्य रणजीतराय कृत हिन्दी अनुवाद सहित ३–२५
१५३ आरोग्य की कुंजी। महात्मा गांधी। भाषा ०–५०
१५४ आरोग्य चिन्तामणिः। दामोदर भट्टाचार्य कृत। संस्कृत मूल ६–००
१५५ आरोग्य दर्पण। चन्द्रशेखर गोपालजी ठक्कुर (गुजराती) २–००
१५६ आरोग्य दर्शनम्। पंचभूत त्रिदोषबोध समेत। धीरजराम दयाशङ्कर शास्त्री। संस्कृत ०–५०
१५७ आरोग्यप्रकाश। रामनारायणशर्मा। भाषा ३–००
१५८ आरोग्य बाला। प्रेमलता अग्रवाल। ,, ०–४०
१५९ आरोग्यलेखाञ्जलि। श्री केदारनाथ। ,, १–००
१६० आरोग्य व आहाररहस्य। वै. किशोरदास भा. गुप्ता। भाषा २–५०
१६१ आरोग्यविज्ञान। डा० लक्ष्मीनारायण। भाषा २–००
१६२ आरोग्यविधान। जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। ,, ८–००
१६३ आरोग्य शास्त्र। डा० विश्वनाथ भावे। भाषा २–५०
१६४ आरोग्य शास्त्र। डा० फुन्दनलाल। भाषा ३–००
१६५ आरोग्य शिक्षा। मुरलीधर शर्मा। ,, ०–५०
१६६ आरोग्यसाधन। म० गांधी। भाषा ०–८०
१६७ आरोग्यसूत्रावली। जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। भाषा १–२५
१६८ आरोग्यासने। डॉ० र० कृ० गर्दे। मराठी २–५०
१६९ आर्गेनन। भट्टाचार्य। भाषा ४–००
१७० आर्गेनन। डा० सुरेश। भाषा ४–००
१७१ आर्गेनन (होमियो) डा० टण्डन। भाषा २–७५
१७२ आर्तव दोष और चिकित्सा। शीलवती देवी वैद्या। भाषा ०–५०
१७३ आर्य स्वास्थ्य विज्ञान। (बंगला) प्रभाकर चट्टोपाध्याय १–२ भाग ४–५०
१७४ आसन। सातवलेकर। भाषा २ ५०

१७५ आसन चिकित्सा । ले० हरकिशनदास डी० गांधी । भाषा ४-००
१७६ आसनों के व्यायाम (सचित्र) ब्रह्मचारी वेद व्रत । भाषा ०-६०
१७७ आसव अरिष्ट । सत्यदेव विद्यालङ्कार २-५०
१७८ आसव विज्ञान । हरिशरणानन्द । भाषा १-५०
१७९ आसवारिष्टविज्ञान । श्री पक्षधर झा यन्त्रस्थ
१८० आसवारिष्ट-संग्रहः । हिन्दी टीका सहितः १-७५
१८१ आहार । रामरक्ष पाठक । भाषा ५-००
१८२ आहार । सर रावर्ट मैक्कैरिसन । भाषा २-२५
१८३ आहार । लक्ष्मीनारायण शर्मा । भाषा १-५०
१८४ आहार और आरोग्य । ज्योतिर्मयी ठाकुर । भाषा ३-००
१८५ आहार और आहार सुधार । डा० केदारनाथ सिंह । भाषा १-२५
१८६ आहार और स्वास्थ्य । प्रथमभाग । डा० हीरालाल । भाषा ४-००
१८७ आहार चिकित्सा । एरनोल्ड इहरिट १-५०
१८८ आहार चिकित्सा । डा० हरकिशनदास गांधी ४-००
१८९ आहार संयम और स्वास्थ्य । भगवती प्रसाद । भाषा ३-००
१९० आहार सूत्रावली । केदारनाथ पाठक । भाषा ०-५०
१९१ इंजेक्शन (सचित्र) डा० शिवनाथ खन्ना । भाषा १०-००
१९२ इंजेक्शन गाईड । डा० एस० पी० कुमार । भाषा ५-००
१९३ इंजेक्शनचिकित्सा । डा० राधावल्लभ पाठक ,, ५-००
१९४ इंजेक्शन चिकित्सा प्रणाली । डा० ए० एल० वर्मा । भाषा ३-००
१९५ इंजेक्शनतत्त्वप्रदीप । डा० गणपति । भाषा ५-००
१९६ इंजेक्शनबुक । डा० द्वारिकाप्रसाद गोयल । भाषा ५-००
१९७ इंजेक्शन विज्ञानाङ्क । १-३ भाग । भाषा १०-००
१९८ इच्छाशक्ति (मानस आरोग्य प्रदर्शिका) डा. श्यामदास प्रपन्नाश्रमी । भाषा १-२५
१९९ इच्छाशक्ति । जॉन कनैडी । शैलेन्द्रकुमार पाठक अनुवादित १-२५
२०० इनफ्लुएञ्जा-वात-श्लैष्मिक ज्वर । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल ०-५६
२०१ इन्द्रायण (गड्डुम्बा) के गुण तथा उपयोग । सं०-रामस्नेही । भाषा ०-८७
२०२ इन्द्रायणगुणविधान । डा० गणपति सिंह । भाषा ०-६२

२०३ इलाजुलगुरबा । (यूनानी) । भाषा ३–००, ४–००, ५–००
२०४ उठो ! आत्मोन्नति के पथ पर । स्वामी कृष्णानन्द । भाषा १–००
२०५ उथले जल के पक्षी । जगपति चतुर्वेदी । भाषा २–००
२०६ उपचारपद्धति और पथ्य । रवीन्द्र शास्त्री ,, ०–८७
२०७ उपदंशचिकित्सासंग्रहः । गणेशदत्त कृत हिन्दी टीका सहित ०–७५
२०८ उपदंश तिमिर (गर्मी) नाशक । हिन्दी ०–३१
२०९ उपदंश विज्ञान । बालकराम शुक्ल । भाषा १–००
२१० उपदंश सूजाक चिकित्सा । भाषा १–००
२११ उपयोगी नुसखे तरकीबें और हुनर । डा. गोरखप्रसाद,
डा. सत्यप्रकाश । भाषा ३–५०
२१२ उपयुक्त ॲलोपॅथिक औषधें । प्रभाकर शंकर गुप्ते । मराठी १–५०
२१३ उपवासचिकित्सा । वी० मैकफेडेन । अनु०–रामचन्द्र वर्मा । भाषा २–००
२१४ उपवास-प्रयोग और लाभ । ज्योतिर्मयी ठाकुर । भाषा [illegible]–००
२१५ उपवास से लाभ । विट्ठलदास मोदी । भाषा १–५०
२१६ उषःपान । लक्ष्मीप्रसाद पाण्डेय । भाषा ०–७५
२१७ ऊर्ध्वजत्रुजरोगाङ्क । भाषा ४–००
२१८ ऊर्ध्वाङ्गचिकित्सा । जगन्नाथप्रसाद शुक्ल ३ भाग में । भाषा ७–७५
पृथक् पृथक् भाग (१) कर्णरोग विज्ञान २–५०
(२) नासारोग विज्ञान २–७५
शेष भाग समाप्त (३) मुखरोग विज्ञान २–५०
२१९ ऋद्धिखण्ड–वादिखण्ड । नित्यनाथ सिद्ध विरचित । गोंडल ४–००
२२० एकौषधिगुणविधान । डा० गणपति सिंह । भाषा १–८७
२२१ एकौषधि चिकित्सा । अमोलचन्द्र शुक्ला । भाषा ५–००
२२२ एनाटामी तथा फिजियालोजी । राधावल्लभ पाठक । भाषा ५–००
२२३ एनीमा और कैथेटर । भाषा ०–३७
२२४ एलेन्स की नोट्स (आफ दी लिडिंग रेमिडीज़) । भट्टाचार्य । भाषा ५–५०
२२५ एलोपेथिक–आयुर्वेदिक गाइड । डा० राजकुमार द्विवेदी । भाषा १०–००
२२६ एलोपैथिक औषधें । डॉ० प्रभाकर शंकर गुप्ते १–५०

२२७ एलोपेथिक चिकित्सा विज्ञान । डा० विजयकृष्ण सिन्हा । भाषा ३-००
२२८ एलोपेथिक चिकित्सा । डा० सुरेश । भाषा १२-००
२२९ एलोपेथिक निघण्टु । डा० रामनाथ वर्मा । भाषा १२-००
२३० एलोपेथिकपाकेटगाइड । डा० सुरेश ,, ३-००
२३१ एलोपैथिक पेटेण्ट चिकित्सा । अयोध्यानाथ पाण्डेय । भाषा २-००
२३२ एलोपेथिक पेटेण्ट प्रेस्क्राइबर । डा० रमानाथ द्विवेदी ७-००
२३३ एलोपेथिक प्रेक्टिस या चिकित्सा । डा० भवानी प्रसाद । भाषा ७-५०
२३४ एलोपेथिक मिक्स्चर्स तथा विशिष्ट चिकित्सा निर्देश । भाषा २-००
२३५ एलोपेथिक मेटेरिया मेडिका । डा० शिवदयाल गुप्त । भाषा १२-००
२३६ एलोपेथिक सफल औषधियां । डा० शिवदयाल गुप्त । भाषा ३-५०
२३७ एलोपेथिकसार व सिद्धयोग संग्रह । डा० ओंकारदत्त शर्मा १०-००
२३८ एलोपेथिक सार संग्रह । डा० डी० के० जैन । भाषा ६-००
२३९ एलोपैथिक योगरत्नाकर । डा० रामनाथ वर्मा । भाषा १३-००
२४० ओषधिक्रिया । हिन्दी टीका सहित १-००
२४१ ओषधिगुणधर्मविवेचन । १-२ भाग । कृष्ण प्रसाद । भाषा २-००
२४२ ओषधि-पीयूष । ज्वाला प्रसाद । भाषा १-५०
२४३ ओषधिरत्नमाला । भाषा ०-३७
२४४ ओषधि-विज्ञान । १-२ भाग । धर्मदत्त । भाषा ३-००
२४५ ओषधिसंग्रह कल्पवल्ली । भाषा ०-२५
२४६ औपसर्गिक रोग । प्रथम भाग । डा० घाणेकर । भाषा १०-००
२४७ औरतों और बच्चों के सब रोगों का इलाज । भाषा १-५०
२४८ औषधगुणधर्म विज्ञान । हरिशरणानन्द ,, १-००
२४९ औषध-गुण-धर्मविवेचन । कालेड़ा । भाषा । अजिल्द ३-००
सजिल्द ४-५०
२५० औषधसार । भाषा ०-५०
२५१ औषधसारसंग्रह । गोपाल प्रसाद कौशिक । भाषा १-००
२५२ औषधसंग्रहकल्पवल्ली । राधाकृष्ण । भाषा ०-५०
२५३ औषध स्वावलम्बन (स्वास्थ्य योजना) कविराज विद्यानारायण शास्त्री २-००
२५४ औषधियों का भण्डार-अनुभूतयोगचिन्तामणि ।
अमोलचन्द्र शुक्ल । भाषा १२-००

२५५ औषधि विज्ञान। (भैषजिकी तथा चिकित्सा)। हेल ह्वाईट। (Pharmacology and Therapeutices) हिन्दी अनुवाद १५-००
२५६ औषधी बगीचा व बटवा। मराठी ०-३७
२५७ औषधी शास्त्र। १-२ भाग। मराठी ६-५०
२५८ औषधें किंवा शस्त्रप्रयोग। आपाजी विनायक जोशी। मराठी ४-००
२५९ कटेली (स्वर्णक्षीरी) के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा ०-७५
२६० कठिन रोगों की सफल चिकित्सा। प्रथम भाग। भाषा ०-५०
२६१ कद्दू के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा ०-६२
२६२ कफपरीक्षा। रमेशचन्द्र वर्मा। भाषा १-२५
२६३ कब्ज और मलावरोध। महेन्द्रनाथ। भाषा ०-५०
२६४ कब्ज कारण और निवारण। महावीरप्रसाद पोद्दार। भाषा १-००
२६५ कब्ज या कोष्ठबद्धता। डा० सुरेशप्रसाद। भाषा ०-७५
२६६ कब्ज या कोष्ठबद्धता। डा० वालेश्वरप्रसाद सिंह। भाषा १-००
२६७ कम्पाउंडर्ज गाइड नर्सिंग शिक्षा सहित। द्वारकाप्रसाद। भाषा ३-००
२६८ कम्पाउन्डरी शिक्षा (बृहत्)। डा० रा० कु० दीक्षित। भाषा २-५०
२६९ कम्पाउन्डरी शिक्षा, रोगीपरिचर्या, विषविज्ञान तथा चिकित्सा-प्रवेश। आर० सी० भट्टाचार्य ८-००
२७० करावादीन इहसानी। भाषा ३-००
२७१ करावादीन कादरी ४ भाग। भाषा ४-००
२७२ करावादीन शिफाई। भाषा २-००
२७३ करिकल्पलता। छन्दोवद्ध भाषा। केशव सिंह जी २-५०
२७४ कर्णरोग-विज्ञान। जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। भाषा समाप्त
२७५ कल्प-पञ्चकर्म-चिकित्साङ्क। भाषा ४-००
२७६ कल्याणकारक। श्री उग्रादित्याचार्यकृत। हिन्दी टीका सहित १०-००
२७७ कहानी अस्पताल। (इसमें समग्र आयुर्वेद के सिद्धान्त हैं) ५-५०
२७८ काकचण्डीश्वरकल्पतन्त्रम्। अति प्राचीन ग्रन्थ। हिन्दी टीका सहित २-००
२७९ कामकला। हिन्दी टीका सहित। ले० विजय बहादुर सिंह ४-५०

२८० कामकुंज । सन्तराम बी. ए. । भाषा २-५०
२८१ कामकुंज । विजय बहादुरसिंह । भाषा टीका ८-००
२८२ कामकुंजलता । संस्कृत । मूल यन्त्रस्थ
२८३ काम-प्रेम और परिवार । जैनेन्द्र कुमार । भाषा ३-००
२८४ कामरत्नम् । नित्यनाथ विरचित। ज्वाला प्रसाद कृत हिन्दी टीका सहित ५-००
२८५ कामविज्ञान । देवीचन्द्र वेरी ५-००
२८६ काम विज्ञान । दीनानाथ व्यास । भाषा ३-७५
२८७ काम विज्ञान अर्थात् रसायन और बाजीकरण । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा २-००
२८८ कामसूत्रम् । यशोधरकृत जयमङ्गला संस्कृत व्याख्या सहित १०-००
२८९ कामसूत्रम् । यशोधरकृत जयमंगला संस्कृत व्याख्या हिन्दी अनुवाद सहित २०-००
२९० कामसूत्रम् । 'जयमंगला' टीका सहित विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सहित । व्याख्याकार-देवदत्त शास्त्री यन्त्रस्थ
२९१ कामसूत्रम् । प्रमोद बिहारी कृत हिन्दी टीका सहित ५-००
२९२ कामसूत्र । हिन्दी भाषा मात्र । कविराज विपिनचन्द्र बन्धु ५-००
२९३ कामसूत्र । कांशी राम चावला । भाषा ३-००
२९४ कायचिकित्सा । कविराज रामरक्ष पाठक । भाषा १२-५०
२९५ कायचिकित्सा । डा० गंगासहाय पाण्डेय शीघ्र प्रकाशित होगी
२९६ कायचिकित्साङ्क । आचार्य रघुवीरप्रसाद द्विवेदी । भाषा ८-५०
२९७ कायाकल्प । संस्कृत मूल अंग्रेजी टीका जीवराम कालिदास शास्त्री ०-५०
२९८ कायाकल्प । संस्कृत मूल, गुजराती अनुवाद ०-५०
२९९ कायाकल्पयोग । नरेन्द्रशास्त्री १-२५
३०० कालरा या हैजा । डा० टण्डन । भाषा २-००
३०१ काश्यपसंहिता । (वृद्धजीवकीयतन्त्र) विद्योतिनी हिन्दी टीका, राजगुरु हेमराज कृत विस्तृत संस्कृत-हिन्दी उपोद्घात सहित १६-००
३०२ किंग होमियो मिक्सचर एवं पेटेन्ट मेडीशन गाइड । डॉ० शंकरलाल गुप्ता-डॉ० सरस्वतीनारायण गुप्ता । प्रथम भाग ६-००
३०३ किंग होमियो मिक्सचर्स । शंकरलाल गुप्ता । भाषा २-५०

३०४ किशमिश चिकित्सा । भाषा ०-७५
३०५ किशोर रक्षा और ब्रह्मचर्य । रविनाथ शास्त्री । भाषा ०-७०
३०६ किशोरावस्था । गोपालनारायण सेन । भाषा २-००
३०७ कीकर गुणविधान । अब्दुल्ला । भाषा ०-५०
३०८ कीटाणुओं की कहानी । ले० जगपति चतुर्वेदी । भाषा २-००
३०९ कुचिमारतन्त्रम् । हिन्दी टीका सहित ०-५०
३१० कुट्टनीमतम् । दामोदरगुप्त कृत । मधुसूदन कौल संपादित । संस्कृत ३-००
३११ कुट्टनीमतम् । दामोदर गुप्त कृत । हिन्दी व्याख्या भूमिका परिशिष्टादि सहित ६-००
३१२ कुट्टनीमतम् । जगन्नाथ पाठक कृत हिन्दी टीका सहित ७-५०
३१३ कुमारतन्त्रम् । रावणकृतम् । हिन्दी टीका सहित ०-७५
३१४ कुल्लियात । हकीम दलजीत सिंह । भाषा १-२५
३१५ कूटमुद्गरः । हिन्दी टीका सहित ०-२५
३१६ कूपीपक्वरसनिर्माणविज्ञान । हरिशरणानन्द । भाषा ५-००
३१७ केलिकुतूहलम् । म. म. मथुराप्रसाद दीक्षित कृत । मूल, संस्कृत ३-००
३१८ केलिकुतूहलम् । हिन्दी टीका सहित ४-००
३१९ कैंट मेटेरिया मेडिका । १-२ भाग । भट्टाचार्य । भाषा २४-००
३२० कैंसर चिकित्सा । (बंगला) प्रभाकर चट्टोपाध्याय ५-००
३२१ कोकशास्त्र । बड़ा सजिल्द । भाषा ४-००
३२२ कोकसार । आनंद कृत । भाषा पद्य १-००
३२३ कोकसार वैद्यक सचित्र । कोकपण्डित । हिन्दी टीका सहित ५-००
३२४ कोष्ठबद्धता । अशोक वेदालङ्कार । भाषा १-२५
३२५ कोष्ठबद्धता और उसके विनाश के अमोघ उपाय । भाषा १-२५
३२६ कौड़ी के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०-७५
३२७ कौमारभृत्यम् । (नव्य-बालरोग सहित) आयुर्वेदाचार्य रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस., भूमिका ले० आचार्य वैद्य यादवजी त्रिकमजी ८-००
३२८ क्लिनिकल पैथोलोजी । (बृहत् मल-मूत्र-रक्तादि परीक्षा) सचित्र । डा० शिवनाथ खन्ना । भाषा १०-००
३२९ क्लीनिकल मेडिसिन । दूसरा भाग मात्र । अत्रिदेवगुप्त । भाषा १२-५०

३३० काथमणिमाला । हिन्दी टीका सहित १-५०
३३१ क्षय एटले शुं । डा० प्राणजीवनमेहता (गुजराती) ०-५०
३३२ क्षयचिकित्सक । रामनारायण दूबे । भाषा २-००
३३३ क्षयरोगचिकित्सा । (मराठी) २-५०
३३४ क्षारनिर्माणविज्ञान । हरिशरणानन्द । भाषा ०-५०
३३५ खर्पर । जगन्नाथप्रसाद शुक्ल । भाषा ०-३१
३३६ खाद्य और स्वास्थ्य । डा० ओंकारनाथ । भाषा ०-७५
३३७ खाद्य की नयीविधि । कुलरञ्जन मुखर्जी । भाषा ३-००
३३८ खोराक ना तत्त्वो । बापालाल ग० वैद्य (गुजराती) ४-००
३३९ गङ्गयति निदान । भाषा ६-००
३४० गजशास्त्र । पालकाप्य मुनि विरचित । सचित्र १२-५०
३४१ गजशास्त्रसार पक्षी लक्षण आणि चिकित्सा । (बाजनामा) व
चित्ता वहागास चिकित्सा (यूजनामा)
Text in Marathi & English translation. Rs. 4-00
३४२ गर्भपात और परिवार नियोजन । डॉ० सुरेन्द्रनाथ गुप्त । भाषा ०-२५
३४३ गर्भरक्षा तथा शिशु-परिपालन । (सचित्र) डा. मुकुन्दस्वरूप वर्मा ४-५०
३४४ गर्भवती स्त्री और प्रसव पूर्व व्यवस्था । डा० सुरेन्द्र नाथ । भाषा २-५०
३४५ गर्भसूत्र । कांशी राम चावला । भाषा ३-००
३४६ गर्भस्थ शिशु की कहानी । प्रो० नरेन्द्र । भाषा २-५०
३४७ गर्भस्थ शिशु की कहानी । डा० लक्ष्मीशंकर । भाषा २-००
३४८ गाँवों में औषधरत्न । भाषा प्र० भाग रफ २-०० ग्लेज ३-५०
द्वि० भाग अजिल्द ३-५० सजिल्द ५-००
तृतीय भाग अजिल्द ४-५० सजिल्द ६-००
३४९ गाइड टू कम्पाउन्डर्स एग्जामिनेशन । यू. एम. चौहान । भाषा ६-००
३५० गाजर । वैद्य श्यामलाल सुहृद । भाषा ०-१२
३५१ गाजर के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०-६२
३५२ गार्हस्थ्य-शास्त्र । लक्ष्मीधर वाजपेयी । भाषा २-००
३५३ गुडपाक विज्ञान । भाषा १-००
३५४ गुण विज्ञान । जगन्नाथप्रसाद शुक्ल । भाषा २-५०

३५५ गुणों की पिटारी । स्वामी परमानंद । भाषा २-००
३५६ गुप्तयोग रत्नावली । डा० गणपति सिंह ,, २-५०
३५७ गुप्त रोग चिकित्सा । पं० ऋषिकुमार शर्मा । भाषा १-२५
३५८ गुप्तरोगचिकित्सा । श्यामलाल 'सुहृद' । भाषा ४-००
३५९ गुप्तसिद्धप्रयोगाङ्क । १ से ४ भाग । भाषा १८-५०
३६० गुलाब के गुण तथा उपयोग । अमोलचन्द्र शुक्ला । भाषा ०-८७
३६१ गूलरगुण-विकाश (आरोग्य-प्रकाश) वैद्यरत्न चन्द्रशेखरधरमिश्र । भाषा १-००
३६२ गृहपरिचर्या । (Home Nursing) भाषा २-००
३६३ गृह प्रबन्ध तथा मातृकला । मनोहरलाल । भाषा १-००
३६४ गृहवास्तुचिकित्सा । पं० किशोरीदत्त शास्त्री । भाषा १-००
३६५ गृहविज्ञान एवं व्यावहारिक प्रयोग । कालेड़ा ,, ०-५०
३६६ गृहवैद्य अथवा क्षार चिकित्सा । डॉ० र० कृ० गर्दे । मराठी ३-५०
३६७ गृहस्थ सूत्र । कांशी राम चावला । भाषा ६-००
३६८ गृहस्थी जीवन के लिए अद्भुत दर्पण सांसारिक आनंद । (सचित्र) टेकचन्द कौशल । भाषा २-५०
३६९ गोपालनशास्त्र और पशुरोगों की चिकित्सा । गिरीशचन्द्र । भाषा २-५०
३७० गोरसादि ओषधि । शंकरदाजी पदे । भाषा ०-१२
३७१ ग्रन्थि और ग्रन्थि प्रणाली के रोग । महेन्द्रनाथ पाण्डेय । भाषा १-००
३७२ ग्राम का वैद्य । श्री कृष्णजसराय । भाषा १-२५
३७३ ग्रामीणों का स्वास्थ्य । केदारनाथ पाठक । भाषा १-००
३७४ ग्राम्य चिकित्सा । श्री केदारनाथ । भाषा ०-६२
३७५ घर का वैद्य । सम्पादक—अमोलचन्द्र शुक्ला । भाषा ५-००
३७६ घर का वैद्य । राजेश्वरी शर्मा । भाषा ५-००
३७७ घरका वैद्य-गरीबों का इलाज । भाषा ०-९५
३७८ घरगथ्थु वैद्यक । बापालाल ग० वैद्य (गुजराती) ५-५०
३७९ घर में वैद्य अर्थात् सब रोगों की बेदाम औषधियाँ । भाषा १-००
३८० घरेलू इलाज । रमेश वर्मा । भाषा १-००
३८१ घरेलू कुदरती इलाज । केदारनाथ गुप्त । भाषा १-००
३८२ घरेलू चिकित्सा । भाषा । कांशी १-५०

३८३ **घरेलू डाक्टर** । डा. जी. घोष, डा० उमाशङ्कर, डा० गोरखप्रसाद । भाषा ४-००
३८४ **घरेलू सस्ती दवायें** । भाषा ३-००
३८५ **घाव की चिकित्सा** । श्यामसुन्दर शर्मा । भाषा १-००
३८६ **घीकवार (गवार पट्ठा) के गुण तथा उपयोग** । अमोलचन्द्र शुक्ल २-५०
३८७ **घृत (घी) के गुण तथा उपयोग** । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०-८७
३८८ **घृतगुण विधान** । डा० गणपति । भाषा ०-५०
३८९ **चक्रदत्तः** । तत्त्वचन्द्रिका संस्कृत व्याख्या सहित ७-००
३९० **चक्रदत्तः** । श्री जगदीश्वर प्रसाद कृत नवीन वैज्ञानिक **भावार्थसंदीपिनी विस्तृत हिन्दी टीका टिप्पणी परिशिष्ट** सहित । अजिल्द १०-००
कपड़े की पक्की जिल्द १२-००
३९१ **चरकचिकित्साङ्क** । भाषा ८-५०
३९२ **चरक मुनि** । वैद्य सोमदेव । भाषा ०-५०
३९३ **चरकसंहिता** । मूल ७-००
३९४ **चरकसंहिता** । मूल । भागीरथी टिप्पणी सहित ।
चिकित्सादि समाप्ति पर्यन्त । द्वितीय भाग ३-००
३९५ **चरकसंहिता** । सविमर्श 'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्या सहित ।
व्याख्याकार : पं० काशीनाथ शास्त्री, डॉ० गोरखनाथ चतुर्वेदी ।
सम्पादक : पं० राजेश्वरदत्त शास्त्री, पं० यदुनन्दन उपाध्याय,
डा० गंगासहाय पाण्डेय, पं० ब्रह्मशंकर मिश्र आदि । १-२ भाग
संपूर्ण ३६-००
आरंभ से इन्द्रियस्थान पर्यन्त प्रथम भाग १६-००
चिकित्सास्थान से समाप्ति पर्यन्त द्वितीय भाग ।
डा० बनारसीदास गुप्त कृत विस्तृत परिशिष्ट सहित २०-००
३९६ **चरकसंहिता** । चक्रपाणिदत्त कृत संस्कृत टीका सहित २२-००
३९७ **चरकसंहिता** । आयुर्वेददीपिका-जल्पकल्पतरु संस्कृत व्याख्याद्वयसहित ३०-००
३९८ **चरकसंहिता** । अंग्रेजी-हिन्दी-गुजराती-अनुवादसहित १-६ भाग
जामनगर ७५-००
३९९ **चरकसंहिता का अनुशीलन** । अत्रिदेव गुप्त । भाषा २-००
४०० **चरकसंहिता** तथा **काश्यपसंहिता का निर्माणकाल** ।
वैद्य श्रीरघुवीरशरण शर्मा । भाषा २-००

४०१ चर्मरोगचिकित्सा । डा० प्रियकुमार चौबे २-००
४०२ चर्या अंक । भाषा ३-००
४०३ चर्याचन्द्रोदयः । हिन्दी टीका ४-२५
४०४ चाय विज्ञान । ०-०६
४०५ चारु चिकित्सा । (सिद्ध प्रयोग) गोपीनाथ गुप्त । उत्तरार्ध । भाषा ३-००
४०६ चिकित्सक के कर्तव्य । मदनमोहनशर्मा संगृहीत । भाषा २-५०
४०७ चिकित्साकलिका । तीसटाचार्यकृत मूल २-००
४०८ चिकित्सा की कुञ्जी । भाषा २-२५, २-५०
४०९ चिकित्सा कौमुदी उर्फ सुनवाई चा बरथ । मराठी २-००
४१० चिकित्सा चन्द्रोदय । हरिदास वैद्य १-७ भाग । भाषा ५२-००
४११ चिकित्सा ज्ञान संग्रह । (मेडिसन) राधावल्लभ पाठक । भाषा ५-००
४१२ चिकित्साञ्जनम् । हिन्दी टीका सहित १-१०
४१३ चिकित्सातत्त्वप्रदीप । भाषा प्रथम भाग अजिल्द ९-०० सजिल्द ११-००
द्वितीय भाग अजिल्द ८-०० सजिल्द ९-५०
४१४ चिकित्सा तिलकम् । श्रीनिवासकृत । संस्कृत ६-२५
४१५ चिकित्सा दर्पण । स्वामी रामानन्द सरस्वती । भाषा ४-००
४१६ चिकित्सादर्श । वैद्य राजेश्वरदत्त शास्त्री । १-२ भाग । भाषा १०-५०
४१७ चिकित्साप्रभाकर । १-४ भाग । ए. पी. ओगले । मराठी २२-५०
४१८ चिकित्सामञ्जरी । रघुनाथ पंडित मनोहर कृत । तत्कृत नाड़ी
ज्ञानविधि सहित । एस० एल० कात्रे सम्पादित । संस्कृत ५-००
४१९ चिकित्सा विज्ञान कोष । एस० सी० सेन गुप्त ७-५०
४२० चिकित्सा शब्दकोश । (चौखम्बा मेडिकल डिक्शनरी) शीघ्र प्राप्त होगा
४२१ चिकित्सा समन्वयांक । भाषा ६-००
४२२ चिकित्सासारसंग्रहः । (वङ्गसेन) । मूल मात्र ६-२५
४२३ चिकित्सासारसंग्रहः (वङ्गसेन) । हिन्दी टीका सहित १८-००
४२४ चिकित्सासोपान । विजयकान्तराय चौधुरी । भाषा २-७५
४२५ चिकित्सोपदेशिका । पं० गणेशदत्त । भाषा १-००
४२६ चीरफाड़ज्ञानसंग्रह । (सर्जरी) डा० राधावल्लभ पाठक । भाषा ६-००
४२७ चूर्णभण्डार । रामनारायन शर्मा वैद्य । भाषा १-२५

४२८ चौसठ भारतीय औषधियाँ एवं उसके गुण। इन्द्रदेवनारायण सिंह ०-२५
४२९ छांगाणी अभिनन्दन ग्रन्थ । भाषा ६-००
४३० छाछ के गुण तथा उपयोग । अमोलचन्द्र शुक्ल । भाषा ०-७५
४३१ छायालोक की रहस्यनगरी । यक्ष्मा आदि रोग किन्हीं तस्वीरों से फैल रहे हैं इसका वर्णन । भाषा १-२५
४३२ जटिल रोगों की सफल चिकित्सा । वैद्य वासुदेव कृत । भाषा २-००
४३३ जड़ी बूटी विज्ञान । (महात्माओं की गुप्त बूटियाँ) । भाषा २-५०
४३४ जननी और शिशु । भाषा ०-७५
४३५ जननेन्द्रिय के रोग । भट्टाचार्य । भाषा १-५०
४३६ जननेन्द्रीय रोग चिकित्सा । डा० प्रियकुमार चौबे । भाषा १-७५
४३७ जन स्वास्थ्य विज्ञान । प्रकाशचन्द्र गौड़ ४-००
४३८ जन्तुविज्ञान । चम्पतस्वरूप गुप्त । भाषा १२-००
४३९ जन्तु विज्ञानकोष । चम्पत स्वरूप गुप्त । भाषा ५-५०
४४० जन्मनिरोध (सचित्र) । भाषा ६-००
४४१ जर्राहीप्रकाश (चारों भाग) । भाषा ३-५०
४४२ जलचर पक्षी । जगपति चतुर्वेदी । भाषा २-००
४४३ जलचिकित्सा । १-३ भाग । राखालचन्द्र चट्टोपाध्याय । भाषा ५-५०
४४४ जलचिकित्सा । सुरेशप्रसाद शर्मा ०-५०
४४५ जलचिकित्सा विज्ञान । देवराज विद्यावाचस्पति । भाषा २-००
४४६ जार फोर्टी इयर प्रैक्टिस । भट्टाचार्य । भाषा ८-००
४४७ जीने की कला । विट्ठलदास मोदी । भाषा १-२५
४४८ जीने की कला । सन्तराम बी० ए० ३-५०
४४९ जीने के लिए । जगपति चतुर्वेदी । भाषा २-००
४५० जीवजगत । (सचित्र) सुरेश सिंह १४-००
४५१ जीवतिक्ति विमर्श । (Vitamins) डा० हरिश्चन्द्र । भाषा १-२५
४५२ जीवतिक्ति विमर्श या विटामिन तत्त्व । डॉ० पद्मनारायण सिंह ५-००
४५३ जीवनतत्त्व । महेन्द्रनाथ पाण्डेय । भाषा १-५०
४५४ जीवनतत्त्व । रामचरन मिश्र । भाषा ०-१६

४५५ **जीवनरक्षा** । हनुमान प्रसाद शर्मा । भाषा १-२५
४५६ **जीवनरसायनचिकित्साशास्त्र** अथवा **शूश्लर साहब की बारह दवाइयाँ** । भाषा । अनुवादक डा० घाणेकर ५-५०
४५७ **जीवन विज्ञान** तथा **भूगर्भशास्त्र** । डा० उमाशंकर । भाषा ३-७५
४५८ **जीवरसायनकोश** । व्रजकिशोर ६-००
४५९ **जीवन विज्ञान अथवा कुण्डलिनी योग तत्त्व** । गोकुलचन्द कपूर । भाषा १-००
४६० **जीव विज्ञान की प्रारम्भिक पुस्तक** । बांकेविहारी लाल । भाषा २-५०
४६१ **जीव वृत्ति विज्ञान** । डा० महाजीत सहाय । भाषा १-५०
४६२ **जीवशास्त्र विज्ञान** । इ० थिलियम् । भाषा २-५०
४६३ **जीवाणु विज्ञान** । डा० घाणेकर । भाषा १०-००
४६४ **जीवानन्दम्** । आनन्दरायमखिप्रणीत। अत्रिदेव कृत हिन्दीटीका सहित ४-००
४६५ **जीवानन्दम्** । नारायणदत्त वैद्य कृत रसायन टिप्पणी सहित ३-००
४६६ **जुकाम** । महेन्द्रनाथ पाण्डेय । भाषा १-७५
४६७ **जुकाम चिकित्सा** । भाषा ०-२५
४६८ **जूजुत्सू वा जापानी कुश्ती** । भाषा ०-२५
४६९ **ज्ञानभैषज्यमंजरी** । हिन्दीटीका सहित ०-३७
४७० **ज्वर और फेफड़े के रोग** । भाषा ०-७५
४७१ **ज्वरचिकित्सा** । श्रीमहेन्द्रनाथ पाण्डेय । भाषा २-७५
४७२ **ज्वरचिकित्सा** । डा० अयोध्यानाथ पाण्डेय । भाषा २-००
४७३ **ज्वरचिकित्सासार** । शिवनाथ सिंह । भाषा १-३७
४७४ **ज्वरतिमिर नाशक** । रामप्रसाद कृत हिन्दीटीका सहित १-७५
४७५ **ज्वरमीमांसा** । हरिशरणानन्द । भाषा १-५०
४७६ **ज्वरविज्ञान** । कालेड़ा । भाषा अजिल्द ३-०० सजिल्द ४-५०
४७७ **ज्वरविवेचन (ज्वरनिदान चिकित्सा)** वैद्य लीलाधर शर्मा। भाषा १०-००
४७८ **टोटका चिकित्सा (टोटकाज्ञानविज्ञान)** अमोलचन्द्र शुक्ला। भाषा ०-७५
४७९ **टोटका विज्ञान** । केदारनाथ शर्मा । भाषा ०-३७
४८० **टोटका विज्ञान** । स्वामी कृत्यानन्द ,, २-५०
४८१ **डाक्टर शहद** । डा० गंगाप्रसाद गौड़ 'नाहर' ०-५६
४८२ **डाक्टरी गाइड (पाश्चात्य चिकित्सा पथ प्रदर्शक)** । भाषा ४-००

४८३ डाक्टरी चिकित्सार्णव । भाषा ४-५०
४८४ डाक्टरी नुस्खे । भाषा २-५०
४८५ डाक्टरी नुस्खे तथा नई पेटेण्ट दवायें । राधावल्लभपाठक । भाषा ५-००
४८६ डाक्टरी मेटेरिया मेडिका । भाषा ८-००
४८७ डाक्टरों के मत (होमियोपैथी) । डा० डी० पी० मैत्र ०-५०
४८८ ढाक के गुण तथा उपयोग । अमोलचन्द्रशुक्ल । भाषा ०-६५
४८९ तत्काल फलप्रद प्रयोग १-४ भाग । चन्द्रशेखर जैन शास्त्री । भाषा ७-७५
४९० तत्त्वों की खोज में । जगपति चतुर्वेदी । भाषा २-००
४९१ तन्त्रयुक्ति । संस्कृत १-००
४९२ तन्त्रसारसंग्रहः (विषनारायणीयं) सं. व्याख्या । नारायणकृत १५-२५
४९३ तन्दुरुस्ती और ताकत । भाषा ०-२५
४९४ तन्दुरुस्ती हजार नियामत है । डा० हीरालाल भाषा १-००
४९५ तन्दुरुस्ती हजार नियामत । भाषा ०-३७
४९६ तपेदिक । महेन्द्रनाथ पाण्डेय । भाषा ४-००
४९७ तपेदिक का प्राकृतिक इलाज । डा० एम० एल० पाण्डेय । भाषा ४-५०
४९८ तम्बाकू के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा १-२५
४९९ तम्बाखू जहर है । युगलकिशोर चौधरी । भाषा १-२५
५०० तरकारी तथा साग भाजी । राजेश गुप्त । भाषा ३-५०
५०१ तरबूज के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०-६२
५०२ तात्कालिक चिकित्सा । डा० शिवदयालगुप्त । भाषा १-२५
५०३ तात्कालिक चिकित्सा । ले० लालवहादुरलाल । भाषा १-७५
५०४ तापमापन (थर्मामीटर) डा० राजकुमार द्विवेदी । भाषा ०-२५
५०५ ताम्बूल मञ्जरी । जे० एस० पाण्डे सम्पादित । संस्कृत ५-६६
५०६ तिब्ब इहसानी । भाषा १-७५
५०७ तीन सौ लक्षण अथवा थ्री हंड्रेड एबसोल्यूट्स । डा० मैत्र ०-७५
५०८ तीमारदारी । भाषा ०-६०
५०९ तुवरक और चालमोग्रा । रमेश वेदी । भाषा ०-७५
५१० तुलनात्मक मेटेरिया मेडिका । भट्टाचार्य । भाषा २०-००
५११ तुलसी । श्री रमेश वेदी । भाषा २-००

५१२ तुलसीप्रकाश । अविनाश राय ब्रह्मभट्ट । भाषा ०-५०
५१३ तुलसी विज्ञान । (तुलसी के वैज्ञानिक २४३ परीक्षित प्रयोग) भाषा ०-५०
५१४ तैरना सीखना । भाषा ०-२५
५१५ तैलसंग्रह । विश्वनाथ द्विवेदी । भाषा समाप्त
५१६ त्रिदोषतत्त्वविमर्श । रामरक्ष पाठक । भाषा २-७५
५१७ त्रिदोष परिचय । वैद्य चन्द्रशेखर गोपालजी ठक्कुर (गुजराती) १-००
५१८ त्रिदोष परिज्ञान । जगन्नाथप्रसाद शुक्ल । भाषा ३-५०
५१९ त्रिदोषमीमांसा । हरिशरणानन्द । भाषा २-५०
५२० त्रिदोषविज्ञानम् । जामनगर । संस्कृत ३-२५
५२१ त्रिदोषविज्ञानम् । उपेन्द्रनाथदास कृत हिन्दी टीका सहित ३-००
५२२ त्रिदोषालोक । विश्वनाथ द्विवेदी । भाषा समाप्त
५२३ त्रिदोषावाद । भानुशंकरशर्मणा संगृहीत । संस्कृत टीका सहित ३-००
५२४ त्रिधातु सर्वस्व । विश्वेश्वर दयालु । भाषा २-५०
५२५ त्रिफला । श्री रमेश वेदी । भाषा ३-७५
५२६ त्रिफला के गुण तथा उपयोग । भाषा ०-७५
५२७ त्रिफला (त्रिफला से सर्व रोगों की चिकित्सा एक लाभ)। भाषा ०-५०
५२८ त्रिशतिः । शार्ङ्गधर कृत संस्कृत हिन्दी टीका सहित २-५०
५२९ थर्मामीटर (ताप-मापन) । डा० राजकुमार द्विवेदी । भाषा ०-२५
५३० दन्तरक्षा । भगवानदेव ०-२०
५३१ दन्त विज्ञान । गोपीनाथ । भाषा ०-३०
५३२ दन्तव्याधिविज्ञान । वै० किशोरदास । पूर्वार्द्ध । भाषा २-७५
५३३ दवा का भूत-औषधियों में अंधविश्वास । भाषा ०-३०
५३४ दशमूल । (सचित्र) रूपलाल वैश्य । भाषा ०-५०
५३५ दही के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा २-५०
५३६ दाई की शिक्षा । दत्तात्रय वासुदेव चाफेकर । अनुवादक-
वामन गणेश फाटक ४-००
५३७ दाँतों का डाक्टर या वैद्य । कालीचरन गुप्त । भाषा २-५०
५३८ दाँतों की चिकित्सा । वै० रामनारायण शर्मा । भाषा १-२५
५३९ दाम्पत्य जीवन । रामनारायण यादवेन्द्र । भाषा २-७५

५४० दाम्पत्य जीवन। विजयबहादुर सिंह ४-००
५४१ दिलगन चिकित्सा। भाषा ०-७५, १-५०
५४२ दीनजनचिकित्सा। वैद्य सत्यदेव। भाषा ४-००
५४३ दीर्घजीवन। विश्वेश्वर दयालु। भाषा १-००
५४४ दीर्घजीवन। गोपालराम गहमरी। भाषा ०-३७
५४५ दीर्घायु अर्थात् आरोग्य सूत्रावली। शंकर दाजी पदे। भाषा १-२५
५४६ दुग्ध कल्प। विट्ठलदास मोदी १-००
५४७ दुग्ध कल्प व दुग्ध चिकित्सा। डा० युगलकिशोर गुप्त। भाषा २-२५
५४८ दुग्धगुणविधान। डा० गणपति। भाषा १-००
५४९ दुग्ध चिकित्सा। महेन्द्रनाथ पाण्डेय ,, ४-००
५५० दुग्ध-तक्रादि चिकित्सा। भागवत शरण। भाषा १-००
५५१ दूध के गुण तथा उपयोग। सम्पादक—रामस्नेही। भाषा २-००
५५२ दूध-सचित्र। (समतोल आहार) डा. एन. एन. गोडबोले। भाषा ४-५०
५५३ दूध से सब रोगों का इलाज। डा० युगल किशोर गुप्त। भाषा १-००
५५४ दूध ही अमृत है। हनुमानप्रसाद गोयल। भाषा २-५०
५५५ दृष्ट फल चिकित्सा। (बंगला) प्रभाकर चटर्जी ४-००
५५६ देहात की दवाएँ। रमेश वेदी। भाषा ०-७५
५५७ देहातियों की तन्दुरुस्ती। केदारनाथ। भाषा ०-७५
५५८ देहाती अनुभूतयोग संग्रह १-२ भाग। अमोलचन्द्र शुक्ला। भाषा १३-००
५५९ देहाती इलाज। रमेश वेदी। भाषा १-००
५६० देहाती जड़ीबूटियाँ। संन्यासियों की गुप्त बूटियाँ। वैद्य रामनारायण शर्मा। भाषा ७-००
५६१ देहाती प्राकृतिक चिकित्सा। सम्पादक-अमोलचन्द्र शुक्ला। भाषा ५-००
५६२ देहाती सरल होमियोपैथिक चिकित्सा। भाषा २-५०
५६३ देहाती होमियोपैथिक इन्जेक्शन-गाइड। भाषा ५-००
५६४ दैनन्दिन रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा। कुलरंजन मुकर्जी ,, ४-००
५६५ दैनिकप्रयोगावली। गंगाशरण (औषध निर्माण विज्ञान सहित) भाषा ३-५०
५६६ दैवत संहिता (आयुर्वेद प्रकरण) ५-००
५६७ दोषकारणत्वमीमांसा। वैद्य प्रियव्रत शर्मा कृत हिन्दी अनुवाद सहित १-००

५६८ **द्रव्यगुण:** । चक्रपाणिदत्त कृत । ज्वालाप्रसाद कृत हिन्दी टीका सहित २–००

५६९ **द्रव्यगुण:** । चक्रपाणिकृत । शिवदासकृत संस्कृत टीका सहित १–५६

५७० **द्रव्यगुणमंजूषा** । आचार्य शिवदत्त शुक्ल । प्रथम भाग २–००

५७१ **द्रव्यगुण विज्ञान** । वैद्य प्रियव्रत शर्मा एम. ए., ए. एम. एस.
अभिनव श्रेष्ठ संस्करण (१–३ भाग, २ जिल्द में) १८–००
प्रथम भाग ५–५० द्वितीय तृतीय भाग १२–५०

५७२ **द्रव्यगुण विज्ञानम्** । वैद्य यादवजी कृत हिन्दी टीका सहित प्रथम भाग ४–७५

५७३ **द्रव्यगुणशतकम्** । त्रिमल्लभट्टकृत । शालग्राम कृत हिन्दी टीका सहित ०–६२

५७४ **द्रव्यसंग्रह** । अनु० मोहनलाल जैन शास्त्री । भाषा ०–५०

५७५ **द्रव्यसंग्रह विज्ञान** । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा १–२५

५७६ **धतूरा के गुण तथा उपयोग** । सम्पादक—रामस्नेही । भाषा १–१२

५७७ **धतूरा गुण विधान** । गणपति सिंह वर्मा ०–७५

५७८ **धनिया के गुण तथा उपयोग** । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०–५०

५७९ **धन्वन्तरि अंक** । भाषा-माता (चेचक) अंक १–००
भगन्दर अंक ०–७५ मधुमेह अंक १–००

५८० **धन्वन्तरिनिघण्टु:–राजनिघण्टु** । संस्कृत ६–५०

५८१ **धन्वन्तरि परिचय** । रघुवीर शरण शर्मा । भाषा २–५०

५८२ **धन्वन्तरि विशेषांक** । भाषा-कल्प एवं पंचकर्म चिकित्साङ्क ४–००
नारीरोगाङ्क ८–५० गुप्त सिद्ध प्रयोगांक १ से ४ भाग १८–५०
पुरुषरोगाङ्क ६–०० बालरोगाङ्क समाप्त भैषज्य कल्पनांक
१–२ भाग ८–५० माधवनिदानाङ्क ८–५० संक्रामक रोगाङ्क
१–२ भाग ५–०० सिद्धचिकित्साङ्क ४–०० इंजेक्शन विज्ञानांक ४–००
चिकित्सासमन्वयाङ्क ४–०० चरकचिकित्साङ्क ८–५०
प्रसूति विज्ञानाङ्क ८–५० काय चिकित्साङ्क ८–५०
रक्त रोगांक ४–०० यकृत प्लीहा रोगांक २–००
वनौषधि विशेषांक ८–५० विष चिकित्सांक ५–००

५८२(क) **धन्वन्तरिपूजा कथादर्श** । (भगवत् धन्वन्तरि के चित्रयुक्त) भाषा ०–८१

५८३ **धन्वन्तरिवैद्यक:** । हिन्दीटीका सहित समा

५८४ **धातुरोग और उनका इलाज** । महेन्द्रनाथ पाण्डेय । भाषा २–००

५८५ धात्री विज्ञान । शिवदयाल गुप्त । भाषा २-५०
५८६ धूप हवा और सर्दी का इलाज । डा० युगलकिशोर चौधरी । भाषा १-००
५८७ नई मानसिक चिकित्सा । लालजीराम शुक्ल ५-५०
५८८ नपुंसक चिकित्सा । (यौवन के गुप्त रहस्य) डा० गणपति सिंह । भाषा ३-००
५८९ नपुंसकामृतार्णव । रामप्रसाद कृत हिन्दीटीका सहित १-७५
५९० नपुंसक संजीवन । शंकरदत्त गौड़ । भाषा १-००
५९१ नमक (लवण) के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०-५०
५९२ नरदेह परिचय । भट्टाचार्य । भाषा १-७५
५९३ नलपाक-पाकदर्पणम् । नलविरचित । संस्कृत १-५०
५९४ नवपरिभाषा । कविराज उपेन्द्रनाथदास कृत हिन्दीटीका सहित १-७५
५९५ नवयुवतियों को क्या जानना चाहिए ? । ज्योतिर्मयी ठाकुर ४-००
५९६ नवीन चिकित्सा । महाबीरप्रसाद पोद्दार । भाषा १-५०, २-५०
५९७ नवीन प्राकृतिक चिकित्सा । डा० हीरालाल । भाषा ३-५०
५९८ नवीन प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली । डा० लूई कुने । भाषा ६-००
५९९ नव्य चिकित्सा विज्ञान । डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा ८-००
६०० नव्य जन-स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्य-विज्ञान । डा० वर्मा । भाषा ८-००
६०१ नव्यरोगनिदानम् । (माधवनिदान परिशिष्टम्) । संस्कृत ०-७५
६०२ नाक कान गले की प्राकृतिक चिकित्सा । युगलकिशोर चौधरी २-५०
६०३ नागरसर्वस्वम् । पद्मश्रीकृतम् । राजधरकृत हिन्दी टीका सहित ४-२५
६०४ नाड़ीचक्रम् । मूल संस्कृत तथा तामिल अनुवाद । ३-५०
६०५ नाडीज्ञानतरंगिणी-अनुपानतरंगिणी । हिन्दीटीका सहित १-५०, २-००
६०६ नाडीज्ञानदर्पणम् । भूधरभट्ट कृत हिन्दीटीका सहित ०-५०
६०७ नाडीदर्पणम् । हिन्दी टीका सहित ०-७५
६०८ नाडी-दर्शन । श्री ताराशङ्कर मिश्र वैद्य । भाषा २-५०
६०९ नाडीपरीक्षा (रावणकृता) वैद्यप्रिया विस्तृत हिन्दीटीका सहित ०-३५
६१० नाडी-रहस्य । डा० अयोध्यानाथ पाण्डेय ०-७५
६११ नाडीविज्ञानम् । जीवानन्द कृत संस्कृत टीका सहित १-२५
६१२ नाडीविज्ञानम् । विबोधिनी विस्तृत हिन्दीटीका सहित ०-३५
६१३ नारी आरोग्यदर्शन । इन्दुमति सिनहा । भाषा ५-००

६१४ **नारी की यौन समस्यायें** । सुरेन्द्रनाथ गुप्त । भाषा २-००
६१५ **नारी धर्म शास्त्र** । भाषा ३-००
६१६ **नारी यौवन** । सत्यवती । भाषा ५-००
६१७ **नारी रोगांक** । भाषा ८-५०
६१८ **नासा, कर्ण एवं गले के रोग** । डा० प्रियकुमार चौबे २-००
६१९ **नासा रोग विज्ञान** । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा २-७५
६२० **निऊ मदर टिञ्चर मेटेरिया मेडिका** । डा० भवानी प्रसाद । भाषा १-००
६२१ **निघण्टरत्नाकर** (मराठी भाषान्तर सह) कै० नवरेकृत १-२ भाग ४०-००
६२२ **निघण्टु आदर्श** । संस्कृत-गुजराती वैद्यबापालाल ग० शाह २रा भाग २५-००
६२३ **निघण्टु कल्पद्रुम** । सुदर्शनलाल त्रिवेदी । भाषा १०-००
६२४ **निघण्टुविज्ञान** (मखजन उल मुफरदात) जगन्नाथ शर्मा । भाषा २-००
६२५ **निघण्टुशिरोमणि** । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । १ भाग । संस्कृत २-२५
६२६ **नित्योपयोगी गुटिका संग्रह** । वैद्य बद्रीनारायणशर्मा । भाषा २-००
६२७ **नित्योपयोगी क्वाथ संग्रह** । भाषा १-२५
६२८ **नित्योपयोगी चूर्ण संग्रह** । भाषा १-२५
६२९ **निदान चिकित्सा हस्तामलक** । रणजीतराय । प्र० खण्ड । भाषा ६-००
६३० **निदान पञ्चक** । सर्वरोगसंप्राप्तिविज्ञान । वैद्य चन्द्रशेखर गोपाल जी ठक्कुर (गुजराती) ३-००
६३१ **निदानात्मक प्रयोग विधियां तथा विवेचन** । एस. बी. व्यास । भाषा ५-५०
६३२ **निमोनिया चिकित्सा** । डा० वी. एन. टण्डन । भाषा ०-६५
६३३ **निम्बू और उसके सौ उपयोग** । गंगा प्रसाद गांगेय । भाषा ०-३७
६३४ **निम्बू के गुण तथा उपयोग** । सम्पादक—रामस्नेही । भाषा ०-७५
६३५ **निम्बू गुण विधान** । डा० गणपति वर्मा । भाषा ०-७५
६३६ **नींबू संतरा-माल्टा** । रामेश्वर 'अशान्त' २-२५
६३७ **निरामिष भोजन से पूर्ण स्वास्थ्य** । अनुवादक-रामचन्द्रशुक्ल । भाषा ०-२५
६३८ **नीम और उसके सौ उपयोग** । गंगा प्रसाद गांगेय । भाषा ०-३७
६३९ **नीम के उपयोग** । केदारनाथ पाठक । भाषा १-००
६४० **नीम के गुण तथा उपयोग** । सम्पादक—रामस्नेही । भाषा १-२५
६४१ **नीमगुणविधान** । डा० गणपति । भाषा ०-६४

६४२ नीमचिकित्साविधान । डा० सुरेश । भाषा ०-६३
६४३ नीम : बकायन । रमेशवेदी । भाषा २-००
६४४ नीरोग कैसे रहें ? महेन्द्रनाथ पांडेय । भाषा ०-५०
६४५ नीरोग जीवन । चतुरसेन शास्त्री । भाषा १-००
६४६ नीरोग होने का सच्चा उपाय । डा० आर. डी. ट्राल । भाषा १-००
६४७ नूतन अमृतसागर । भाषा । रफ कागज ७-००
६४८ नेत्ररक्षा व नेत्ररोगों की प्राकृतिक चिकित्सा । भाषा १-००
६४९ नेत्र रोग विज्ञान (सचित्र) विश्वनाथ द्विवेदी । अत्युत्तम । भाषा १०-००
६५० नेत्ररोग विज्ञान । डा० यादवजी हंसराज । भाषा १५-००
६५१ नेत्ररोग विज्ञान (सचित्र) डा० शिवदयाल गुप्त । भाषा ८-००
६५२ नेत्ररोग विज्ञान शास्त्र । ले० वि० धो० साठ्ये । २-३ भाग २८-००
६५३ नेत्रसुधार (सचित्र) डा० आर० एस० अग्रवाल । सजिल्द ४-००
६५४ नेशलीडर इन होमियोपेथिक थेराप्युटिक्स । भट्टाचार्य । भाषा ६-००
६५५ नैसर्गिक आरोग्य । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा २-००
६५६ न्यूमोनियाँ प्रकाश । देवकरण वाजपेयी । भाषा ०-३७
६५७ पञ्चकर्मविधान । जगन्नाथप्रसाद शुक्ल । भाषा १-००
६५८ पञ्चभूतविज्ञानम् । कविराज उपेन्द्रनाथदास कृत हिन्दीटीका सहित ४-००
६५९ पञ्चविध कषाय-कल्पना विज्ञान । डा० अवधविहारी अग्निहोत्री १-५०
६६० पञ्चसायकः । ज्योतीश्वराचार्यकृत । नर्मकेलिकौतुकसंवाद सहित १-००
६६१ पञ्चसायकः (सचित्र) श्रीराधाकृष्ण शास्त्री कृत भाषा टीका सहित ३-००
६६२ पत्नीपथप्रदर्शक । हरनाम दास । भाषा १-५०
६६३ पथ्यापथ्यम् । हिन्दीटीका सहित २-००
६६४ पथ्यापथ्य चिकित्साङ्क (जय आयुर्वेद) ५-००
६६५ पथ्यापथ्य निरूपण । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल बी. ए. एम. एस. भाषा ०-७५
६६६ पथ्यापथ्यविनिर्णयः । खूबचन्द्र कृत हिन्दीटीका सहित ०-७५
६६७ पदार्थमीमांसा (प्रथम भाग) । त्र्यम्बकनाथ शर्मा । भाषा ३-००
६६८ पदार्थविज्ञानम् । कविराज सत्यनारायण शास्त्री कृत । संस्कृत ३-००
६६९ पदार्थ विज्ञानम् । श्री वागीश्वर शुक्ल बी. ए., ए. एम. एस. प्रेस में
६७० पदार्थविज्ञान । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा १-२५

६७१ **पदार्थविज्ञान** । रामरक्ष पाठक । भाषा ३-७५
६७२ **पदार्थविज्ञान** । बलवन्त शर्मा । हिन्दी टीकासहित ४-००
६७३ **पदार्थविज्ञान और चिकित्सा** । कवि० अम्बिकाचरण चक्रवर्ती । भाषा १-००
६७४ **पदार्थविज्ञान परिचय** । उपाध्याय तथा श्रीवास्तव । भाषा ४-७५
६७५ **पदार्थ विद्या** । वैद्य दुर्गादत्त पंत । भाषा ३-००
६७६ **पदार्थविनिश्चय** । दत्तात्रय अनन्त कुलकर्णी । भाषा १-००
६७७ **पन्द्रह मिनट कसरत** । भाषा ०-२५
६७८ **पन्द्रह मिनट में स्वस्थ बनो** । व्रजभूषण मिश्र । भाषा १-६२
६७९ **पर्यायमुक्तावली** । हरिचरण सेन कृत । संस्कृत ६-००
६८० **पर्यायरत्नमाला** । श्री माधवकर कृत । संस्कृत ६-५०
६८१ **परख कर देखिए** । सुमित्रादेवी अग्रवाल । भाषा २-५०
६८२ **परमाणु के चमत्कार** । जगपति चतुर्वेदी । भाषा २-००
६८३ **परिचर्या और गृह प्रबन्ध** । रानी टण्डन । भाषा २-५०
६८४ **परिभाषा प्रबन्ध** । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल (परिभाषा का श्रेष्ठग्रन्थ) । भाषा २-५०
६८५ **परिवार आयोजन—बर्थ कन्ट्रोल** । डा० सत्यवती ५-००
६८६ **परिवार नियोजन क्या-क्यों और कैसे** । डा० सुरेन्द्रनाथ । भाषा ०-२५
६८७ **परिवार नियोजन** । अत्रिदेव विद्यालङ्कार । भाषा ३-००
६८८ **परिवार नियोजन के लिए आपरेशन की विधि** ।
डा० सुरेन्द्रनाथ गुप्त । भाषा ०-२५
६८९ **परिशिष्ट वनस्पति विष** । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा २-००
६९० **परीक्षित प्रयोग** । शिवदयालगुप्त तथा चन्द्रशेखर जैन १-२ भाग । भाषा २-००
६९१ **पलाण्डु के गुण तथा उपयोग** । सम्पादक—रामस्नेही । भाषा ०-७५
६९२ **पलाण्डुगुणविधान** । डा० गणपति सिंह । भाषा ०-५०
६९३ **पशुओं का इलाज** । भाषा ०-७५
६९४ **पशुओं का घरेलू तथा डाक्टरी इलाज** । अमोलचन्द्र शुक्ला । भाषा ६-००
६९५ **पशुओं के रोग** । व्यथित हृदय । भाषा १-१२
६९६ **पशु चिकित्सा** (वृषकल्पद्रुम) छन्दोबद्ध भाषा २-००
६९७ **पशुचिकित्सा** (बड़ी) भाषा ३-००
६९८ **पशुचिकित्सा** (बहुत बड़ी) ,, ४-००

६९९ पशु चिकित्सा (होमियो) गंगाधरमिश्र । भाषा २–१२
७०० पशु संक्रामक रोग चिकित्सक । राजेन्द्रप्रसाद सिंह ३–००
७०१ पशु परिचय । कमलाकान्त पाण्डेय । भाषा ०–७५
७०२ पाकप्रदीप और पुष्टिप्रकाश । हिन्दीटीका सहित १–१२
७०३ पाकभारती । अमोलचन्द्र शुक्ल । भाषा ६–००
७०४ पाक विज्ञान । ज्योतिर्मयी ठाकुर । भाषा ४–००
७०५ पाक विज्ञान । भाषा (दिल्ली) २–५०
७०६ पाकविज्ञान (बृहद्) निरामिष और आमिष । नृसिंहराम । भाषा ३–००
७०७ पाक विद्या । मणिराम शर्मा । भाषा १–००
७०८ पाकावली । मूल । संस्कृत ०–६२
७०९ पाकावली । हिन्दीटीका सहित १–२५
७१० पाचन प्रणाली के रोग । महेन्द्रनाथ । भाषा २–२५
७११ पाचनसंस्थान की व्याधियाँ । कविराज विद्यानारायण शास्त्री । भाषा ०–५०
७१२ पारदसंहिता । हिन्दीटीका सहित दुष्प्राप्य
७१३ पारिवारिक चिकित्सा । भट्टाचार्य । भाषा १०–००
७१४ पारिवारिकचिकित्सा–संक्षिप्त । भट्टाचार्य । भाषा ३–००
७१५ पारिवारिक भेषजतत्त्व । भट्टाचार्य । भाषा ६–००
७१६ पालतू पशु । कमलाकान्त पाण्डेय ,, ०–६२
७१७ पाश्चात्य द्रव्यगुण विज्ञान (मेटेरिया मेडिका) १–२ भाग ४५–००
रामसुशील सिंह । भाषा । प्रथम भाग १५–०० द्वितीय भाग ३०–००
७१८ पीपल के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०–७५
७१९ पीपलगुणविधान । डा० गणपति । भाषा ०–५०
७२० पुराने रोगों की गृह चिकित्सा । कुलरञ्जन मुखर्जी । भाषा ४–००
७२१ पुरुष गुप्तरोग चिकित्सा । ऋषिकुमार शर्मा । भाषा १–२५
७२२ पुरुष जीवन संदेश । परशुराम जोशी १–२५
७२३ पुरुषरोग चिकित्सांक । चन्द्रशेखर जैन शास्त्री । भाषा ३–५०
७२४ पुरुषरोगाङ्क । भाषा ६–००
७२५ पुरुष–विज्ञान । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा ५–००
७२६ पुरुषेन्द्रिय के रोग । डा० टण्डन ,, २–२५

७२७ पुष्पविज्ञान । हनुमानप्रसाद शर्मा । भाषा १-२५
७२८ पेटेंट अद्वयात अर्थात् नवीन प्रमाणित औषधियां । भाषा । सम्पादक-रघुवीरशरण बंसल ६-००
७२९ पेटेण्ट औषधें और भारतवर्ष (परिष्कृत संस्करण) १-२ भाग, ११३० दवाइयों के योग युक्त । रामकृष्ण वर्मा । भाषा ८-००
७३० पेटेण्ट चिकित्सा (एलोपेथिक) डा० अयोध्यानाथ पाण्डेय । भाषा १-५०
७३१ पेटेण्ट प्रेस्काइबर (पेटेण्ट मेडिसिन्स-Current Therapeutics) डा. रमानाथ द्विवेदी । (अभिनव संस्करण) ७-००
७३२ पेठा-कद्दू । रमेशवेदी । भाषा ०-७५
७३३ पेनिसिलिन की कहानी । जगपति चतुर्वेदी । भाषा २-००
७३४ पेनिसिलिन व स्ट्रेप्टोमाइसीन विज्ञान तथा मूत्र परीक्षा। भाषा १-२५
७३५ पैसे पैसे के चुटकुले । डा० गणपति सिंह । भाषा ३-००
७३६ पैसे पैसे के चुटकुले । अमोलचन्द्र शुक्ला । भाषा ४-००
७३७ पौराणिक वनस्पतियां । केदारनाथ पाठक ,, १-००
७३८ प्रतिश्याय-जुकाम । श्यामलाल 'सुहृद' । भाषा ०-३१
७३९ प्रतिसंस्कृतनिदानचिकित्सा । केवल दूसरा भाग । घनानन्दपन्त १-००
७४० प्रत्यक्ष औषधि निर्माण । आचार्य विश्वनाथ द्विवेदी । भाषा ३-००
७४१ प्रत्यक्षशारीरम् (संस्कृत) । गणनाथसेन कृत । द्वितीय भाग मात्र ८-७५
७४२ प्रत्यक्षशारीरम् (हिन्दी)। गणनाथ सेन प्रथम समाप्त । द्वितीय भाग ८-७५
७४३ प्रत्यक्षशारीर कोश । एस. सी. सेन गुप्त ८-००
७४४ प्रमाण विज्ञान । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा २-५०
७४५ प्रमेह विवेचन । महेन्द्रनाथ । भाषा २-००
७४६ प्रयोगमणिमाला । २५१ वैद्यों के ५०१ प्रयोग । भाषा ८-००
७४७ प्रयोगमणिमालांक । भाषा ४-००
७४८ प्रयोगरत्नावली । केदारनाथ पाठक । भाषा २-००
७४९ प्रयोग साहस्री । उत्तरखण्ड । रामदेव त्रिपाठी । भाषा १-८७
७५० प्रसवविद्या । कान्तिनारायण मिश्र । भाषा समाप्त
७५१ प्रसूति तन्त्र । (जच्चा बच्चा) रामदयाल कपूर । भाषा ५-७५

७५२ प्रसूति तन्त्र । काशीनाथ गोखले । भाषा समाप्त
७५३ प्रसूति तंत्र । वामनकृष्ण पटवर्धन । भाषा १५-००
७५४ प्रसूति परिचर्या । प्रतापसिंह ,, २-००
७५५ प्रसूतिविज्ञान (सचित्र) डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस. १०-००
७५६ प्रसूतिविज्ञानांक । रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी । भाषा ८-५०
७५७ प्रसूति शास्त्र । डा० चमनलाल । भाषा १२-००
७५८ प्राकृतिक चिकित्सा । रामनारायण वर्मा । भाषा ०-७५
७५९ प्राकृतिक चिकित्सा । केदारनाथ गुप्त । भाषा ५-००
७६० प्राकृतिक चिकित्सा (अभिनव) कुलरञ्जन मुखर्जी । भाषा ४-००
७६१ प्राकृतिक चिकित्सा पथ-प्रदर्शक । युगलकिशोर चौधरी । भाषा ०-३७
७६२ प्राकृतिक चिकित्सा क्या व कैसे । महावीरप्रसाद पोद्दार । भाषा ०-७५
७६३ प्राकृतिक चिकित्सा के चमत्कार । महावीरप्रसाद पोद्दार । भाषा १-५०
७६४ प्राकृतिक चिकित्सा प्रश्नोत्तरी । युगल किशोर चौधरी । भाषा ०-७५
७६५ प्राकृतिक चिकित्सा सागर । डा० युगलकिशोर चौधरी । भाषा १-१२
७६६ प्राकृतिक चिकित्सासार । के० प्रसाद । भाषा ६-००
७६७ प्राकृतिक चिकित्सा सूर्योदय । डा० युगलकिशोर चौधरी । भाषा १-००
७६८ प्राकृतिक जीवन की ओर । विट्ठलदास मोदी । भाषा १-५०, २-५०
७६९ प्राकृतिक ज्वर । राधावल्लभ । भाषा ०-३१
७७० प्राकृतिक शिशुचिकित्सा । डा० सुरेश । भाषा २-००
७७१ प्राचीन भारत में रसायन का विकास । डॉ० सत्यप्रकाश । भाषा १४-००
७७२ प्राचीन व्यायाम पद्धति-बड़ा योगासन । स्वामी सेवानंद २-५०
७७३ प्राणायाम और अनन्त शक्ति । शिवानन्द सरस्वती । भाषा २-००
७७४ प्राणायाम मीमांसा । विजयबहादुर सिंह १-५०
७७५ प्राणिज औषधि । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा ०-५०
७७६ प्राथमिक चिकित्सा । डा० डी. पी. मैत्र ,, ०-७५
७७७ प्राथमिक सहायता । लाल बहादुर लाल श्रीवास्तव । भाषा २-००
७७८ प्रारम्भिक उद्भिद (वनस्पति) शास्त्र । प्रो० बलवन्तसिंह । भाषा ४-५०
७७९ प्रारम्भिक उपचारः । गणेशदत्त कृत हिन्दी टीका सहित १-००

७८० प्रारम्भिकजीवविज्ञान । १-२ भाग । सन्तप्रसाद टण्डन । भाषा ४-५०
प्रथम भाग । प्राणि विज्ञान २-२५ द्वितीय भाग । वनस्पति विज्ञान २-२५
७८१ प्रारंभिक पाठशाला प्रबन्ध तथा स्वास्थ्य रक्षा । रानीटंडन-संतप्रसाद टंडन । भाषा ३-५०
७८२ प्रारम्भिक-भौतिकी । निहालकरण सेठी । द्वितीय संस्करण । भाषा ५-५०
७८३ प्रारम्भिक-रसायन । फूलदेवसहाय वर्मा । तृतीय संस्करण ,, ४-५०
७८४ प्रारम्भिक रसायन । अमीचन्द्र विद्यालङ्कार । भाषा १-५०
७८५ प्रारम्भिक स्वास्थ्य । गौरी शंकर । भाषा ०-३७
७८६ प्रेमसूत्र । काशीराम चावला । भाषा ३-००
७८७ प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा । कविराज ब्रह्मानन्द । भाषा ०-३५
७८८ प्लीहा रोग चिकित्सा । ज्ञानचन्द । भाषा ०-३७
७८९ प्लेग की बीमारी और बचने के उपाय । भाषा ०-०६
७९० फल उनके गुण तथा उपयोग । केशवकुमार ठाकुर । भाषा २-२५
७९१ फल संरक्षण । डा० गोरखप्रसाद-वीरेन्द्रनारायण सिंह । भाषा २-५०
७९२ फलसंरक्षणविज्ञान । डा० कविराज युगलकिशोर गुप्त । भाषा १-००
७९३ फल सब्जी संरक्षण । जगपति चतुर्वेदी । भाषा १-००
७९४ फलाहार । सन्तराम । भाषा १-२५
७९५ फलाहार चिकित्सा । महेन्द्रनाथ पाण्डेय । भाषा २-७५
७९६ फलों की खेती । भाषा ३-५०
७९७ फलों से इलाज । डा० गणपति सिंह । भाषा २-५०
७९८ फलों द्वारा चिकित्सा । हकीम मुहम्मद अब्दुल्ला । भाषा २-००
७९९ फसल के शत्रु । शङ्करराव जोशी । भाषा ३-५०
८०० फसलरक्षा की दवाएँ । जगपति चतुर्वेदी । भाषा ०-५०
८०१ फिटकड़ीगुणविधान । डा० गणपति सिंह । भाषा १-५०
८०२ फिटकरी । (स्फटिका) । भाषा ०-३७
८०३ फिटकरी के गुण तथा उपयोग । सम्पादक—रामस्नेही । भाषा २-५०
८०४ फुफ्फुसपरीक्षा । रमेशचन्द्र वर्मा । भाषा १-२५
८०५ फुफ्फुस सन्निपात चिकित्सा । हनुमत् प्रसाद जोशी । भाषा २-६६
८०६ फेफड़ों की परीक्षा, रोग व चिकित्सा (सचित्र) कविराज शिवशरण शर्मा । भाषा ५-००

८०७ बच्चों का पालन और रोगों की चिकित्सा। युगल किशोर। भाषा १–५०
८०८ बच्चों का पालन और स्त्री चिकित्सा। २ जिल्दमें ,, ,, भाषा १–५०
८०९ बच्चों का स्वास्थ्य और उनके रोग। विट्ठलदास मोदी। भाषा ३–००
८१० बच्चों की रक्षा। लुई कुने। भाषा ०–६२
८११ बच्चों की सरल होमियोपैथिक चिकित्सा। डा० एस. डी. अग्रवाल। भाषा ?–५०
८१२ बच्चों के रोग और उनका इलाज। महेन्द्रनाथ। भाषा २–००
८१३ बबूल। ०–३७
८१४ बबूल के गुण तथा उपयोग। सम्पादक—रामस्नेही। भाषा ०–८७
८१५ बबूलगुणविधान। डा० गणपति सिंह। भाषा ०–५०
८१६ बबूल चिकित्सा विधान। डा० सुरेश। भाषा ०–३७
८१७ बरगद। रमेशवेदी। भाषा १–००
८१८ बरगद (बड़) के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा ०–८७
८१९ बर्नेट के ५० कारण। भट्टाचार्य। भाषा १–५०
८२० बस्तिशलाकाप्रवेश (एनीमा और कैथेटर) डा. राजकुमार द्विवेदी ०–४०
८२१ बांसा (अडूसा) बूटी के गुण तथा उपयोग। रामनारायणशर्मा। भाषा १–२५
८२२ बादाम के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा ०–७५
८२३ बापू और प्राकृतिक चिकित्सा। डा० हीरालाल। भाषा ०–३१
८२४ बायोकेमिकचिकित्सा। डा० सुरेश। भाषा ४–००
८२५ बायोकेमिक चिकित्सा विज्ञान। भट्टाचार्य। भाषा ६–००
८२६ बायोकेमिक चिकित्सासार। भट्टाचार्य। भाषा २–००
८२७ बायोकेमिक पाकेट गाईड। सुरेश। भाषा १–००
८२८ बायोकेमिक मिक्सचर। एस. ए. माजिद। भाषा ०–६५
८२९ बायोकेमिकरहस्य। डा० कैलाशभूषण त्रिपाठी। भाषा १–५०
८३० बाल चिकित्सा। पं० किशोरीदत्त। भाषा १–५०
८३१ बालतन्त्रम्। कल्याणवैद्यकृत हिन्दी टीका सहित २–५०
८३२ बालरोग चिकित्सा। पं० ऋषिकुमार शर्मा। भाषा ०–७५
८३३ बालरोग चिकित्सा। डा० रमानाथ द्विवेदी ५–००
८३४ बालरोगाङ्क। भाषा ६–००

८३५ **बाल स्वास्थ्य रक्षा** । भाषा १-००
८३६ **बिच्छू विष चिकित्सा** । भगवानदेव । भाषा ०-१२
८३७ **बीमारी कैसे दूर करें** । भाषा ०-३७
८३८ **बीसवीं शताब्दी की औषधियाँ** । डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा ८-००
८३९ **बुखार का अचूक इलाज** । युगल किशोर चौधरी । भाषा ०-७५
८४० **बूटी-प्रचार** । वैद्यक । भाषा २-५०
८४१ **बुढ़ापा बीमारी से बचने का उपाय** । भाषा ०-७५
८४२ **बूढ़ों का आरोग्य** । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा ५-००
८४३ **बृहच्छारीरम्** । वारियर कृत । संस्कृत २०-००
८४४ **बृहत् आसवारिष्ट संग्रह १-२ भाग** । कृष्णप्रसाद मिश्र । भाषा ७-००
८४५ **बृहद् आसवारिष्ट संग्रह** । कविराज देवीसिंह । भाषा ३-५०
८४६ **बृहत् कम्पाउन्ड्री शिक्षा** । डा. आर. एस. बंसल ,, ३-००
८४७ **बृहद् कम्पाउण्डरी शिक्षा** । डा० रा० कु० दीक्षित । भाषा २-५०
८४८ **बृहन्निघण्टुरत्नाकरः** । शालिग्रामकृत हिन्दीटीकासहित ।
चतुर्थ भाग ८-०० पञ्चम भाग १६-०० षष्ठ भाग १२-००
सप्तम-अष्टम भाग १६-०० भाग चार से आठ तक ५२-००
८४९ **बृहत् पाकसंग्रह** । श्री कृष्णप्रसाद त्रिवेदी । भाषा ४-००
८५० **बृहत् पाकावली** । हिन्दी टीका १-२५
८५१ **बृहद् बूटी प्रचार** । हिन्दी भाषा २-५०
८५२ **बृहद्योगतरङ्गिणी** । त्रिमल्लभट्टकृत १-२ भाग । संस्कृत १६-२५
८५३ **बृहद् रसराजसुन्दरः** । दत्तराम चौबेकृत हिन्दी टीका सहित १२-००
८५४ **बृहत् होमियोपैथिक मेटेरिया-मेडिका** । डा० टण्डन ।
१-२ भाग । भाषा १३-००
८५५ **बृहत् होमियोपेथिक मेटेरिया मेडिका** । १-२ भाग भट्टाचार्य ,, २५-००
८५६ **बोपदेवशतकम्** । हिन्दी टीका सहित ०-८५
८५७ **व्रण बन्धन (पट्टी बांधना)** । डा० भवानी प्रसाद । भाषा ४-२५
८५८ **ब्रह्मचर्य** । १-२ भाग । महात्मा गांधी । भाषा १-७५
८५९ **ब्रह्मचर्य की महिमा** । सूर्यबली सिंह ,, १-५०
८६० **ब्रह्मचर्य के अनुभव** । म० गांधी ,, ०-७५

८६१ ब्रह्मचर्य के साधन । ब्रह्मचारी भगवान् देव । भाषा ०-४०
८६२ ब्रह्मचर्य क्यों और कैसे । स्वामी शंकरानंद । सचित्र । भाषा २-५०
८६३ ब्रह्मचर्य जीवन । स्वामी योगानन्द । भाषा १-५०
८६४ ब्रह्मचर्य-जीवन है । सचित्र । स्वामी शंकरानंद सरस्वती । भाषा २-५०
८६५ ब्रह्मचर्य मीमांसा । विजय बहादुर । भाषा १-२५
८६६ ब्रह्मचर्य विवाह के पहले और विवाह के बाद । हीरालाल ३-००
८६७ ब्रह्मचर्यविवेक । भाषा ३-००
८६८ ब्रह्मचर्यशतकम् । मेधाव्रत । हिन्दी टीका सहित ०-६२
८६९ ब्रह्मचर्यसाधन । स्वामी निगमानन्द सरस्वती देव १-५०
८७० ब्रह्मचर्य ही जीवन है । शिवानन्द । भाषा १-७५
८७१ ब्रह्मचर्य-सचित्र । सातवलेकर । हिन्दी टीका सहित १-५०
८७२ ब्रह्मचर्य सन्देश । सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार । भाषा ४-५०
८७३ ब्रह्मचर्यसाधन । चतुरसेन शास्त्री । भाषा २-३७
८७४ ब्रह्मचर्यामृत अर्थात् जीवनसन्देश । ब्रह्मचारी भगवानदेव । भाषा ०-१५
८७५ भगन्दर अंक (धन्वन्तरि) ०-७५
८७६ भस्मपर्पटी । देवीशरण गर्ग । भाषा ०-१०
८७७ भस्मविज्ञान । १-२ भाग । हरिशरणानन्द । भाषा १०-००
८७८ भारत की ऋतुचर्या । भाषा ०-२५
८७९ भारतभैषज्यरत्नाकरः । हिन्दी टीका सहितः । केवल ४-५ भाग २१-००
८८० भारतीय औषधावली तथा होमियो पेटेन्ट मेडिसिन । भाषा १-५०
८८१ भारतीय जड़ी बूटी अर्थात् संन्यासियों की गुप्त बूटियां ।
१-२ भाग । डा० गणपति । भाषा ५-५०
८८२ भारतीय जनता का स्वास्थ्य तथा आयुर्वेद । भाषा ०-७५
८८३ भारतीय जीवाणु विज्ञान । रघुवीर शरण शर्मा वैद्य । भाषा १-५०
८८४ भारतीय निसर्ग उपचारपद्धति । मराठी ०-२५
८८५ भारतीय नूतन योग संचय । बद्रीनारायण शास्त्री । भाषा १-००
८८६ भारतीय भौतिकविज्ञान । जगन्नाथप्रसाद शुक्ल । भाषा ०-५०
८८७ भारतीय मल्ल शिक्षा (सचित्र) । श्यामसुन्दर 'सुमन' । भाषा २-५०
८८८ भारतीय-रसपद्धति । कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त विद्यालङ्कार । भाषा १-५०

८८९ **भारतीय-रसशास्त्र** । बापालाल ग० शाह (गुजराती) ८-५०

८९० **भारतीय वनौषधि (सचित्र)** । [बंगला भाषा]
डा० के. पी. विश्वास । १-३ भाग २२-००

८९१ **भावप्रकाशः** । मूल-पूर्वार्द्ध ३-०० मध्यमोत्तरखण्ड ७-००

८९२ **भावप्रकाशः** । नवीन वैज्ञानिक 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका
परिशिष्ट सहित पूर्वार्द्ध १२-०० मध्यमोत्तरखण्ड १५-०० संपूर्ण २६-००

८९३ **भावप्रकाश-ज्वराधिकारः** । विद्योतिनी हिन्दी टीका परिशिष्ट सहित ४-००

८९४ **भावप्रकाशनिघण्टुः** । मूल मात्र संस्कृत १-५०

८९५ **भावप्रकाशनिघण्टुः** । आयुर्वेदिक कालेज के छात्रों के लिये
विमर्शात्मक हिन्दी व्याख्या से विभूषित नवीन मौलिक संस्करण ।
सम्पादक-आयुर्वेदाचार्य डा० गङ्गासहाय पाण्डेय ९-००

८९६ **भावी चिकित्सक निर्देशिका** । प्रथम खण्ड । ज्ञानेन्द्र पाण्डेय ६-००

८९७ **भिषक् कर्मसिद्धि** । डा० रमानाथ द्विवेदी शीघ्र प्राप्त होगी

८९८ **भिषग् विलासः** । (चित्रकाव्य) रसायन विलास नामक प्रथम
विलास । हिन्दी टीका सहित ०-५०

८९९ **भूगर्भविज्ञान** । जगपति चतुर्वेदी । भाषा २-००

९०० **भूलोक का अमृत-गाय का दूध** । भाषा ०-७५

९०१ **भेलसंहिता-सटिप्पण** । पं. गिरिजा दयालु शुक्ल संशोधित संपादित १८-००

९०२ **भेषजलक्षणसंग्रह** । (बृहत् होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका)
१-२ भाग । भट्टाचार्य । भाषा २५-००

९०३ **भेषजविधान** । भट्टाचार्य । भाषा ३-००

९०४ **भेषजसार** । सुरेशप्रसाद ,, २-००

९०५ **भेषजसंहिता** । (आयुर्वेदिक फार्मोकोपिया) ४-५०

९०६ **भैषज्य कल्पना विज्ञान** । (सचित्र) डॉ० अवधविहारी अग्निहोत्री ५-००

९०७ **भैषज्य कल्पनाङ्क** । सपरिशिष्ट । भाषा ५-००

९०८ **भैषज्य भास्कर** । रामचरणमिश्र ,, । प्रथम खंड १-२५

९०९ **भैषज्यरत्नावली** । नवीन वैज्ञानिक 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका 'विमर्श'
'टिप्पणी'-परिशिष्ट सहित । कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री ।
पं० राजेश्वरदत्त शास्त्री सम्पादित परिष्कृत द्वितीय संस्करण १६-००

९१० भैषज्यरत्नावली । विनोदलालसेन कृत संस्कृत टीका सहित ८–००
९११ भैषज्यरहस्य । (होमियो०) डा० टण्डन । भाषा ५–००
९१२ भैषज्य सार संग्रह । (भारत भैषज्यरत्नाकर के अनुभव सिद्ध प्रचलित प्रयोगों तथा अन्य अनेक प्रयोगों का संग्रह) कविराज हरस्वरूप १५–००
९१३ भैषज्य सुपथ । लक्ष्मीप्रसाद गुप्त । भाषा ३–००
९१४ भोजन । भगवानदेव । भाषा ०–६२
९१५ भोजन एवं स्वास्थ्य । स्वामी शंकरानंद सरस्वती । भाषा २–५०
९१६ भोजन और स्वास्थ्य । डा० सत्यप्रकाश । भाषा २–५०
९१७ भोजन और पाचन । ज्योतिर्मयी ठाकुर । भाषा २–५०
९१८ भोजनकुतूहलम् । रघुनाथ विरचित । प्रथम भाग ४–३७
९१९ भोजन क्या, क्यों और कैसे ? डा० सुरेन्द्रनाथ । भाषा ४–००
९२० भोजनविधि अर्थात् रोग और पथ्यापथ्य । केदारनाथ । भाषा २–००
९२१ भोजनशास्त्र । रुक्मिणी देवी । भाषा ३–००
९२२ भोजन ही अमृत है । महेन्द्रनाथ । भाषा १–७५
९२३ मकरध्वज । (चन्द्रोदय तथा स्वर्णसिन्दूर बनाने की विधि) भाषा ०–६२
९२४ मखजन उल मुफरदात । (निघण्टु विज्ञान) यूनानी । भाषा २–००
९२५ मठा उसके गुण तथा उपयोग । महेन्द्रनाथ । भाषा १–००
९२६ मट्ठा या छाछ के उपयोग । प्रवासीलाल वर्मा । भाषा १–००
९२७ मदनपालनिघण्टुः । संस्कृत । सटिप्पण १–००
९२८ मदनपालनिघण्टुः । वैद्य रामप्रसाद कृत हिन्दी टीका सहित ४–००
९२९ मदनपालनिघण्टु । (हिन्दी) शक्तिधर कृत ३–००
९३० मधु के उपयोग । केदारनाथ । भाषा १–००
९३१ मधु (शहद) के गुण तथा उपयोग । के० प्रसाद । भाषा २–५०
९३२ मधुगुणविधान । डा० गणपति । भाषा १–५०
९३३ मधुचिकित्सा । रामचन्द्र वर्मा । भाषा ०–३१
९३४ मधु चिकित्सा विधान । डा० सुरेश । भाषा ०–५०
९३५ मधु मक्खी पालन । दयाराम जुगड़ाण ,, ३–००
९३६ मानव शरीर विज्ञान । यदुवीर सिन्हा । भाषा २–५०
९३७ मधुमेह । परशुराम शास्त्री । भाषा १–००

१३८ मधुमेह अंक (धन्वन्तरि)। १-००
१३९ मधुमेहचिकित्सा। महेन्द्रनाथ। भाषा ०-३७
१४० मनुष्य और मस्तिष्क। श्यामलाल 'सुहृद'। भाषा ०-१६
१४१ मनुष्य पूर्ण निरोगी कैसे हो। रामजीलाल शर्मा। भाषा ७-००
१४२ मनुष्य शरीर और स्वास्थ्य। रानी टंडन। भाषा ४-००
१४३ मनोरञ्जन और दिलबहलाव। श्यामलाल 'सुहृद'। भाषा ०-१२
१४४ मनोविज्ञान। चन्द्रमौलि शुक्ल २-७५
१४५ मन्थरज्वर चिकित्सा। कविराज हरिवल्लभ। भाषा २-००
१४६ मन्थरज्वरविज्ञान। हरिशरणानन्द। भाषा २-००
१४७ मन्दाग्नि। रामसजीवन शर्मा। भाषा १-००
१४८ मरहम बनाना। रामनारायण शर्मा वैद्य। भाषा १-२५
१४९ मरणोन्मुखी आर्यचिकित्सा। राधावल्लभ वैद्य। भाषा ०-२५
१५० मर्दनशास्त्र पौर्वात्य व पाश्चिमात्य। डा० र० कृ० गर्दे। मराठी १-५०
१५१ मर्म-विज्ञान। (सचित्र) आचार्य रामरक्ष पाठक। भाषा ३-५०
१५२ मल-मूत्र-कफ-रक्तादि परीक्षा। (बृहत्) सचित्र (Clinical Pathology including Laboratory technique, Parasitology & Bacteriology) डा० शिवनाथ खन्ना। भाषा १०-००
१५३ मलेरिया। डा० युगलकिशोर चौधरी। भाषा १-००
१५४ मलेरिया-एलोपैथिक। मनमोहन धूप। भाषा २-२५
१५५ मलेरिया और कालाजार चिकित्सा। राधाचन्द्र भट्टाचार्य। भाषा १-७५
१५६ मवेशियों की घरेलू चिकित्सा। डा० सुरेश। भाषा ०-७५
१५७ मवेशियों के कृमिरोग। जगपति चतुर्वेदी। भाषा ०-५०
१५८ मवेशियों के विविध रोग। जगपति चतुर्वेदी। भाषा ०-५०
१५९ मवेशियों के साधारण रोग। जगपति चतुर्वेदी। भाषा ०-५०
१६० महात्मा जी के १२५१ नुसखे। महात्मा कीढ़ीराम जी। भाषा २-५०
१६१ महादेवरत्न प्रकाश। (अनुभूतवैद्यक) चारोखंड। महादेवप्रसाद। भाषा ४-००
१६२ महामारी का विवेचन। हिन्दी टीका सहित ०-६२
१६३ महाविष। जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल। भाषा ३-००

१६४ महिला जीवन । स्त्री-जीवन को सफल व स्वस्थ बनाने का मार्ग। सरोजनी देवी वैद्या । भाषा १६-००

१६५ महिलारोग चिकित्सांक (तत्काल फलप्रयोग का तीसरा भाग) २-००

१६६ माँ और बच्चा । डा० बोधराज चोपड़ा । भाषा २-७५

१६७ माडर्न मेडिकल ट्रीटमेंट । एम० एल० गुजराल । भाषा २०-००

१६८ मानव शरीर विज्ञान । यदुवीर सिन्हा । भाषा २-५०

१६९ माधवनिदानम् । 'सुधालहरी' संस्कृत टीका परिशिष्ट सहित गुटका यन्त्रस्थ

१७० माधवनिदानम् । मधुकोश-आतङ्कदर्पण संस्कृत व्याख्याद्वय सहित ७-००

१७१ माधवनिदानम् । मधुकोश व्याख्या, विद्योतिनी हिन्दी टीका वैज्ञानिक विमर्शयुक्त । सम्पादक-वैद्य यदुनन्दन उपाध्याय । परिष्कृत द्वितीय श्रेष्ठ संस्करण । पूर्वार्ध ७-५०, उत्तरार्ध ७-५०, संपूर्ण १४-००

१७२ माधवनिदानम् । मधुकोश संस्कृत व्याख्या, मनोरमा हिन्दी टीका सहित ६-००

१७३ माधवनिदानम् । सर्वाङ्गसुन्दरी विस्तृत हिन्दी टीका सहित ४-५०

१७४ माधवनिदानाङ्क । आ० दौलतराम सोनी-सम्पादित । भाषा ८-५०

१७५ मानव शरीर रचना विज्ञान । डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा १४-००

१७६ मानव शरीर रहस्य । १-२ भाग । डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा । भाषा समाप्त

१७७ मानव संतति-प्रसूतिशास्त्र । कविराज बलवन्त सिंह । भाषा १-७५

१७८ मानवी आयुष्य । सातवलेकर । भाषा ०-५०

१७९ मानवोत्पत्ति विज्ञान । (प्रथम भाग) वैद्य चन्द्रिकानारायण शर्मा २-००

१८० मानसरोगविज्ञान । डा० बालकृष्ण पाठक । भाषा ५-७५

१८१ मानसिक चिकित्सा । लालजी राम शुक्ल । भाषा ४-००

१८२ मानसिक दक्षता । राजेन्द्र बिहारीलाल । भाषा ३-००

१८३ मानसिक रोगविज्ञान । जगन्नाथप्रसाद शुक्ल । भाषा समाप्त

१८४ मासिकधर्म एवं गर्भपात । डा० प्रियकुमार चौबे । भाषा १-५०

१८५ मासिक विकार और गर्भपात । प्रियकुमार चौबे । भाषा १-००

१८६ मिट्टी चिकित्सा (गुण और उपयोग) । युगल किशोर चौधरी ०-७५

१८७ मिट्टी सब रोगों की रामबाण ओषधि है । भाषा ०-५६

१८८ मिडवाइफरी-दाईगिरी शिक्षा । श्रीमती बसन्तीरानी गुप्ता । भाषा ३-५०

१८९ मिरच के गुण तथा उपयोग । अमोलचन्द्र शुक्ला । भाषा ०-८७

९९० मिर्च । रमेशवेदी । भाषा १-००
९९१ मीजानतिब्ब अर्थात् सर्वाङ्गचिकित्सा । भाषा ३-५०
९९२ मुकलावा बहार । दशों भाग सचित्र । अर्जुनलाल अग्रवाल । भाषा ५-००
९९३ मुखरोगविज्ञान । जगन्नाथप्रसाद शुक्ल । भाषा २-५०
९९४ मूत्र के रोग । डा० घाणेकर । भाषा ६-००
९९५ मूत्र परीक्षा । डा० टण्डन । भाषा ०-७५
९९६ मूत्र परीक्षा । एस० के० जायसवाल । भाषा ०-५०
९९७ मूत्र परीक्षा । भट्टाचार्य । भाषा १-५०
९९८ मूली के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०-७५
९९९ मेघविनोद । मेघमुनि । भाषा ६-००
१००० मेटेरिया मेडिका तथा फ़ार्मेसी । डा० राधावल्लभ पाठक । भाषा ८-००
१००१ मेडिकल डिक्शनरी । एंग्लो-हिन्दी । भट्टाचार्य १०-००
१००२ मेडिकल डिक्शनरी (चौखम्बा) । एग्लो-हिन्दी प्रेस में
१००३ मेंहदी के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०-७५
१००४ मैं तन्दुरुस्त हूँ या बीमार ? लुई कुने ,, ०-५०
१००५ मैं निरोगी हूँ या रोगी ? लुई कुने ,, ०-६२
१००६ मोटापन कम करने का उपाय । प्रभुदत्त ब्रह्मचारी । भाषा २-००
१००७ मोटापा कम करने के उपाय । प्रभुनारायण त्रिपाठी । भाषा १-००
१००८ यकृत् के रोग और उनकी चिकित्सा । वैद्य श्री सभाकान्त झा २-००
१००९ यकृत प्लीहा के रोग । भाषा ०-५०
१०१० यकृत्प्लीहारोगाङ्क । भाषा २-००
१०११ यक्ष्मा चिकित्सा । (बंगला) प्रभाकर चट्टोपाध्याय १-२ भाग ७-५०
१०१२ यक्ष्म चिकित्सा । क्षय-रोग की प्राकृतिक अचूक चिकित्सा । भाषा ६-५०
१०१३ यादव स्मृति ग्रन्थ । (श्री यादवाभिनन्दन ग्रन्थ सहित) ३१-००
१०१४ यूनानी-चिकित्सा-विज्ञान । (पूर्वार्द्ध) दलजीत सिंह । भाषा ८-५०
१०१५ यूनानी चिकित्साविधि । हकीम मंशाराम । भाषा ५-००
१०१६ यूनानी चिकित्सा सागर । हकीम मंशाराम । भाषा १०-००
१०१७ यूनानी चिकित्सा-सार । हकीम दलजीत सिंह । भाषा ४-७५
१०१८ यूनानी द्रव्यगुण विज्ञान । हकीम दलजीत सिंह । भाषा २२-००

१०१९ यूनानी वैद्यक के आधारभूत सिद्धान्त (कुल्लियात)। भाषा १-२५
१०२० यूनानी सिद्ध-योग-संग्रह। वैद्यराज दलजीत सिंह। भाषा २-७५
१०२१ योग आसन। स्वामी सेवानन्द। भाषा २-५०
१०२२ योग के चमत्कार। रामनाथ 'सुमन'। भाषा २-००
१०२३ योगचिकित्सा (Indication of Drugs)। अत्रिदेव गुप्त विद्यालङ्कार। भाषा ३-५०
१०२४ योगचिकित्सा और सुगमचिकित्सा। ०-५०
१०२५ योगचिन्तामणिः। हिन्दी टीका सहित ४-००, ५-००
१०२६ योगतरंगिणीसंहिता। त्रिमल्लभट्ट विरचित। श्रीचरणतीर्थ संशोधित ६-००
१०२७ योगतरङ्गिणी। त्रिमल्लभट्टकृत हिन्दी टीका सहित ६-००
१०२८ योगरत्नसमुच्चयः। १-३ भाग। संस्कृत १५-००
१०२९ योगरत्नाकरः। संस्कृत। मूल ६-००
१०३० योगरत्नाकरः। वैद्य लक्ष्मीपतिकृत विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित १८-००
१०३१ योगशतकम्। ज्वालाप्रसाद कृत हिन्दी टीका सहित ०-६२
१०३२ योगशतकम्। बोपदेव रचित। गुजराती भाषान्तर सहित ०-३७
१०३३ योग साधन की तैयारी। सातवलेकर। भाषा १-००
१०३४ योगासन। सचित्र। अनन्तराम शर्मा। भाषा १-००
१०३५ योगासन। आत्मानन्द। भाषा २-००
१०३६ यौन जीवन। मन्मथनाथ गुप्त। भाषा १०-००
१०३७ यौन मनोविकार कारण और निवारण। डा० सुरेन्द्रनाथ। भाषा २-००
१०३८ यौन मनोविज्ञान। हेवलॉक एलिस। अनु० मन्मथनाथ गुप्त १०-००
१०३९ यौवन के गुप्त रहस्य। (नपुंसक चिकित्सा)। भाषा ३-००
१०४० रक्त (Blood)। भाषा ०-२५
१०४१ रक्त के रोग। डा० धारोकर। भाषा १०-००
१०४२ रक्त विक्षेप या ब्लड प्रेशर। जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। भाषा ०-७५
१०४३ रतिमञ्जरी। श्री जयदेवकृत। संस्कृत मूल समाप्त
१०४४ रतिमंजरी। हिन्दी गद्यपद्यानुवाद सहित ०-४०
१०४५ रतिरत्नप्रदीपिका। मूल। श्री प्रौढदेवराज महाराज विरचित ०-७५
१०४६ रतिरत्नप्रदीपिका। हिन्दी टीका सहित २-५०

१०४७ **रतिरहस्यम्** । काञ्चीनाथ कृत दीपिका संस्कृत टीका सहित ३-००
१०४८ **रतिरहस्यम्** । भागीरथ स्वामीकृत हिन्दी टीका सहित ५-००
१०४९ **रतिरहस्य** । (सचित्र) श्रीराधाकृष्ण शास्त्री कृत भाषाटीका सहित ३-००
१०५० **रत्नचिकित्सा** । डा० विनयतोष भट्टाचार्य । भाषा ३-००
१०५१ **रत्नपरीक्षा** । (स्मृतिसारोद्धारान्तर्गता-ईश्वरदीक्षितीया च) द्राविडानुवाद सहित । सुब्रह्मण्यशास्त्री संपादित । संस्कृत १-२५
१०५२ **रत्नप्रकाश** । सचित्र । राजरूप टाँक जौहरी । भाषा १०-००
१०५३ **रसचिकित्सा** । कविराज प्रभाकर चट्टोपाध्याय (हिन्दी) ६-००
१०५४ **रसचिन्तामणिः** । मुरलीधर कृत हिन्दी टीका सहित ३-५०
१०५५ **रसजलनिधिः** । संस्कृत मूल तथा अंग्रेजी अनुवाद सहित । १-५ भाग । भूदेव मुकर्जी ३७-५०
१०५६ **रसतत्त्व-विवेचन** । हिन्दी टीका सहित ३-५०
१०५७ **रसतन्त्रसार व सिद्धप्रयोगसंग्रह** । भाषा । प्रथमखण्ड अजिल्द ६-०० प्रथमखण्ड सजिल्द ११-०० द्वितीयखण्ड अजिल्द ६-०० सजिल्द ७-५०
१०५८ **रसतरङ्गिणी** । सदानन्दकृत हिन्दी टीका सहित १०-००
१०५९ **रसतरंगिणी** । विद्याधर विद्यालङ्कार । भाषा ८-००
१०६० **रसतरङ्गिणी** । जयदत्त शास्त्री कृत । प्रथम खण्ड । गुजराती ५-३७
१०६१ **रसधातु प्रकाश** । (संस्कृत-मराठी १-२ भाग) रसशास्त्र वर्णन विषयक अभिनव ग्रन्थ । वैद्य डा० मुले १२-००
१०६२ **रसप्रदीपः** । हिन्दी टीका सहित ०-५०
१०६३ **रस भस्मों की सेवन विधि** । भाषा ०-५०
१०६४ **रसयोगसागरः** । वैद्य हरिप्रपन्नकृत हिन्दी टीका सहित प्रथम भाग ३०-००
१०६५ **रसरत्नदीपिका** । वाणेश्वरभट्टाचार्य । संस्कृत समाप्त
१०६६ **रसरत्नसमुच्चयः** । मूल संस्कृत । साधारण संस्करण ३-००
उत्तम संस्करण ३-७५
१०६७ **रसरत्नसमुच्चयः** । जीवानन्द कृत संस्कृत टीका सहित १०-००
१०६८ **रसरत्नसमुच्चयः** । कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री कृत नवीन वैज्ञानिक 'सुरत्नोज्ज्वला' विस्तृत हिन्दी टीका विमर्श परिशिष्ट सहित १०-००
१०६९ **रसरत्नाकरः** । शालग्राम कृत हिन्दी टीका सहित समाप्त

१०७० **रसरत्नाकर** । हकीम पवि कवि । भाषा पद्य १-००

१०७१ **रसराजमहोदधिः** । १-५ भाग । भाषा १०-००

१०७२ **रस रसायन गुटिका गुग्गुल** । देवीशरण गर्ग वैद्य । भाषा ०-२५

१०७३ **रसराजसुन्दरः** । दत्तरामकृत हिन्दी टीका सहित १२-००

१०७४ **रसवैशेषिकसूत्रम्** । संस्कृत टीका सहित २-५०

१०७५ **रसव्यञ्जन प्रकाश** । भगवानदास (अचार, सिरका, चूर्ण, गोली) भाषा १-१२

१०७६ **रसशास्त्र** । अत्रिदेव विद्यालंकार । भाषा ७-००

१०७७ **रसशास्त्र प्रवेशिका** । बद्रीनारायण शर्मा अनुवादित । भाषा २-००

१०७८ **रसहृदयतन्त्र** । गोविन्द भगवत्पाद विरचित । संस्कृत हिन्दी टीका सहित । अजिल्द ५-०० सजिल्द ६-५०

१०७९ **रसादि परिज्ञान** । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा २-००

१०८० **रसाध्यायः** । संस्कृत टीका सहित १-००

१०८१ **रसामृत** । वैद्य यादवजी कृत हिन्दी टीका सहित ५-००

१०८२ **रसायन और बाजीकरण** । जगन्नाथप्रसाद शुक्ल । भाषा २-००

१०८३ **रसायनखण्डम्** । नित्यनाथसिद्धकृत । संस्कृत ०-७५

१०८४ **रसायनतन्त्रम्** । हिन्दी टीका सहित ०-२५

१०८५ **रसायन प्रवेशिका** । साधुराम । भाषा ५-००

१०८६ **रसायनसंहिता** । हिन्दी टीका सहित १-००

१०८७ **रसायनसारः** । श्यामसुन्दराचार्य वैश्यकृत हिन्दी टीका सहित ८-००

१०८८ **रसार्णवं नाम रसतन्त्रम्** । मूल संस्कृत भागीरथी बृहद् टिप्पणी सहित ३-००

१०८९ **रसेन्द्रचिन्तामणिः** । मणिप्रभा संस्कृत टीका सहित ७-२५

१०९० **रसेन्द्रचिन्तामणिः** । ढुण्ढुकनाथकृत । बल्देवप्रसादकृत हिन्दी टीका सहित ३-५०

१०९१ **रसेन्द्रपुराणम्** । रामप्रसाद कृत हिन्दी टीका सहित ७-००

१०९२ **रसेन्द्रसंप्रदाय** । (प्रथम भाग) श्री हजारी प्रसाद शुक्ल । भाषा ५-००

१०९३ **रसेन्द्रसारसंग्रहः** । सचित्र । सटिप्पण 'बालबोधिनी' 'भागीरथी' सहित यन्त्रस्थ

१०९४ **रसेन्द्रसारसंग्रहः** । जीवानन्द कृत संस्कृत टीका सहित ३-१२

१०९५ **रसेन्द्रसारसंग्रहः** । सचित्र । कविराज अम्बिकादत्तशास्त्री कृत वैज्ञानिक 'गूढार्थसन्दीपिका' संस्कृत टीका सहित ४-००

१०९६ **रसेन्द्रसारसंग्रहः** । सचित्र । नवीन वैज्ञानिक 'रसचन्द्रिका' हिन्दीटीका श्री गिरिजादयालु कृत बृहद् विमर्श परिशिष्ट सहित ६-००

१०९७ **रसेन्द्रसारसंग्रहः** । वैद्य घनानन्द कृत संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ११–००
१०९८ **रसोई शिक्षा** । नृसिंहराम शुक्ल । भाषा १–५०
१०९९ **रसोद्धारतन्त्र** । (गुजराती भाषा) जीवराज कालीदास कृत १०–००
११०० **रसोपनिषद्** । हिन्दी टीका सहित । प्रथम भाग । अजिल्द ५–००
सजिल्द ६–५०
११०१ **राजकीय ओषधियोग संग्रह** । (कल्पविज्ञान सम्मिलित)
श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ग्लेज ८–०० रफ ७–००
११०२ **राजनिघण्टुः** । नरहरिकृत संस्कृत टीका सहित ३–१२
११०३ **राजमृगाङ्कः** । (रस–औषध-निर्माणविधि) नटराज शास्त्रिकृत २–७५
११०४ **राजयक्ष्मा चिकित्सा** । भाषा ०–५०
११०५ **राजयक्ष्मा-चिकित्सा** । प्रभाकर चटर्जी । भाषा १०–००
११०६ **राजयक्ष्माविज्ञान** । पारसनाथ पाण्डेय । भाषा २–००
११०७ **राजवल्लभनिघण्टुः** । रामप्रसाद वैद्य कृत हिन्दी टीका सहित २–५०
११०८ **राजा बेटा कैसे बनायें ?** (बाल-विकास) श्रीमती पुष्पा सुरेन्द्रनाथ ३–००
११०९ **रामविनोद** । भाषा १–००, २–५०
१११० **राष्ट्रियचिकित्सा–सिद्धयोग संग्रह** । श्रीरघुवीरप्रसाद त्रिवेदी । भाषा १–५०
११११ **रिलेशन–शिप** । डा० श्यामसुन्दर (नित्य व्यावहारिक औषधियों का
पारस्परिक सम्बन्ध) भाषा २–००
१११२ **रीठा के गुण तथा उपयोग** । सम्पादक—रामस्नेही । भाषा ०–८०
१११३ **रीठा गुण विज्ञान** । गणपति सिंह । भाषा ०–५०
१११४ **रुग्णपरिचर्या** । डा० म्हसकर । बंबई । भाषा ६–००
१११५ **रूपनिघण्टुः** । रूपलाल वैश्य । १–२ भाग । भाषा ३–००
१११६ **रेपर्टरी** । दवा चुनने के लिए । भट्टाचार्य ,, ११–००
१११७ **रोगनामावली कोष (रोग निदर्शिका) तथा वैद्यकीय मान-तौल** ।
वैद्यराज हकीम दलजीत सिंह ३–५०
१११८ **रोगनिदान** । (मराठी) १–२ भाग २–००
१११९ **रोगनिदान** । (गुजराती) चंद्रशेखर गोपालजी ठक्कुर ६–००
११२० **रोगनिदानचिकित्सा** । डा० श्यामसुन्दर । भाषा २–००
११२१ **रोग निवारण** । डा० शिवनाथ खन्ना । भाषा १४–००

११२२	रोगपरिचय। (सचित्र) डा० शिवनाथ खन्ना। भाषा	१२-७५
११२३	रोगलक्षणसंग्रह । भाषा	०-१६
११२४	रोगिरोग-विमर्श। डा० रमानाथ द्विवेदी	२-००
११२५	रोगी की सेवा और पथ्य। (सचित्र) डा० सुरेशप्रसाद। भाषा	३-००
११२६	रोगीपरिचर्या। रामदयाल कपूर। भाषा	२-२५
११२७	रोगि-परीक्षा-विधि। सचित्र। आचार्य प्रियव्रत शर्मा (नवीन संस्करण)	६-००
११२८	रोगि परीक्षा। डा० शिवनाथ खन्ना। भाषा	६-००
११२९	रोगिमृत्युविज्ञानम्। हिन्दी टीका सहित। मथुराप्रसाद दीक्षित	१-५०
११३०	रोगी शुश्रूषा। महेन्द्रनाथ पाण्डेय। भाषा	२-५०
११३१	रोगों की अचूक चिकित्सा। जानकीशरण वर्मा। भाषा	८-००
११३२	रोगों की नई चिकित्सा। लूई कूने। भाषा	२-००
११३३	रोगों की सरल चिकित्सा। विट्ठलदास मोदी। भाषा	४-००
११३४	रोगोत्पादक मक्खी। जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। भाषा	०-१६
११३५	लक्ष्मीमोदतरंगिणी। गणेशदत्त	१-५०
११३६	लगाने की औषधियाँ और प्रथमोपचार। भट्टाचार्य। भाषा	१-५०
११३७	लवण गुण विधान। गणपति सिंह। भाषा	०-२५
११३८	लवण विज्ञान। (नमक चिकित्सा) श्यामलाल सुहृद्। भाषा	०-३७
११३९	लहसन के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा	०-६२
११४०	लहसुन प्याज। रमेश वेदी। भाषा	२-५०
११४१	लाठी एवं शस्त्र शिक्षा। (सचित्र) श्यामसुन्दर 'सुमन'। भाषा	२-५०
११४२	वक्षपरीक्षा। भट्टाचार्य। भाषा	२-००
११४३	वङ्गसेनः। (चिकित्सासारसंग्रहः) मूल संस्कृत	६-२५
११४४	वङ्गसेनः। शालग्राम कृत हिन्दी टीका सहित	समाप्त
११४५	वटिका चिकित्सा। रामदेव त्रिपाठी। भाषा	०-५०
११४६	वन उपवन के पक्षी। जगपति चतुर्वेदी। भाषा	२-००
११४७	वन वाटिका के पक्षी। जगपति चतुर्वेदी। भाषा	२-००
११४८	वनस्पति की कहानी। जगपति चतुर्वेदी ,,	२-००
११४९	वनस्पति-परिचय। (संक्षिप्त-सचित्र) अन्तुभाई वैद्य। भाषा	६-००
११५०	वनस्पतिशास्त्र। ए. सी. दत्त। १-२ भाग। भाषा	१२-००

११५१ **वनस्पति शास्त्र** । डा० धर्मनारायण । भाषा ७-५०
११५२ **वनस्पति सृष्टि अर्थात् उद्भिज कोटि अने तेनो आहारिक औषधीय अने आर्थिक परिचय** । गोकुलदास । १-४ भाग (गुजराती) ५०-००
११५३ **वनौषधि-चन्द्रोदय** । चन्द्रराज भण्डारी । १-१० भाग । भाषा ४०-००
प्रत्येक पृथक् पृथक् भाग का मूल्य ५-००
११५४ **वनौषधिदर्शिका** । वनस्पति विशेषज्ञ प्रो० बलवन्त सिंह । भाषा २-५०
११५५ **वन्ध्याकल्पद्रुम अर्थात् स्त्रीचिकित्सासमूह** । चारो भाग समाप्त
११५६ **वसवराजीयम्** । वसवराजकृत । संस्कृत मूल ६-००
११५७ **वसवराजीय** । (भाषा) पूर्वार्ध ४-०० उत्तरार्ध ५-००
११५८ **वात्स्यायन के योग** । केदारनाथ पाठक । भाषा ०-७५
११५९ **वादिखण्ड-ऋद्धिखण्डम्** । नित्यनाथसिद्ध विरचित । संस्कृत ३-००
११६० **वायोकेमिक चिकित्साशास्त्र** । शिवनाथ सिंह १-७५
११६१ **वायोकेमिस्ट्री** । डा० अनन्तलाल शर्मा १-००
११६२ **विजया कल्प** । श्रीनिवास पाठक । भाषा ०-३७
११६३ **विज्ञान में ब्रह्मदर्शन या आयुर्वेद में आत्मज्ञान** । (पहला भाग)
कविराज कृष्णपद भट्टाचार्य । भाषा ३-००
११६४ **विज्ञान हस्तामलक** । रामदास गौड़ । भाषा १०-००
११६५ **विटामिन और हीनता जनित रोग** । डा० सुरेन्द्रनाथ । भाषा ४-००
११६६ **विटामिन द्वारा स्वास्थ्य** । डा० हीरालाल । भाषा १-००
११६७ **विटामिन्स** । डा० प्रियकुमार चौबे । भाषा १-७५
११६८ **विलक्षण जन्तु** । जगपति चतुर्वेदी । भाषा २-००
११६९ **विलुप्त वनस्पति** । जगपति चतुर्वेदी ,, २-००
११७० **विवाहित जीवन** । भाषा २-५०
११७१ **विवाहित जीवन में यौन संप्रयोग** । डा० सुरेन्द्रनाथ । भाषा ४-००
११७२ **विविध चिकित्सा चन्द्रोदय-हम निरोगी कैसे रहें ?**
स्वामी ब्रह्मानन्द । भाषा । १-२ भाग ०-५०
११७३ **विवेचनात्मक सूचीवेध पद्धति** । डा० प्रभाकर मिश्र । भाषा ५-५०
११७४ **विश्वविज्ञान** । हरिशरणानन्द वैद्य ३-००
११७५ **विषचिकित्सा दर्पण** । भाषा ०-२५

११७६ विषविज्ञान और अगदतन्त्र। डा० युगलकिशोर गुप्त एवं डा० रमानाथ द्विवेदी। भाषा १-७५
११७७ विहार की वनस्पतियाँ। ठा० बलवन्त सिंह। भाषा १-५०
११७८ वीरसिंहावलोकः। वीरसिंह कृत। मूल संस्कृत ३-५०
११७९ वृक्षविज्ञान। प्रवासीलाल वर्मा। भाषा ५-००
११८० वृक्ष विज्ञान चिकित्सा। राधाकृष्ण पाराशर एवं कृष्णादेवी पाराशर। भाषा २-२५
११८१ वृद्धत्रयी। गुरुपदशर्महालदार प्रणीत। संस्कृत ×
११८२ वृद्धावस्था दूर करने के उपाय। महेन्द्रलाल गर्ग। भाषा १-००
११८३ वृन्दमाधव-सिद्धयोगः। कण्ठदत्त कृत संस्कृत टीका १०-००
११८४ वृन्दवैद्यकः। वृन्दप्रणीत हिन्दी टीका सहित ७-००
११८५ वेदों में आयुर्वेद। रामगोपाल शास्त्री। भाषा १०-००
११८६ वेदों में वैद्यक ज्ञान। राधावल्लभ। भाषा ०-२५
११८७ वैज्ञानिक पशुपालन व चिकित्सा। चन्द्रनाथ मिश्र। भाषा ३-००
११८८ वैज्ञानिक प्राणायामरहस्य। अशोककुमार सिंह। भाषा २-२५
११८९ वैज्ञानिक सूर्य किरण चिकित्सा। भाषा १-००
११९० वैदिक चिकित्सा। सातवलेकर। भाषा १-५०
११९१ वैदिक सर्प विद्या। भाषा ०-६२
११९२ वैद्यकपरिभाषाप्रदीपः। नवीन 'प्रदीपिका' हिन्दी टीका सहित १-५०
११९३ वैद्यकरसराजमहोदधि। भाषा। १-५ भाग १०-००
११९४ वैद्य कलाधर। शिवनाथराम। भाषा १-५०
११९५ वैद्यकल्पद्रुमः। रघुनाथप्रसाद कृत हिन्दी टीका सहित ८-५०
११९६ वैद्यकशब्दकोश। विश्वेश्वरदयालु। भाषा ०-३७
११९७ वैद्यकसार। शिवनाथ राम। भाषा ०-७५
११९८ वैद्यक सार संग्रह। गोपालप्रसाद कौशिक। भाषा १-००
११९९ वैद्यकीय सुभाषितावली। अंग्रेजी अनुवाद सहित। डा० मेहता २-००
१२०० वैद्यकौस्तुभः। श्रीमेवाराममिश्र कृत। संस्कृत २-००
१२०१ वैद्य-चन्द्रोदयः। त्रिमल्लभट्ट कृत। हिन्दीटीका सहित १-००
१२०२ वैद्यजीवनम्। लोलिंबराजकृत। अभिनव 'सुधा' हिन्दीटीका टिप्पणी सहित १-२५

१२०३ वैद्य बाबा का बस्ता । (७६५ सिद्धयोगों का संग्रह) भाषा १-२५
१२०४ वैद्यमनोत्सव । नैनसुख कृत । भाषा ०-४४
१२०५ वैद्यमनोरमा-धाराकल्पः । कालिदास कृत । हिन्दीटीका सहित १-७५
१२०६ वैद्यरत्न । शिवनाथ राम । भाषा ०-७५
१२०७ वैद्यरहस्यम् । विद्यापति प्रणीत । दत्तराम कृत हिन्दीटीका सहित ५-००
१२०८ वैद्यवल्लभ । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा ०-५०
१२०९ वैद्यवल्लभ । हस्तिरुचि विरचित । हिन्दी टीका सहित ०-५०, १-००
१२१० वैद्यविनोदसंहिता । शंकरभट्ट कृत मूल सटिप्पण ३-००
१२११ वैद्यविशारदप्रश्नोत्तरी । हिन्दी साहित्य सम्मेलन । योगेशचन्द्र शुक्ल ४-००
१२१२ वैद्यसहचर । आचार्य विश्वनाथ द्विवेदी । भाषा ३-००
१२१३ वैद्यावतंसः । (लघुनिघण्टु) हिन्दीटीका सहित ०-३१
१२१४ वैद्योद्बोधन । गिरजादत्तपाठक वैद्य । भाषा ०-५०
१२१५ व्यञ्जन प्रकाश । भाषा ०-३७
१२१६ व्यवहारायुर्वेद-विषविज्ञान-अगदतन्त्र । डा० कविराज युगल किशोर गुप्त एवं डा० रमानाथ द्विवेदी । भाषा ४-५०
१२१७ व्यवहारायुर्वेद-कानूनी वैद्यक । कृष्णबलवन्त । भाषा ३-५०
१२१८ व्याधिनिग्रहः प्रशस्तौषधसंग्रहः । मूल संस्कृत १-२५
१२१९ व्याधिमूलविज्ञान । स्वा० हरिशरणानन्द । पूर्वार्द्ध । भाषा १२-००
१२२० व्याधिविज्ञान । आशानन्द । १-२ भाग १६-००
१२२१ व्यायाम और शारीरिक विकास । श्री अशोककुमार । भाषा २-५०
१२२२ व्यायाम वा कल्प (कायाकल्प) । युगलकिशोर चौधरी । भाषा २-००
१२२३ व्यायाम शिक्षा । (सचित्र) स्वामी शंकरानन्द सरस्वती । भाषा २-५०
१२२४ व्यायाम सन्देश । आचार्य भगवान देव । भाषा १-००
१२२५ व्रणबन्धन । डा० भवानी प्रसाद । भाषा ४-००
१२२६ व्रणशोथविमर्श । डा० अवधविहारी अग्निहोत्री ३-००
१२२७ व्रणोपचार पद्धति । महावीर प्रसाद मालवीय । भाषा ०-३७
१२२८ शरीर और स्वास्थ्य । डा० गिरीशनाथ दीक्षित । भाषा २-००
१२२९ शरीर और स्वास्थ्य । वेनीचरण महेन्द्र १-००

१२३० शरीर और स्वास्थ्य संदेश। हरसहाय महता। प्रथम भाग १-५०
१२३१ शरीरक्रियाविज्ञान। (सचित्र) वैद्य प्रियव्रतशर्मा। भाषा १०-००
१२३२ शरीर परिचय। जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। भाषा २-००
१२३३ शरीरपुष्टिविधान। भाषा ०-६०
१२३४ शरीर प्रदीपिका। डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा। भाषा ५-००
१२३५ शरीर-रचना (शरीर विज्ञान)। डा० टण्डन। भाषा २-७५
१२३६ शरीर रचना-क्रिया और स्वास्थ्य विज्ञान। डॉ० एल० पी० माथुर २-७५
१२३७ शरीर विकास एवं स्वास्थ्य सिद्धान्त। हीरालाल ओझा १-५०
१२३८ शरीर विज्ञान। डा० वि० ना० भावे। भाषा ३-२५
१२३९ शरीर विज्ञान और तात्कालिक चिकित्सा। केदारनाथ गुप्त। भाषा १-२५
१२४० शरीर विज्ञान और स्वास्थ्य। श्रीमती रानी टण्डन। भाषा २-५०
१२४१ शरीर विज्ञान और स्वास्थ्यकला। आर. एम. मेहरोत्रा। भाषा ०-७५
१२४२ शरीर विद्या। (बंगला) रुदेन्द्रकुमार पाल १२-००
१२४३ शरीर शिक्षक। श्री जगन्नाथ वापट ४-५०
१२४४ शरीर स्वास्थ्य विज्ञान। डा० नागेन्द्रपति त्रिपाठी। भाषा २-००
१२४५ शर्बतविज्ञान अथवा शर्बतों का व्यापार। हुकुमचन्द गुप्ता। भाषा २-५०
१२४६ शल्यतन्त्र (प्राच्य-पाश्चात्य)। १-२ भाग। बालकराम शुक्ल। भाषा समाप्त
१२४७ शल्यतन्त्र में रोगी परीक्षा। डा. पी. जे. देशपाण्डे B. H. U. ७-००
१२४८ शल्यतन्त्रसमुच्चयः। वामदेवमिश्र कृत। मूल संस्कृत ३-००
१२४९ शल्य-प्रदीपिका। (A Text Book of Surgery) ३९२ चित्रों सहित। डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा। भाषा १२-५०
१२५० शल्य विज्ञान की कहानी। जगपति चतुर्वेदी। भाषा २-००
१२५१ शवच्छेदविज्ञान। प्र० भाग। डा० विद्यासागर पाण्डेय ,, ३-००
१२५२ शहतूत। (उपयोग करने के विस्तृत तरीके) रमेश वेदी। भाषा ०-४०
१२५३ शहतूत के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा ०-५०
१२५४ शहद। रमेश वेदी। भाषा ३-००
१२५५ शहद के गुण और उपयोग। महेन्द्रनाथ। भाषा ०-७५
१२५६ शाक भाजी की खेती। भाषा ३-५०

१२५७ **शारीरं तत्त्वदर्शनम्** । हिर्लेकर शर्मा । संस्कृतटीका हिन्दी अनुवाद सहित ६–००
१२५८ **शारीरपरिभाषा** । संस्कृत से अंग्रेजी, अंग्रेजी से संस्कृत समाप्त
१२५९ **शारीरिकोन्नति** । वैद्य ठाकुरदत्तशर्मा । भाषा २–००
१२६० **शार्ङ्गधरसंहिता** । मूल सटिप्पण २–५०
१२६१ **शार्ङ्गधरसंहिता** । दीपिका–गूढार्थदीपिका संस्कृत टीका सहित ८–००
१२६२ **शार्ङ्गधरसंहिता** । नवीन वैज्ञानिक विमर्शोपेत 'सुबोधिनी' हिन्दी टीका 'लक्ष्मी' टिप्पणी तथा पथ्यापथ्यादि विविध परिशिष्ट सहित ५–००
१२६३ **शालहोत्र** । बड़ा । सचित्र (भाषा) २–००
१२६४ **शालाक्यतन्त्र (निमितन्त्र)** । डा० रमानाथ द्विवेदी । भाषा ६–००
१२६५ **शालिग्रामनिघण्टुभूषण** । लाला शालिग्राम कृत भाषा टीका सहित १६–००
१२६६ **शालिग्रामौषधि–शब्दसागरः** । वैद्य शालग्राम कृत ४–५०
१२६७ **शालिहोत्रम्** । भोजराज विरचित । ए० द० कुलकर्णी संपादित ८–००
१२६८ **शालिहोत्र** । नकुलकृत । छन्दोबद्ध भाषा १–२५
१२६९ **शालिहोत्र संग्रह** । बड़ा । छन्दोबद्ध । भाषा ५–००
१२७० **शिकारी पक्षी** । जगपति चतुर्वेदी । भाषा २–००
१२७१ **शिफाउल अमराज** । १–२ भाग । यूनानी । भाषा २–५०
१२७२ **शिलाजीत विज्ञान** । डा० जाह्नवीप्रसाद जोशी । भाषा ०–७५
१२७३ **शिवनाथसागर** । डा० शिवनाथ सिंह । भाषा ७–००
१२७४ **शिशु आहार व्यवस्था** । सुरेन्द्रनाथ ,, ३–३७
१२७५ **शिशुपालन** । वलवन्त सिंह । भाषा १–७५
१२७६ **शिशुपालन** । अत्रिदेव गुप्त ,, ४–००
१२७७ **शिशुपालन** । व्यथित हृदय ,, ०–६२
१२७८ **शिशुपालन** । मुरलीधर वौड़ाई ,, ४–००
१२७९ **शिशुपालन** । दुर्गादेवी–मायादेवी । भाषा २–००
१२८० **शिशुपालन** । चक्र० राजगोपालाचार्य ,, ०–५०
१२८१ **शिशुरोगांक** । रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ,, ७–००
१२८२ **शिशुरोगों की गृह चिकित्सा** । कुलरंजन मुकर्जी । भाषा ३–००
१२८३ **शिशु संरक्षण** । मुकुन्दस्वरूप वर्मा । भाषा २–००
१२८४ **शीतला परिहार (आरोग्यामृत बिन्दु)** । जीयालाल कृत । भाषा २–५०

२८५ शुभसन्ततियोगप्रकाशः। रामप्रसाद कृत हिन्दीटीका सहित २-५०
२८६ शेखर सम्प्रदाय (दूसरी पुस्तक)। डा० स्वामी चन्द्रशेखर चौधरी १-४४
२८७ शेखावाटी की जड़ी बूटियां। नित्यानन्द-कैलाशचन्द्र शर्मा। भाषा १-५०
२८८ श्वासरोग अङ्क। (धन्वन्तरि)। भाषा १-००
२८९ श्वास रोग पर स्नातकोत्तर निबंध। भाषा १-५०
२९० संक्रामक रोग। रघुवीर शरण शर्मा वैद्य। प्रथम भाग ३-५०
२९१ संक्रामकरोगचिकित्सा। भाषा ०-७५
२९२ संक्रामक रोग विज्ञान। कविराज बालक राम शुक्ल। भाषा ६-५०
२९३ संक्रामकरोगाङ्क। सपरिशिष्ट। मदन गोपाल। भाषा ५-००
२९४ संक्षिप्त औषध परिचय। भाषा ०-६२
२९५ संक्षिप्त चिकित्सा विज्ञान। प्रथमखंड। वैद्य रामशिरोमणि द्विवेदी ५-००
२९६ संक्षिप्त दोषधातु मलविज्ञान। डा० ह० म० पटवर्धन। भाषा ३-००
२९७ संक्षिप्त निदानात्मक प्रयोग विधियां तथा विवेचन। एस. वी. व्यास। भाषा ५-५०
२९८ संक्षिप्त शल्य विज्ञान। डा० मुकुन्द स्वरूप वर्मा। भाषा ८-००
२९९ संगतरा-गुणविधान। डा० गणपति। भाषा ०-३७
३०० संज्ञापञ्चकविमर्शः। गणनाथसेन। संस्कृत ३-००
३०१ संजीवनी विद्या। रामचन्द्रवर्मा। भाषा ०-७५
३०२ संतरे के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा ०-५०
३०३ संदिग्ध द्रव्यविज्ञान। पं० राजितराम पाण्डेय। भाषा १-५०
३०४ संन्यासियों की गुप्त बूटियां अर्थात् भारतीय देहाती जड़ी बूटियां। १-२ भाग। भाषा ७-००
३०५ संन्यासी चिकित्सा शास्त्र अथवा साधु की चुटकी। सम्पादक—अमोलचन्द्र शुक्ल। भाषा ५-००
३०६ संस्कारविधि विमर्श। अत्रिदेव गुप्त। भाषा ३-००
३०७ संस्कृत साहित्य मां वनस्पति। संस्कृत श्लोक। गुजराती विवरण ८-००
३०८ संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद। अत्रिदेव गुप्त। भाषा ३-००
३०९ सचित्र आयुर्वेद-राजयक्ष्मा अंक। भाषा २-००
३१० सचित्र आयुर्वेद-स्वास्थ्य अङ्क। भाषा ३-००

१३११ सचित्र क्लिनिकल पैथौलोजी। (बृहत् मल-मूत्र कफ-रक्तादि परीक्षा) डा० शिवनाथ खन्ना। भाषा। १०-००
१३१२ सचित्र-इन्जेक्शन। डा० शिवनाथ खन्ना १०-००
१३१३ सचित्र गर्भरक्षा तथा शिशुपरिपालन। डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा ४-५०
१३१४ सचित्र योगासन। शेरसिंह शास्त्री। भाषा ०-५०
१३१५ सचित्र योगासन। सत्यकाम सिद्धान्त शास्त्री। भाषा १-००
१३१६ सचित्र योगासन और अक्षय युवावस्था। स्वा० शिवानन्द। भाषा २-५०
१३१७ सचित्र लघुद्रव्यगणादर्श। कविराज महेन्द्रकुमार शास्त्री। भाषा ३-५०
१३१८ सत्यनारायण शास्त्री जी का अभिनन्दन ग्रन्थ। सचित्र १५-००
१३१९ सन्ततिनिग्रह। डा० शिवदयाल। भाषा १-२५
१३२० सन्तति नियमन। डा० मेरी स्टोप्स। भाषा २-००
१३२१ सन्तति-निरोध कब, क्यों और कैसे। डा० सुरेन्द्रनाथ। भाषा ४-००
१३२२ सन्तति निरोध एवं गर्भविज्ञान। हरीश २-५०
१३२३ सन्ताननिग्रह क्यों और कैसे। ज्योतिर्मयी ठाकुर। भाषा ३-००
१३२४ सन्तानशास्त्र। गणेशदत्त। भाषा ५-००
१३२५ सन्निपातज्वर चिकित्सा। वैद्य चक्रपाणि शर्मा। भाषा ६-००
१३२६ सप्तधातुनिरूपणम् (रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत) भैरवानन्दकृत। संस्कृत ३-००
१३२७ सफल जीवन। प्रो० रामचन्द्र शर्मा। भाषा ३-००
१३२८ सफलता का रहस्य। भाषा २-५०
१३२९ सफलता की कुंजी। भाषा ०-१२
१३३० समुद्री जीव जन्तु। जगपति चतुर्वेदी। भाषा २-००
१३३१ सम्भोगरहस्यम्। कोक्कोक कवि विरचित। सचित्र। भाषा टीका ३-००
१३३२ सरल आयुर्वेदशिक्षा। भाषा ७-००
१३३३ सरल चिकित्सा अरुणोदय। आर. एस. बंसल, डी. पी. गोयल। भाषा ३-००
१३३४ सरल चिकित्सा विज्ञान। श्री रामजीत सिंह। भाषा ७-००
१३३५ सरल चिकित्सा विज्ञान। डा० गुरुप्रसाद खन्ना। भाषा ३-२५
१३३६ सरल देहाती इलाज (वैद्यकसार संग्रह)। रघुनाथ दास। भाषा १-००
१३३७ सरल योगासन और उनकी विधियाँ। धर्मचन्द सरावगी। भाषा २-५०
१३३८ सरल योगासन विधि। केदारनाथ गुप्त। भाषा २-५०

१३३९ **सरल रोग विज्ञान** । रवीन्द्रशास्त्री । भाषा ५-००
१३४० **सरल विज्ञान** । श्यामसुन्दर कौल । भाषा २-२५
१३४१ **सरल विज्ञान परिचय** । श्री अरुण कुमार दत्त । भाषा ४-००
१३४२ **सरल-विषविज्ञान-अगदतन्त्र** । कविराज युगल किशोर गुप्त । भाषा १-७५
१३४३ **सरल व्यवहारायुर्वेद और विषविज्ञान** । कविराज युगलकिशोर गुप्त,, ४-५०
१३४४ **सरल शरीरविज्ञान** । नारायणदास बाजोरिया । भाषा १-५०
१३४५ **सरल शरीरविज्ञान** । जानकीशरण वर्मा । भाषा १-५०
१३४६ **सरल स्वास्थ्य विधि** । सत्यपाल ४-००
१३४७ **सरल होमियोपैथिक चिकित्सा** । २-५०
१३४८ **सरल होमियोपैथिक चिकित्सा** । डा० एस. एस. मिश्र । भाषा ८-००
१३४९ **सर्जरी (चीर फाड़)** । डा० टण्डन । भाषा ४-००
१३५० **सर्पगंधा** । (चमत्कारी जड़ी के विस्तृत प्रयोग) रमेश वेदी । भाषा ०-३७
१३५१ **सर्पदंश चिकित्सा प्रश्नोत्तरी** । डा० इन्द्रदेवनारायण सिंह । भाषा १-००
१३५२ **सर्पविषविज्ञान** । दलजीत सिंह । भाषा १-२५
१३५३ **सर्प संसार** । डा० रामशरणदास । भाषा १-५०
१३५४ **सर्वरोगहर पूर्ण चन्द्रोदय (कूपीपक्क रसायन)** । कन्हैयालाल गौरीशंकर । गुजराती ०-५०
१३५५ **सर्वविधविषचिकित्सा प्रतिपादिका काश्यपसंहिता** । मूल संस्कृत ४-००
१३५६ **सल्फोनामाइड और एन्टीबायोटिक्स** । डा० प्रियकुमार चौबे । भाषा २-५०
१३५७ **सव्यवहारायुर्वेदापमृत्युविज्ञानम्** । १-२ भाग । गणेशदत्त ८-००
१३५८ **सहस्ररसदर्पण (अर्थात् रसहजारा)** । संकलन कर्ता- पं० गोपाल प्रसाद । भाषा २-५०
१३५९ **सांख्यतत्त्वचिन्ता** [विवरणात्मक गुजराती भाषा में वर्णन] ०-५०
१३६० **सांपों की दुनिया** । रमेश वेदी । भाषा ४-००
१३६१ **साधारण रसायन** । फूलदेव सहाय वर्मा । १-२ भाग । भाषा ११-००
१३६२ **साबुन विज्ञान** । श्यामनारायण कपूर । भाषा ६-००
१३६३ **सामान्य रसायन शास्त्र** । डा० सत्यप्रकाश । भाषा १४-००
१३६४ **सामान्य रोगों की रोकथाम** । डा० प्रियकुमार चौबे । भाषा ३-५०

१३६५ सामान्य शल्य विज्ञान । शिव दयाल गुप्त । भाषा १२-००
१३६६ सिद्धचिकित्साङ्क । देवीशरण गर्ग । भाषा ४-००
१३६७ सिद्धपरीक्षापद्धति । प्रथमखण्ड । भाषा ८-००
१३६८ सिद्धप्रयोग । १-२ भाग । विश्वेश्वरदयालु । भाषा १-५०
१३६९ सिद्ध भेषज संग्रह । सम्पादक-श्री गङ्गासहाय पाण्डेय (भाषा)
सुलभ संस्करण ७-००, उत्तम संस्करण ८-००, राजसंस्करण ६-००
१३७० सिद्धमृत्युञ्जय योग । भाषा १-००
१३७१ सिद्धयोग संग्रह । यादवजी । भाषा २-७५
१३७२ सिद्ध रसायन । रसायन फार्मेसी । भाषा ५-००
१३७३ सिद्धान्तनिदानम् । गणनाथसेनकृत । प्रथम भाग । संस्कृत ५-५०
१३७४ सिद्धौषधमणिमाला । भगीरथ स्वामी । भाषा ५-००
१३७५ सिद्धौषधिप्रकाश । बालमुकुन्द वैद्य शास्त्री ,, २-००
१३७६ सिन्हा संक्षिप्त अमेरिकन पारिवारिक चिकित्सा २-५०
१३७७ सिन्हा संक्षिप्त हिन्दी होमियोपैथिक-अमेरिकन फार्माकोपिया
या भैषज्यविधान । भाषा १-५०
१३७८ सिन्हा मेडिकल डिक्शनरी हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी ३-००
१३७९ सिन्हा अमेरिकन मेटेरिया मेडिका संक्षिप्त २-५०
१३८० सिन्हा अमेरिकन बायोकेमिक तत्त्व २-५०
१३८१ सिन्हा आदर्श मेटेरिया मेडिका । यल. राय ५-००
१३८२ सिन्हा होमियोपैथिक आर्गेनन ४-००
१३८३ सिन्हा होमियोपैथिक फार्माकोपिया २-५०
१३८४ सिन्हा बृहत् होमियो इंजेक्शन चिकित्सा ४-००
१३८५ सिन्हा बृहत् होमियो परीक्षा विधान (मल, मूत्र, छाती) २-५०
१३८६ सिन्हा बृहत् एनाटोमी एण्ड फिजियालोजी २-५०
१३८७ सिन्हा बृहत अमेरिकन पारिवारिक चिकित्सा ६-५०
१३८८ सिन्हा बृहत् कम्पैरेटिव मेटेरिया मेडिका ८-००
१३८९ Sinha One Thousand Red Lines 2-50
१३९० सिन्हा रिलेशनशिप आफ मेडिसिन्स २-५०
१३९१ सिन्हा होमियो पद्यावली (मेटेरिया मेडिका) २-५०

१३९२ सिन्हा भारतीय औषध विधान (Indian Drugs) २–५०
१३९३ सिन्हा नारी चिकित्सा विज्ञान व मिडवाइफरी २–५०
१३९४ सिन्हा मदर टिंचर मेटेरिया मेडिका २–५०
१३९५ सिन्हा अमेरिकन पाकेट मेटेरिया मेडिका १–५०
१३९६ सिरस के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा १–१२
१३९७ सुखी गृहणी । विजय बहादुर सिंह । भाषा २–५०
१३९८ सुखीजीवन । विजय बहादुर सिंह ,, २–५०
१३९९ सुधाकर फार्माकोपिआ । डा० एस० पी० गुप्त संगृहीत ३–००
१४०० सुन्दर दाँत और उनकी देख रेख । डॉ० सुरेन्द्रनाथ गुप्त । भाषा २–००
१४०१ सुलभ देहाती नुस्खे । डा० सुरेशप्रसाद शर्मा १–२५
१४०२ सुलभ विज्ञान । जगधर झा । भाषा ५–००
१४०३ सुश्रुतसंहिता । मूल १०–००
१४०४ सुश्रुतसंहिता । सूत्रस्थान । भानुमती संस्कृत व्याख्या समेत ४–००
१४०५ सुश्रुतसंहिता । डल्हण कृत संस्कृत टीका सहित । १–२ भाग २५–००
१४०६ सुश्रुतसंहिता । डा० कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री कृत 'आयुर्वेद-तत्त्वसंदीपिका' हिन्दी व्याख्या वैज्ञानिक विमर्श सहित । १–२ भाग । सजिल्द संपूर्ण २४–००
१४०७ सुश्रुतसंहिता–सूत्र–निदानस्थान । डा० कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री कृत 'आयुर्वेदतत्त्वसंदीपिका' हिन्दी व्याख्या वैज्ञानिक विमर्शयुत । डाक्टर प्राणजीवन मेहता कृत विस्तृत प्रस्तावना सहित ७–००
१४०८ सुश्रुतसंहिता–शारीरस्थानम् । नवीन वैज्ञानिक 'प्रभा'–'दर्पण' विस्तृत हिन्दी व्याख्या सहित । तृतीय संस्करण ३–५०
१४०९ सुश्रुतसंहिता–चिकित्सा-कल्पस्थान । डा० प्रियव्रत सिंह तथा डा० अवधबिहारी अग्निहोत्री कृत 'आयुर्वेदतत्त्वसंदीपिका' हिन्दी व्याख्या वैज्ञानिक विमर्श सहित ६–००
१४१० सुश्रुतसंहिता–उत्तरतन्त्र । डाक्टर कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री कृत 'आयुर्वेदतत्त्वसंदीपिका' हिन्दी व्याख्या वैज्ञानिक विमर्श सहित १२–५०
१४११ सूखारोगाङ्क । भाषा १–००
१४१२ सूचीवेध चिकित्सा । रवीन्द्रचन्द्र । भाषा ३–००
१४१३ सूचीवेध–विज्ञान । डा० राजकुमार द्विवेदी । भाषा । द्वितीय संस्करण १–५०

१४१४ सूचीवेधविज्ञान । रमेशचन्द्र वर्मा । भाषा ७-५०
१४१५ सूजाक चिकित्सासंग्रह । गणेशदत्त । भाषा ०-५०
१४१६ सून बाईचा नटवा अर्थात् कुटुंब चिकित्सा कौमुदी । डॉ० र० कृ० गर्दे । मराठी ८-५०
१४१७ सूर्यकिरण चिकित्सक । रामनारायण दूबे ३-५०
१४१८ सूर्यकिरण चिकित्सा । गोविन्द बापुजी टोंगु । भाषा ६-००
१४१९ सूर्य चिकित्सा अर्थात् सूर्य की रोशनी वा किरणों से रंगों द्वारा सब रोगों की इलाज की विधि १-२५
१४२० सूर्यनमस्कार । भाषा ०-२५
१४२१ सूर्य नमस्कार । राजा साहब औंध । भाषा १-००
१४२२ सूर्य नमस्कार । औंधराज के चीफ साहब । भाषा २-००
१४२३ सूर्य भेदन व्यायाम । सचित्र । भाषा ०-७५
१४२४ सूर्यरश्मिचिकित्सा । भाषा १-००
१४२५ सूर्यरायान्ध्रनिघण्टुः । तेलुगु, संस्कृत, पदशूपिष्ठ १-७ भाग १००-००
१४२६ सूर्योपासना आणि प्राणायाम । डॉ० र० कृ० गर्दे । मराठी २-००
१४२७ सेक्स का स्वभाव । मन्मथनाथ गुप्त । भाषा ३-००
१४२८ सेब के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०-५०
१४२९ सोंठ । रमेशवेदी । भाषा १-५०
१४३० सोंठ । भाषा ०-७५
१४३१ सोने की कला । भाषा ०-७५
१४३२ सौंफ के गुण तथा उपयोग । सम्पादक—रामस्नेही । भाषा १-००
१४३३ सौंफचिकित्सा । मथुराप्रसाद गुप्त । भाषा ०-३७
१४३४ सात्तिकम् । प्रभुभाई मदनभक्त कृत । गुजराती भाषा ६-००
१४३५ सौन्दर्य और स्वास्थ्य साधन । श्री सूरजमुखी अग्रवाल । भाषा १-५०
१४३६ सौ रोगों का सफल इलाज । चन्द्रशेखर शास्त्री । भाषा १-७५
१४३७ सौ वर्ष क्यों और कैसे जीयें । स्वामी शंकरानन्द सरस्वती २-५०
१४३८ सौ शिखर अथवा हंड्रेड पोलिक्रेस्ट्स । डा० डी० पी० मैत्र (होमियोपैथी) ०-७५
१४३९ सौश्रुती । डा. रमानाथ द्विवेदी । भाषा । द्वितीय संस्करण ८-५०

१४४० स्टेथिस्कोप तथा नाड़ीपरीक्षा । (सचित्र)
डा० जाह्नवीप्रसाद जोशी । भाषा ०-७५

१४४१ स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग । अत्रिदेव गुप्त । भाषा ३-००
१४४२ स्त्रियों के रोग और चिकित्सा । युद्धवीर सिंह । भाषा ३-७५
१४४३ स्त्री और पुरुष-सचित्र । कविराज शान्तिप्रसाद जैन । भाषा ४-५०
१४४४ स्त्री और पुरुष । टालस्टाय । अनुवादक ज्ञानचंद जैन । भाषा १-००
१४४५ स्त्री चिकित्सा । हिन्दी टीका सहित ०-६२
१४४६ स्त्री चिकित्सा । डा० युगलकिशोर । भाषा ०-७५
१४४७ स्त्री धर्मशिक्षा । राजदेव दीक्षित [स्त्रियोपयोगी सर्वश्रेष्ठ] भाषा ५-००
१४४८ स्त्री रोग चिकित्सा । (होमियोपैथी) डा० सुरेश । ,, ४-५०
१४४९ स्त्री रोग चिकित्सा । (,,) भट्टाचार्य । ,, ४-००
१४५० स्त्री रोग चिकित्सा । ऋषिकुमार शर्मा । भाषा १-२५
१४५१ स्त्री रोग चिकित्सा । १-००
१४५२ स्त्री रोग चिकित्सा । (होमियोपैथी) डॉ० टण्डन । भाषा ३-००
१४५३ स्त्री रोग विज्ञान । (सचित्र) डा० रमानाथ द्विवेदी । भाषा ३-००
१४५४ स्त्री रोगांक । भाषा ४-००
१४५५ स्त्री रोगों की गृह चिकित्सा । कुलरंजन मुखर्जी । भाषा ३-५०
१४५६ स्त्री रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा । भाषा ०-७५
१४५७ स्त्री-विज्ञान (प्रसूतिशास्त्र) । प्रथम भाग । अन्तु भाई वैद्य । भाषा १०-००
१४५८ स्नानचिकित्सा । रवीन्द्रनाथ । भाषा ०-६२
१४५९ स्वप्नदोष और वीर्यसञ्जीवन । अमरचन्द पाण्डेय । भाषा २-००
१४६० स्वप्नदोष और उसकी चिकित्सा । सं० श्रीकृष्णलाल । भाषा १-५०
१४६१ स्वप्नदोष की रामबाण चिकित्सा । दाऊदयाल गुप्त । भाषा १-००
१४६२ स्वप्नदोष-रक्षक । गणेशदत्त शर्मा गौड़ । भाषा ०-५०
१४६३ स्वप्नदोषविज्ञान । गणेशदत्त 'इन्द्र' । भाषा २-००
१४६४ स्वयं चिकित्सक (डाक्टरी सार संग्रह) । राधावल्लभ पाठक । भाषा ३-००
१४६५ स्वयं चिकित्सक । वैद्य प्रभुदयाल । भाषा १-००
१४६६ स्वयं भिषक् । (गुजराती भाषा) अन्तुभाई वैद्य २-५०

१४६७ **स्वयं वैद्य** (औषधिरत्न संग्रह)। प्रथम भाग। नैपाली भाषा ४–५०
१४६८ **स्वर्णक्षीरीगुणविधान**। गणपति सिंह। भाषा ०–७५
१४६९ **स्वस्थ जीवन के लिये भोजन**। ज्योतिर्मयी ठाकुर। भाषा २–५०
१४७० **स्वस्थवृत्तम्**। १–२ खण्ड। के. एम. म्हस्कर २८–००
१४७१ **स्वस्थवृत्तसमुच्चयः**। श्री राजेश्वरदत्तशास्त्री कृत। हिन्दी टीका सहित ६–५०
१४७२ **स्वादिष्ट अचार**। श्रीमती आद्यादेवी २–५०
१४७३ **स्वादिष्टचिकित्साङ्क**। चन्द्रशेखर जैन शास्त्री। भाषा ३–२५
१४७४ **स्वादिष्ट संग्रह**। परशुराम जोशी। भाषा १–००
१४७५ **स्वास्थ्य–चिकित्सा, कायापुष्करशिक्षा तथा चिकित्सा–प्रवेश**। डा० आर० सी० भट्टाचार्य ८–००
१४७६ **स्वास्थ्य एवं खाद्य गुण संग्रह**। परशुराम जोशी। भाषा १–००
१४७७ **स्वास्थ्य एवं योगासन**। स्वामी शंकरानन्द सरस्वती। सचित्र २–५०
१४७८ **स्वास्थ्य और जलचिकित्सा**। केदारनाथ। भाषा ३–५०
१४७९ **स्वास्थ्य और दीर्घायु**। भाषा १–२५
१४८० **स्वास्थ्य और योगासन**। सचित्र। स्वामी सत्यानन्द सरस्वती ३–००
१४८१ **स्वास्थ्य और व्यायाम**। केशव कुमार ठाकुर। भाषा २–००
१४८२ **स्वास्थ्य और सद्वृत्त**। अत्रिदेव। भाषा २–००
१४८३ **स्वास्थ्य के लिए शाक तरकारियां**। महेन्द्रनाथ पाण्डेय। भाषा २–००
१४८४ **स्वास्थ्य कैसे पाया**। विठ्ठलदास मोदी। भाषा १–५०
१४८५ **स्वास्थ्य परिचय**। डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा। भाषा २–५०
१४८६ **स्वास्थ्य प्रदीपिका**। डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा। भाषा १–५०
१४८७ **स्वास्थ्य मन्दाकिनी**। एस. डी. जाफर। १–४ भाग। भाषा १–७५
१४८८ **स्वास्थ्य–रक्षा**। बालमुकुन्द। भाषा ०–५०
१४८९ **स्वास्थ्यरक्षा**। चतुरसेन शास्त्री। भाषा १–००
१४९० **स्वास्थ्यरक्षा**। हरिदास वैद्य ,, ५–००
१४९१ **स्वास्थ्य विज्ञान**। (सचित्र) डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर। भाषा ६–५०
१४९२ **स्वास्थ्यविज्ञान**। डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा। भाषा ७–००
१४९३ **स्वास्थ्य शिक्षा**। १–२ भाग। जानकीशरण वर्मा। भाषा ०–५०
१४९४ **स्वास्थ्य शिक्षा**। हरनामदास। भाषा २–००

१४९५ स्वास्थ्यशिक्षा और व्यक्तिगत व्यायाम। प्रकाशचन्द्र। भाषा ६–००
१४९६ स्वास्थ्य संलाप। कृष्णानंद गुप्त। भाषा १–००
१४९७ स्वास्थ्यसंहिता। कविराज नानकचंद वैद्यशास्त्री कृत। हिन्दीटीकासहित २–५०
१४९८ स्वास्थ्यसाधन। रामदास गौड़। भाषा ४–००
१४९९ स्वास्थ्य साधन। भाषा ०–२५
१५०० स्वास्थ्यस्थान (स्वास्थ्यशिक्षा पाठावली)। डा० घाणेकर प्रेस में
१५०१ हजार बीमारियाँ। डा० डी० पी० मैत्र (होमियोपैथी) ०–७५
१५०२ हंसराजनिदानम्। हिन्दी टीका सहित समाप्त
१५०३ हम सौ वर्ष कैसे जीवें। केदारनाथ गुप्त। भाषा २–५०
१५०४ हम स्वस्थ कैसे रहें। सत्यकाम सिद्धान्त शास्त्री। भाषा ६–००
१५०५ हमारा भोजन। महेन्द्रनाथ । भाषा ४–००
१५०६ हमारा भोजन। ज्ञानेन्द्रनाथ। भाषा १–५०
१५०७ हमारा शत्रु (तम्बाकू का नशा)। भगवान् देव ०–२०
१५०८ हमारा शरीर। आचार्य चतुरसेन शास्त्री। भाषा ०–७५
१५०९ हमारा शरीर। गंगा प्रसाद गौड़ 'नाहर'। भाषा १–००
१५१० हमारा शरीर। राममूर्ति मेहरोत्रा। भाषा ०–२५
१५११ हमारा सुख। भाषा ०–०६
१५१२ हमारा स्वर मधुर कैसे हो। भाषा ०–७५
१५१३ हमारी आँखें। एम० एस० अग्रवाल। भाषा। सजिल्द ५–००
१५१४ हमारे भोजन की समस्या। अत्रिदेव गुप्त । भाषा १–७५
१५१५ हमारे भोजन की समस्या। रामअवध द्विवेदी ,, १–५०
१५१६ हमारे शरीर की रचना। त्रिलोकीनाथ वर्मा। १–२ भाग। भाषा समाप्त
१५१७ हमें क्या खाना चाहिये। युगल किशोर चौधरी। भाषा १–२५
१५१८ हरमेखला। माहुकविरचित संस्कृत टीका सहित। १–२ भाग २–५०
१५१९ हरिधारित ग्रन्थ रत्न। हिन्दीटीका। वासुदेव ०–३७
१५२० हरिहरसंहिता। वैद्य हरिहरनाथ कृत हिन्दीटीका सहित ८–००
१५२१ हल्दी। विश्वेश्वर दयालु। भाषा १–००
१५२२ हल्दी के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा ०–८७
१५२३ हस्तायुर्वेदः। पालकाप्यमुनि कृत। मूल संस्कृत ११–००

१५२४ हारीतसंहिता । मूल ५-००
१५२५ हारीतसंहिता । हिन्दीटीका सहित ८-५०
१५२६ हिकमतप्रकाशः । महादेवदेव कृत संस्कृत टीका सहित ३-००
१५२७ हितोपदेशः (वैद्यक) । हिन्दीटीका सहित ३-००
१५२८ हिन्दू रसायनशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास । प्रभाकर चट्टोपाध्याय । प्रथम भाग । बंगला ५-००
१५२९ हृत्क्रियाव्याधिविज्ञानम् । गणेशदत्त कृत ०-७५
१५३० हृदय परीक्षा । रमेशचन्द्र वर्मा । भाषा २-००
१५३१ हृदयविज्ञानम् । गणेशदत्त कृत हिन्दीटीका सहित ०-३७
१५३२ हैजा (विसूचिका) चिकित्सा । डा० जाह्नवी प्रसाद जोषी ०-७५
१५३३ हैजाचिकित्सा । भट्टाचार्य । भाषा २-००
१५३४ होमियो इञ्जेक्शन चिकित्सा । डा० सुरेश । भाषा १-७५
१५३५ होमियो कम्परेटिव प्रिंस मेटेरिया मेडिका । डा. सुरेश । भाषा ६-००
१५३६ होमियो गीतावली । डा० कैलाशभूषण त्रिपाठी । भाषा २-००
१५३७ होमियो गृह चिकित्सा । डा० सुरेश । भाषा २-५०
१५३८ होमियो गृहचिकित्सा । डॉ० टंडन । भाषा २-००
१५३९ होमियो चिकित्सा तत्त्व । श्यामसुन्दर शर्मा ७-००
१५४० होमियो चिकित्सा विज्ञान । डा० श्यामसुन्दर । भाषा ३-५०
१५४१ होमियो टायफायड-चिकित्सा । डा० सुरेश । भाषा ०-७५
१५४२ होमियो थाईसिस चिकित्सा । डा० सुरेश „ ०-७५
१५४३ होमियो न्यूमोनिया चिकित्सा । सुरेश „ ०-७५
१५४४ होमियो निमोनिया चिकित्सा । डा० टण्डन „ ०-५०
१५४५ होमियो पारिवारिक चिकित्सा । डा० सुरेश । भाषा ६-००
१५४६ होमियो पारिवारिक भेषज तत्त्व । भट्टाचार्य „ ६-००
१५४७ होमियो पाकेट गाइड । डा० सुरेश । भाषा १-००
१५४८ होमियोपैथिक चिकित्सा (मेटेरिया मेडिका सहित) । भाषा ६-००
१५४९ होमियोपैथिक चिकित्सातत्त्व । भाषा ०-७५
१५५० होमियोपैथिक चिकित्सा विज्ञान । डा० बालकृष्ण मिश्र । भाषा १०-००

१५५१ होमियोपैथिक चिकित्सा सिद्धान्त । डा० वालकृष्ण मिश्र „ ३-५०
१५५२ होमियोपैथिक जननेन्द्रिय के रोग । भट्टाचार्य । भाषा १-२५
१५५३ होमियोपैथिक थेराप्युटिक्स (लीडर्स इन) । डा० भट्टाचार्य ६-५०
१५५४ होमियोपैथिक-नुस्खा । डा० श्यामसुन्दर । भाषा १-२५
१५५५ होमियोपैथिक पशुचिकित्सा । गंगाधर । भाषा २-१३
१५५६ होमियोपैथिक पारिवारिक चिकित्सा । १-२ भाग (एक जिल्द में) भट्टाचार्य । भाषा १०-००
१५५७ होमियोपैथिक फार्माकोपिया । बी. एन. टंडन । भाषा २-२५
१५५८ होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका । भाषा ३-७५
१५५९ होमियोपैथिक लगाने की औषधियाँ और प्रथमोपचार । भट्टाचार्य । भाषा १-५०
१५६० होमियोपैथिकसारसंग्रह । भट्टाचार्य । भाषा २-००
१५६१ होमियोपैथिक हैजा चिकित्सा । भट्टाचार्य । भाषा २-००
१५६२ होमियापैथी इञ्जेक्शन गाइड । भाषा ५-००
१५६३ होमियो फार्माकोपिया । डा० टण्डन । भाषा २-००
१५६४ हो० भैषज्य रहस्य अर्थात् मेटिरिया मेडिका । डा० टंडन । भाषा ३-७५
१५६५ होमियो मूत्र परीक्षा । भट्टाचार्य । भाषा १-५०
१५६६ होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका । डा० सुरेशप्रसाद । भाषा ३-७५
१५६७ होमियो मेटेरिया मेडिका । प्रबोधचन्द्र मिश्र । भाषा ५-००
१५६८ होमियो शिशु चिकित्सा । ०-७५
१५६९ होमियो संक्षिप्त पारिवारिक चिकित्सा । भट्टाचार्य । भाषा ३-००
१५७० होमियो स्त्रीरोग चिकित्सा । भट्टाचार्य । भाषा ४-००
१५७१ होमियो स्त्री-रोग चिकित्सा । टण्डन „ २-५०

PRINCIPLES OF GENERAL SURGERY

By

K. N. Udupa, M. S., F. R. C. S., F. A. C. S.
Professor of Surgery, B. H. U. and Chief Surgeon,
Sir Sunder Lal Hospital, B. H. U.

Price. Rs. 20–00

ENGLISH

[No guaranntee regarding prices of books as these are fluctuated every now and then by publishers, hence the current price fixed by the publishers will be charged at the time of supply.]

1 Aids to Osteology by Nils L. Eckhoff. Rs. 5-87
2 Ailments of Infancy (Homeopath) by Vats 3-50
3 All India Pharmaceutical Directory. Second Edition. 1960. Compiled by The Indian Pharmaceutical Association. 38-50
4 American Unique Repertory with 25,000 Key notes by Dr. Yadubir Sinha. 5-00
5 American Pocket Practice of Medicine with hints on Materia Medica by Dr. Yadubir Sinha. 2-50
6 American Pocket Materia Medica by Dr. Yadubir Sinha. 1-50
7 Anatomy by Gray. 81-25
8 Anti T. B. (Tuberculosis) and Anti H. F. (Heart-Failure) by N. V. Gunji. 3-00
9 Atharvaveda and Ayurveda Pt. U. W. Karambelkar 16-00
10 Ayurveda Treatment of Kerala by N. S. Mooss 3-00
11 Ayurvedic Treatment of Cancer by Prabhakar Chatterjee. 10-00
12 Ayurvedic Flora Medica. Part I by N. S. Mooss 12-00
13 Ayurvedic Interpretations of Medicine by Dharmadaṭṭa 4-50
14 Baby Care: by May E. Law. 4-50
15 Bassini's Operation Modified by V. P. Gupta. 6-25
16 Bed-Side Medicine by A. R. Majumdar. 10th Ed. 26-00
17 Behaviour Problems of Children by J. C. Marfatia. 6-25
18 Better Sight without Glasses (Pocket Book) by Dr. Agarwal. 1-50
19 Central Fixation by Dr. Agarwal. 2-50
20 Children's Ailments: Cause Prevention and Cure by Harry Clements. 3-00
21 Clinical Methods by Hutchinson & Hunter. 21s.
22 Clinical Methods in Surgery. by K. Das. 32-50
23 Common Diseases their Causes and Treatment by N. S. Irani. 4-50
24 Comparative Survey of Ayurveda Nosology by B. G. Ghanekar 1-00

25 Cure of Stammering Stuttering and other Functional Speect Disorders by J. Louis Orton. 2-25

26 Dental Surgery for Medical Practioners by Modi. O. P.

27 Diagnostic Surgery by Dr. P. D. Sanyal, Illustrated. 22-50

28 Dictionary of Anatomy by S. C. Sengupta. 8-00

29 Dictionary of Indian and Foreign Medico. Ed. by Swami Ekanand. 6-00

30 Diseases of the Eye by Parson & Stewart. 50s

31 Diseases of the Nose, Throat and Ear by Turner & Logan 42s

32 Diseases of Women by Ten Teachers. 9th Edition. 22-50

33 Economic Fruit Growing in India by R. A. Munshi. 3-00

34 Ectopic Pregnancy by Masani. 12-00

35 Everybodys Guide to Ayurvedic Medicine by J. F. Dastur. 10-00

36 Elements of Jurisprudence by Thomas Erskine. Holland. Thirteenth Edition. 12-50

37 Educating the Mentally Handicapped by Jai H. Vakeel. 6-75

38 Eye Troubles by Dr. Agarwal. 6-00

39 Family Planning–Birth Control. by Dr. K. Satya Vati & Dr. T. C. Dewan 5-00

40 Flowering Trees and Shrubs in India by D. V. Cowen. 22-50

41 Food and Drinks in Ancient India (From Earliest Times to C. 1200 A. D.) by Om Prakash with a forword by Dr. B. Ch. Chhabra. 30-00

42 Fundamental Principles of Ayurveda in 3 Parts by Dr. Dwarakanath. 15-00

43 Gardening in India by Amarnath Bindal. O. P.

44 General Human Embryology by L. V. Guru. 3-00

45 Guide on Profitable Recipes by Chouhan 2-50

46 Guide to Nature Cure by Harry Benjamin. 12-00

47 Hand Book of Ayurvedic Materia Medica with principles of Pharmacology and Therapeutics. Vol. I. by H. V. Savnur. 8-00

48 Hand-Book on Diabetes Mellitus and its Modern Treatments by J. B. Bose 10-50

49 Hand Book of Physiology by Vazifdar 20-00

50 Hand Book of Practical Bacteriology : A Guide to Bacteriological Laboratory Work by T. J. Mackie and J. E. Micartney. Ninth Edition 22-50

51 Heart: The Prevention and Cure of Cardial condition by James C. Thomson. 3-00
52 Health in the Tropics by M. S. Irani. 4-50
53 High and Low Blood Pressure by James C. Thomson. 3-75
54 Hindu Medicine by G. N. Sen. 1-25
55 Hindu Medicine by Zimmer. 20-00
56 History of Ayurveda: Presidential Address, 31st All India A. Congress. 1-00
57 History of Indian Medicine Vol. II-III by G. N. Mukerjee 15-00
58 History of Medicine by H. E. Sigerist. Vol. I 62-50
59 Home Doctor for India by M. A. Kamath 7-50
60 Hopes of Cure for the Diabeties by Dr. G. N. Gokhale 2-.0
61 How to Examine A Patient by De. Souza. 12-50
62 Human Embryology for Medical Students by Dr. S. R. Nair. 2nd Ed. 15-00
63 Hygiene and Public Health by Khote. 7-00
64 Illustrated Medical Dictionary by Dorland $ 12. 50
65 Illustrated Pocket Medical Dictionary by Blakistans. $ 3. 75
66 Illustrations Regional Anatomy by E. B. Jamicson. in 7 Section. 68-50
67 Index of Differential Diagnosis Main Symptoms by French. 126s
68 Indian Medicine by J. Jolly. Translated with notes by C. G. Kashikar 15-00
69 Indian Materia Medica by K. M. Nadkarni in 2 Vols. 60-00
70 Indian Pharmaceutical Codex Vol. I, Indigenous Drugs by B. Mukerji 12-00
71 Interpretation of Ancient Hindu Medicine by Chandra Chakravarty. 10-00
72 Introdnction to Kaya Chikitsa by C. Dwarkanath 20-0:
73 Introduction to Plant Geography and some Related Sciences by Nicholas Polunin. 48-60
74 Kaya-Kalpa (Science of Regiwenation) by S. Yogi. 5-00
75 Kayakalpa Text in Sanskrit & Eng. Translation. 0-50
76 Manual of Anatomy by S. N. Sahana. 15-00
77 Manual of Practical Anatomy. 3 Vols. by Cunningham. 75s.
78 Mastering your Nerves by A T. W. Simcons. 4-00
79 Materia Medica of the Hindus by U. C. Dutt. O. P.

No.	Title	Price
80	Medical Anthology. Ed. by Dr. Pranjivan M. Mehta.	2-00
81	Medical Dictionary. (Anglo Hindi) by M. Bhattacharya	10-00
82	Medical Jurisprudence and Toxicology by J. Modi.	O. P.
83	Medical Jurisprudence & Toxicology by Turner.	O. P.
84	Medical Jurisprudence and Toxicology by John Glaister, with 234 illustrations 88 in full colour. Ninth Edition	32-00
85	Medicinal Plants of India and Pakistan by J. F. Dastur	5-87
86	Medical Treatment with recent Advances by D. R. Dhar.	25-00
87	Medicince by Garland and Phillips. Vols. I-II	97-50
88	Medicine-Essentials for Practitioners and Students by Beaumont.	45s.
89	Medicine for Students by A. F. Golwalla.	18-75
90	Mental Health and Hindu Psychology by Swami Akhilananda.	12-80
91	Micoo Elements Nutrition of Plants by Dr. Lal & Rao.	20-00
92	Mind and Vision by Dr. Agarwal.	7-00
93	Minor Surgery by Cecil Flemming.	14s.
94	Miracles of Fruits by Kj. Dr. G. S. Varma	5-00
95	Miacles of Indian Herbs by Kj. Dr. G. S. Varma.	5-00
96	Modern Operative Surgery. Edited by G. Grey Turner and Lambert Charles Rogers. 2 Vols. Fourth Edition	60-00
97	Modern Pharmacology and Therapeutic Guide by A. R. Majumdar with Supplement (1960)	17-50
98	Mother and Child Welfare by A. Lakshmipati & V. Subba Rao.	10-00
99	Nursing and Management of Skin Diseases by D. S. Wilkinson.	26-00
100	Operative Surgery by Various Authors. Edited by Alexander Miles and Sir James Learmonth. with illustrations.	25-00
101	Pathological Histology by Robertson F. Ogilvie, Foreword by A. Murray Drennan with 334 Photomicrographs in Colour. Fifth Edtion.	39-37
102	Pathology For the Surgeon by William Boyd with illustrations. Seventh Edition	62-50
103	Pharmaceutical Directory of India 1959. Compiled and produced by S. A. Sarkar.	21-00

104 Pharmacognasy of Ayurvedic Drugs. Illustrated.
Series No. : 1. 5-00 Series No. : 3. 12-50
Series No. : 2. 9-50 Series No. : 4. 12-50
105 Pharmacology, Materia Medica and Therapeutics by R. Ghosh 20-00
106 Pharmacology (for Medical Students in Tropical Areas) by Roger A. Lewis. 15-00
107 Pharmacopoeia of India 20-00
108 Philosophy of Ayurveda by Dr. K. Ray. 2-50
109 Physiology by Halliburton. 45s.
110 Planned Diet for India by Dr. J. C. Patnayak. 3-75
111 Plant Diseases: Their Causes and Control by Sudhir Chowdhury. 3-50
112 Pocket Companion by B. N. Ghosh 5-50
113 Poisonous Plants of India by R. N. Chopra. 30-00
114 Polio Myelitis & Ayurveda by Kj. Om Prakash. 7-50
115 Practice of Nature Cure by Henry Lindlahr. 10-00
116 Practical Handbook of Midwifery and Gynaecology (For Students and Practitioners) by W. F. T, Haultain & Clifford Kennedy. Fifth edition. 24-00
117 Prevention & Cure of Myopia by Dr. Agarwal. 5-00
118 Princeples of General Surgery by K. N. Udupa. 20-00
119 Protective Foods in Health & Disease by K. Mukherji. 8-00
120 Questions & Answers in Pathology, Bacteriology & Parasitology. by Shah in 2 Vols. 16-00
121 Science and the Art of Indian Medicine by G. Srinivasa Murti. 3-00
122 Secrets of Indian Medicine by Dr. Agarwal. 4-00
123 Shaw's Text Book of Gynaecology. Revised by John Howkins, with 4 coloured plates and 352 Text-Figures. 26-50
124 Short Practice of Surgery by Hamilton Bailey and Mcneill Love. Eleventh Edition. 67-20
125 Sinha Thousand Red Lines Symptoms. 1-50
126 Students Pharmacalogy and Materia Medica by Dr. V. G. Rele 9-50
127 Study of Plants by F. W. Woodhead. 12-50
128 Sudhakar Pharmacopoea. Compiled by Dr. S. P. Gupta. 3-00

129 Surgical Epitome. 2 Vols. by Nandkarni. 24-00

130 Susruta Samhita. Eng. Tr. Fas. I-III. by U. C. Dutt & A. Chattopadhyaya 3-00

131 Susruta Samhita. Eng. Tr. Fas. I. by A. F. R. Hœrle 1-00

132 S'yanik Sastra. Text & Eng. Tr. by Raja Rudra Deva. 1-00

133 System of Ayurveda by Shiva Sharma. 14-00

134 System of Clinical Medicine by Savill 45s.

135 Taber's Cyclopedic Medical Dictionary by Clarence Wilbur Taber, Eighth edition. Illustrated. 32-50

136 Text Book of Bacteriology by N. G. Pandalai. 18-00

137 Text Book of Elementary Physiology by Dr. V. N. Bhave Sixth Ed. 3-20

138 Text Book of Gynaecology by K. M. Masani. 28-00

139 Text Book of Pathology. An Introduction to Medicine by William Boyd. Sixth Edition, Throughly Revised with 570 illustrations and 32 coloured plates. 62-50

140 Text Book of Principles and Practice of Medicine by Dhar 22-00

141 Text Book of Practice of Medicine by W. Price 63s.

142 To Lhasa and Beyond : Diary of the Expedition to Tibet in year MCMXL VIII by G. Tucci with an appendix on Tibetan Medicine and Hygiene by R. Moise. 40-00

143 Treatise on Dispensing, Nursing and Hospital emergencies by K. S. Dr. Mohd. Rahmat Elahi Siddiqui with seventy-nine illustrations. 12-00

144 Treatise on Hygiene and Public Health by Ghosh 22-50

145 Tropical Therapeutics by R. N. Chopra 50-00

146 Useful Plants of India and Pakistan by J. F. Dastur. 5-87

147 Yoga-Technique of Health and Happiness by Indra Devi. 3-75

148 Your Diet for Longer Life by James A. Tobey. 4-75

149 Your Diet in Health and Disease by Harry Benjamin. 3-00

शुद्ध आयुर्वेद परीक्षोत्तीर्ण वैद्यों और डाक्टरी चिकित्सा के पूरे ज्ञान के इच्छुकों के लिये रात-दिन चिकित्सा में काम आने वाली

+ एलोपैथिकसार व सिद्धयोगसंग्रह

(सरल हिन्दी भाषा में लिखित परिवर्धित संस्करण)

डॉ० ओंकारदत्त शर्मा एम० एस-सी०, आयुर्वेदाचार्य

यह पुस्तक बेजोड़ तथा अद्वितीय है, अभी तक हिन्दी भाषा में लिखी हुई चिकित्सा के निमित्त ऐसी कोई भी पुस्तक उपलब्ध नहीं है। यह पुस्तक सहस्रों गुणों से सम्पन्न है। इसमें आयुर्वेदिक, यूनानी और एलोपैथिक का तुलनात्मक वर्णन है। प्रत्येक रोग पर सिद्ध अंग्रेजी नुसखे जो आधुनिक डाक्टर प्रयोग में लाते हैं, पेटेण्ट दवाइयाँ जो मेडिकल स्टोरों में सब जगह मिल सकती हैं तथा अंग्रेजी और देशी इञ्जेक्शनों का वर्णन विस्तृत विवरण के साथ किया गया है। साथ-साथ पुराने, प्रसिद्ध नव्वाज हकीमों के आजमाइशी और खानदानी नुसखे, हव्व, कुर्स, माजून-खमीरा, लऊक, जुवारिश, शर्वत आदि भी दिये हैं तथा प्रतिदिन उपयोग में लाये जाने वाले आयुर्वेद के प्रसिद्ध और प्रचलित रस, भस्म, आसव, अरिष्ट, चूर्ण, अवलेह, पाक का विवरण वैज्ञानिक विधि से दिया है। इसके अतिरिक्त इसमें सल्फाश्रेणी की समस्त ओषधियों का पूर्ण विवेचनात्मक दृष्टि से वर्णन किया है एवं बाजार में पेटेण्ट नाम से बिकने वाली समस्त विदेशी कम्पनियों की प्रसिद्ध और प्रचलित (चालू) अंग्रेजी दवाओं की भी २०० से ऊपर दवाओं का वर्णन एक अध्याय में किया है। इसके पश्चात् ५०० से ऊपर सब प्रकार के सीरम, वेक्सीन्स, अंग्रेजी इञ्जेक्शन और आयुर्वेदिक इञ्जेक्शनों के गुण, प्रयोग, लगाने की विधि का पूरा-पूरा वर्णन क्रमशः है।

इसके साथ-साथ टिंचर, एक्का, घोल, मिक्श्चर, पिल्स, टेबलेट, सीरप आदि बनाने और प्रयोग में लाने का वर्णन है। यह पुस्तक प्राचीन प्रणाली द्वारा शिक्षित वैद्यों को यूनानी, आयुर्वेद तथा डाक्टरी के तुलनात्मक चिकित्सा ज्ञान के लिये अति उपयोगी है। परिष्कृत नवीन संस्करण। मूल्य—१०–००

प्राप्तिस्थानम्—चौखम्बा संस्कृत

14
144
144

5
217
147
30
100
100
599
355
244

215
140
355